₹15

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

जनवरी 2013

- ✓ इस्लाम में नैतिकता की अवधारणा
  —हमूदा अब्दलती
- ✓ आडम्बर एवं पाखंड
  —डॉ॰ मुहम्मद अहमद
- ✓ भारत में घरेलू हिंसा—एक ज्वलंत समस्या
  —डॉ॰ नजीब अहमद ख़ान
- ✓ चीन की शिशु नीति के साइड इफेक्ट्स
  —विजय कुमार अग्रवाल
- ✓ यह दुराग्रह क्यों ?
  —मुद्राराक्षस

اجمالی تعارف و تاثرات

درس گاہ اسلامی اٹکی

رانچی (جھارکھنڈ) 835301



دینی و دنیوی علوم کا حسین امتزاج

Address
NAZIM
DARSGAH ISLAMI
Itki, Ranchi (Jharkhand), Pin No. 835301

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 22 अंक 7 जनवरी 2013

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो जबकि किसी निर्धारित समय के लिए तुम आपस में क़र्ज़ का लेन-देन करो तो उसे लिख लिया करो। दोनों पक्षों के बीच इन्साफ़ के साथ एक आदमी दस्तावेज़ लिखे। –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

09818799223, 011-26949430

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 15/- विशेषांक रु० 25/-

वार्षिक रु० 160/-, दो वर्ष 300/-, पांच वर्ष 700/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–60 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–25 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

श्रेष्ठ कर्म करने वाले ही...

■ **डॉ० त्रिलोकी सिंह**

श्रेष्ठ कर्म करने वाले ही,
जग में ऊंचा नाम उठाते ।
निन्दनीय कर्मों से प्राणी,
सबकी नज़रों में गिर जाते ।।

अगर प्रेम का भाव रहेगा,
टूटे दिल भी जुड़ जाएंगे।
जो नफ़रत करने वाले हैं,
वे भी अपने हो जाएंगे ।।

दया, प्रेम, परहित को जिसने,
अपने जीवन में अपनाया।
कुल-कुटुम्ब के हर प्राणी का,
स्नेह सदा ही उसने पाया ।।

बुरा कर्म करने वाला तो,
सबकी नज़रों में गिर जाता ।
वह समाज में निन्दित होता,
नहीं किसी से आदर पाता ।।

मानवता को खोकर जीना,
मर जाने से भी बदतर है ।
मानवता के पथ पर चलकर,
मर जाना भी तो बेहतर है ।।

अगर किसी के काम आ गये,
नर-तन होना हुआ सार्थक ।
अगर धरा का बोझ बने तो,
समझो जीवन हुआ निरर्थक ।।

दुख देने से दुख मिलता है,
सुख देने वाला सुख पाता ।
जो सबको धोखा देता है,
बेशक वह भी धोखा खाता ।।

(शेष पृष्ठ 21 पर)



कहां क्या है ?

श्रेष्ठ कर्म करने वाले ही... (कविता)	–डॉ॰ त्रिलोकी सिंह	3
कुरआन ज्योति		5
हदीस मंजरी		6
तथ्यपरक सामग्री ही प्रकाशित की जाए (संपादकीय)		7
अनमोल है पुस्तक उपहार (आपके पत्र)		9
दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर (रज़ि॰) (नेकी के सिपाही)	–सुशीला	15
हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़	–शराफ़त अली	17
भारत में घरेलू हिंसा–एक ज्वलंत समस्या (ज्वलंत-सामयिक)	–डॉ॰ नजीब अहमद ख़ान	19
ठंड, गर्मी, ग़रीबी और भूख से मरते लोग (व्यथा-कथा)	–प्रो॰ चन्द्र प्रकाश आर्य	23
इस्लाम में नैतिकता की अवधारणा (विशेष आयोजन)	–हमूदा अब्दलती	26-27
लल्लू (कहानी)	–नवनीत मिश्र	31
आडंबर एवं पाखंड	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	37
चीन की एक शिशु नीति के साइड इफेक्ट्स (विचारणीय)	–विजय कुमार अग्रवाल	39
हिन्दी कविता : कई अनुत्तरित प्रश्न (साहित्यिकी)	–वज्रघोष	41
देश-दशा (कविता)	–भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'	42
बालश्रम का एक रूप यह भी (सरोकार)	–गुलज़ार सहराई	43
प्रेम पुष्प (कविता)	–पी॰सी॰ गुप्ता	44
देशहित पर हावी जातिवाद (दृष्टिकोण)	–विद्या प्रकाश	45
सफ़र में ख़ास ख़याल रखें मधुमेह के रोगी (स्वास्थ्य चर्चा)	–डॉ॰ अनुराग श्रीवास्तव	46
यह दुराग्रह क्यों ? (उद्‌गार)	–मुद्राराक्षस	47
दुमुंहे (कविता)	–ओम प्रकाश बजाज	49
मोहरा (कविता)	–वीथिका अरविन्द	49
शब्दों का रोचक संसार (बालवीथी)	–विद्या प्रकाश	50



(6) और अगर मुशरिकों में से कोई आदमी पनाह मांगकर तुम्हारे पास आना चाहे (ताकि अल्लाह की वाणी सुने) तो उसे पनाह दे दो यहां तक कि वह अल्लाह की वाणी सुन ले। फिर उसे उसके सुरक्षित स्थान तक पहुंचा दो। ऐसा इसलिए करना चाहिए कि ये लोग ज्ञान नहीं रखते।[8]

(7) इन मुशरिकों के लिए अल्लाह और उसके रसूल के निकट कोई समझौता आख़िर कैसे हो सकता है?–अलावा उन लोगों के जिनसे तुमने मस्जिदे हराम के पास समझौता किया था[9], तो जब तक वे तुम्हारे साथ सीधे रहें, तुम भी उनके साथ सीधे रहो, क्योंकि अल्लाह डर रखने वालों को पसन्द करता है–(8) परन्तु इनके सिवा दूसरे मुशरिकों के साथ कोई समझौता कैसे हो सकता है जबकि उनका हाल यह है कि तुम पर क़ाबू पा जाएं तो न तुम्हारे मामले में किसी रिश्तेदारी का ध्यान करें, न किसी समझौते की ज़िम्मेदारी का ? वे अपनी ज़ुबानों से तुमको राज़ी करने की कोशिश करते हैं, पर दिल उनके इन्कार करते हैं[10] और उनमें से अधिकतर नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) हैं।[11] (9) उन्होंने अल्लाह की आयतों के बदले थोड़ी-सी क़ीमत स्वीकार कर ली[12] फिर अल्लाह के रास्ते में रुकावट बनकर खड़े हो गये।[13] बहुत बुरे करतूत थे जो ये करते रहे। (10) किसी ईमान वाले के मामले में न ये नातेदारी की परवाह करते हैं और न किसी समझौते के दायित्व की, और ज़्यादती सदैव उन्हीं की ओर से हुई है। (11) तो अगर ये तौबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें तो तुम्हारे दीनी-भाई हैं, और जानने वालों के लिए हम अपने आदेश स्पष्ट किये देते हैं।[14]

–क़ुरआन, 9 : 6-11

---

8. अर्थात लड़ाई के समय में अगर कोई शत्रु तुमसे निवेदन करे कि मैं इस्लाम को समझना चाहता हूं तो मुसलमानों को चाहिए कि उसे शरण देकर अपने यहां आने का अवसर दें और उसे समझाएं, फिर अगर वह स्वीकार न करे तो उसे अपनी रक्षा में उसके ठिकाने तक वापस पहुंचा दें।

9. अर्थात बनी किनाना और बनी ख़ुज़ाआ और बनी ज़मरा।

10. अर्थात प्रत्यक्ष में तो वे समझौते की शर्तें तय करते हैं, मगर दिल में उल्लंघन का इरादा होता है और इसका प्रमाण अनुभव से इस तरह मिलता है कि जब कभी उन्होंने समझौता किया, तोड़ने के लिए ही किया।

11. अर्थात ऐसे लोग हैं जिन्हें न नैतिक दायित्वों का आभास है और न चरित्र के बंधनों के तोड़ने में कोई झिझक।

12. अर्थात एक ओर अल्लाह की आयतें उनको भलाई और सच्चाई और सत्य पर आधारित क़ानून की पाबंदी का बुलावा दे रही थीं। दूसरी ओर सांसारिक जीवन के वे कुछ दिनों के लाभ थे जो मन की इच्छा के बेलगाम पालन से प्राप्त होते थे। इन लोगों ने इन दोनों चीज़ों की तुलना की और फिर पहली को छोड़कर दूसरी चीज़ को अपने लिए चुन लिया।

13. अर्थात इन ज़ालिमों ने इतने ही पर बस न किया कि हिदायत के बजाय गुमराही को स्वयं अपने लिए पसन्द कर लिया, बल्कि इससे आगे बढ़कर उन्होंने कोशिश यह की कि सत्य सन्देश का काम किसी तरह चलने न पाये, भलाई और सुधार की इस पुकार को कोई सुनने न पाये, बल्कि वे मुंह ही बन्द कर दिये जाएं जिनसे यह पुकार बुलंद होती है। जिस शुभ एवं उत्तम जीवन-व्यवस्था को अल्लाह धरती में स्थापित करना चाहता था, उसकी स्थापना को रोकने में उन्होंने एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा दिया और उन लोगों का जीना दूभर कर दिया जो इस व्यवस्था को सत्य समझकर उसके अनुपालक बने हुए थे।

14. 'जानने वालों' से तात्पर्य वे लोग हैं जो अल्लाह की अवज्ञा का अंजाम जानते हैं और उसका कुछ डर अपने दिल में रखते हैं। और यह जो फ़रमाया गया कि अगर ऐसा करें तो वे 'तुम्हारे दीनी-भाई' हैं तो इसका अर्थ यह है कि इन शर्तों को पूरा करने का परिणाम केवल यही न होगा कि तुम्हारे लिए उन पर हाथ उठाना और उनके जान व माल को नुक़सान पहुंचाना हराम हो जाएगा, बल्कि आगे बढ़कर उसका लाभ यह भी होगा कि इस्लामी समाज में उनको बराबर के अधिकार प्राप्त हो जाएंगे। सामाजिक, सांस्कृतिक और क़ानूनी हैसियत से वे तमाम दूसरे मुसलमानों की तरह होंगे। कोई अन्तर और भेद उनके विकास के रास्ते में बाधा न बनेगा।

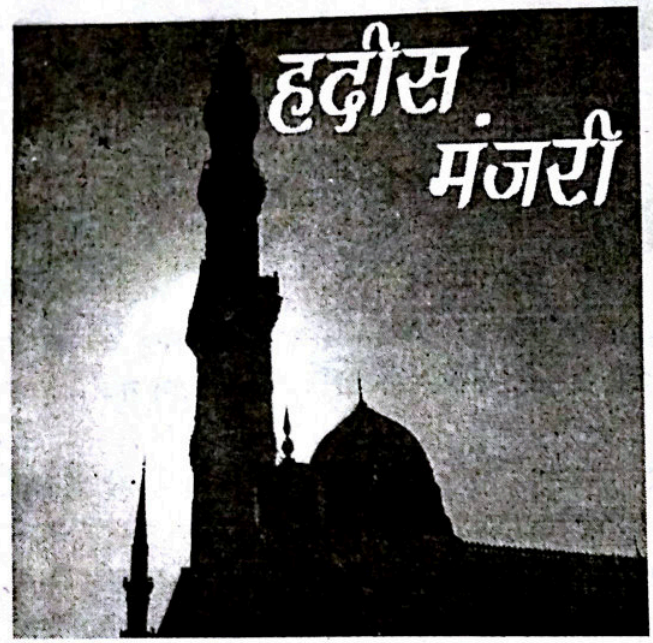

सोने, चांदी के बर्तनों के अतिरिक्त सभी पाक बर्तनों से पानी पी सकते हैं

● हज़रत अनस (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि नमाज़ का समय हो गया तो लोग जिनके घर निकट थे, वे अपने घर की तरफ़ (वुज़ू करने) चले गये और कुछ लोग रह गये । तो अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के पास पत्थर का बना हुआ एक बर्तन (जिसमें थोड़ा पानी था) लाया गया । वह बर्तन इतना छोटा था कि आप उसमें अपनी हथेली नहीं फैला सकते थे । (आपकी बरकत से) सब लोगों ने वुज़ू कर लिया । लोगों ने (हज़रत अनस रज़ि॰ से) कहा : तुम कितने थे ? उन्होंने कहा : अस्सी या उससे कुछ अधिक ।

–बुख़ारी, मुस्लिम । यह रिवायत बुख़ारी की है ।

बुख़ारी और मुस्लिम की एक और रिवायत में है : नबी (सल्ल॰) ने पानी का एक बर्तन मंगाया तो आपकी सेवा में एक कम गहरा बड़ा प्याला पेश किया गया । उसमें थोड़ा पानी था । आपने अपनी उंगलियां उसमें डाल दीं । हज़रत अनस (रज़ि॰) कहते हैं : मैं देखने लगा कि पानी आपकी उंगलियों के बीच से फूट रहा है । फिर मैंने अंदाज़ा किया कि उससे वुज़ू करने वाले सत्तर और अस्सी के मध्य रहे होंगे ।

● हज़रत हुज़ैफ़ह (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि नबी (सल्ल॰) ने रेशम और 'दीबा' (एक क़ीमती कपड़ा) के इस्तेमाल से और सोने-चांदी के बर्तन में (पानी) पीने से हमको वर्जित किया और कहा : "ये चीज़ें उनके लिए (काफ़िरों के लिए) दुनिया में हैं और ये तुम्हारे लिए आख़िरत में हैं ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

सफ़ेद कपड़ा पहनना

● हज़रत बराअ (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) दरमियाना क़द के थे । मैंने आपको सुर्ख़ लबादे में देखा । मैंने आपसे बढ़कर कोई ख़ूबसूरत चीज़ नहीं देखी ।

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत हुज़ैफ़ह वहब बिन अब्दुल्लाह (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि मैंने नबी (सल्ल॰) को मक्का में देखा । उस समय आप अबतह में लाल चमड़े के बने हुए एक शिविर में थे । हज़रत बिलाल (रज़ि॰) आपके वुज़ू का पानी लेकर आये । कुछ लोगों के हिस्से में कुछ पानी आया तो उन्होंने अपने ऊपर छिड़का और जिसको न मिला वह दूसरों के हाथों की तरी से तसल्ली प्राप्त कर रहा था । नबी (सल्ल॰) बाहर आये । आपके ऊपर एक सुर्ख़ लबादा था, मानो मैं आपके पिंडलियों की सफ़ेदी को देख रहा हूं । आपने वुज़ू किया और हज़रत बिलाल (रज़ि॰) ने अज़ान दी । मैं उनके चेहरे को इधर-उधर दायें और बायें मुंह करके देखता रहा, जब उन्होंने 'हय्या अलस्सलाह' (नमाज़ के लिए आओ) और 'हय्या अललफ़लाह' (भलाई और सफलता के लिए आओ) कहा । फिर आपके सामने एक भाला गाड़ दिया गया । आप आगे बढ़े और नमाज़ पढ़ी । आपके सामने से कुत्ते और गधे गुज़र रहे थे लेकिन उनको रोका नहीं जाता था । (बुख़ारी, मुस्लिम)

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय
हिन्दी वेबसाइटें
www.quranhindi.com
www.islamdharma.org
www.islamicwebdunia.com
www.islamic-videos.com

तथ्यपरक सामग्री ही प्रकाशित की जाए

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 1965 में प्रकाशित 'धर्मशास्त्र का इतिहास' शीर्षक बृहत पुस्तक के अनुवादित द्वितीय संस्करण के तृतीय भाग में पृष्ठ 1299 पर तीर्थ यात्रा नामक 11वें अध्याय में वर्णित हज संबंधी तथ्यों की ओर संस्थान का तत्काल ध्यान अपेक्षित है । इस अध्याय के प्रारंभ में दूसरी से लेकर चौथी पंक्ति में कहा गया है कि 'मुसलमानों के पांच व्यावहारिक धार्मिक कर्तव्यों में एक है जीवन में कम से कम एक बार हज करना, यानी मक्का एवं मदीना जाना जो क्रम से मुहम्मद साहब के जन्म एवं मृत्यु के स्थल हैं ।' लेखक डॉ॰ पाण्डुरंग वामन काणे ने इसे 'सैक्रेड बुक ऑफ़ दि ईस्ट' (जिल्द-6, भूमिका) से उद्धृत किया है । इस उद्धरण के बारे में यह स्पष्ट करना है कि हज के लिए मदीना जाना ज़रूरी नहीं है और न ही हज का संबंध हज़रत मुहम्मद साहब (सल्ल॰) के जन्म और मृत्यु से है । इस संदर्भ में कुछ और प्रामाणिक तथ्यों को प्रस्तुत करना समीचीन होगा । हज इस्लाम का आधार स्तंभ है । प्रत्येक ऐसे मुसलमान के लिए जीवन में एक बार हज करना आवश्यक है जो मक्का तक जाने का सामर्थ्य रखता हो ।

ईश्वर मनुष्यों का पथ-प्रदर्शन करने के लिए अपने सन्देष्टाओं को भेजता रहा । सन्देष्टाओं या पैग़म्बरों को भेजने का क्रम हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पर समाप्त कर दिया गया । आपके बाद कोई पैग़म्बर न भेजा गया, न इस संसार में कोई और भेजा जाएगा । सभी सन्देष्टता एक ही दीन (धर्म) इस्लाम को लेकर आये थे । हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) भी एक पैग़म्बर थे, जो अब से हज़ारों वर्ष पहले भेजे गये थे । हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) ने ईश्वर के आदेश पर मक्का में अल्लाह की इबादत के लिए एक छोटा-सा घर बनाया था, जिसे आज 'काबा' के नाम से संसार के लोग जानते हैं । ईश्वर ने 'काबा' को अपना घर कहा और कहा कि जिसको हमारी इबादत करनी हो वह इसी घर की ओर मुंह करके इबादत करे और कहा कि हर मुसलमान चाहे वह संसार के किसी भी भाग में रहता हो, यदि सामर्थ्य रखता है तो, जीवन में कम से कम एक बार इस घर के दर्शन के लिए आये । काबा की विशेषता क्या है ? यह जान लेना भी आवश्यक है । इस्लाम सारी मानवजाति का ईश्वर प्रदत्त सनातन तथा सार्वभौम धर्म है । संसार में जितने ईशदूत हुए इस्लाम के सन्देशवाहक और पैग़म्बर थे उन्हीं में हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) एक महान ईशदूत थे, हज़रत मूसा (अलैहि॰) और हज़रत ईसा (अलैहि॰) उन्हीं के सन्तान थे, हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) के पुत्र हज़रत इस्माईल (अलैहि॰) की सन्तान मक्का की क़ुरैश जाति थी जिनमें अंतिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पैदा हुए । मक्का के पवित्र उपासनागृह काबा को अब से साढ़े चार हज़ार वर्ष पूर्व हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) ही ने अपने पुत्र हज़रत इस्माईल (अलैहि॰) के सहयोग से निर्मित किया था और यह हज की प्रथा उन्हीं की चलाई हुई है । उन्होंने जिस समय काबा का निर्माण किया वह सर्वथा निर्जन स्थान था—उसकी सेवा के लिए उसकी निर्जन स्थान में उन्होंने अपने पुत्र हज़रत इस्माईल (अलैहि॰) और उनकी माता हज़रत हाजरा को बसाया । संसार भर की मस्जिदें काबा के अधीन मानी जाती हैं तथा इसी की दिशा में बनायी जाती हैं ताकि संसार भर के मुसलमान इस्लाम के केन्द्र की ओर मुंह करके नमाज़ पढ़ें और इस प्रकार अपने केन्द्र से संबंधित और धर्म भावना के

एक सूत्र में बंधे रहें तथा यह भावना उनमें जाग्रत रहे कि वे विभिन्न क्षेत्रों और देशों में बसते हुए भी एक सार्वभौम इस्लामी बिरादरी के सदस्य हैं । इस सार्वभौम इस्लामी बिरादरी को स्थापित रखने के लिए साल में एक बार हज का विधान बनाया गया है ताकि इस अवसर पर संसार के कोने-कोने में बसने वाले मुसलमान इस्लाम के केन्द्र में एकत्र हों, एशिया के रहने वाले भी, अफ़्रीक़ा के रहने वाले भी तथा यूरोप और अमेरिका के रहने वाले भी, गोरे भी, काले भी, लाल भी–सब एक-दूसरे से मिलें, सब एक-दूसरे से परिचित हों, सब सामूहिक रूप से हज करें और इस्लाम के इस संगम में सब एक हो जाएं । जिस पवित्र घर का मुसलमान हज करते हैं, वह ईश्वर की दृष्टि में बहुत महत्वपूर्ण है । वहां हाज़िरी देने वाला ईश्वर के नज़दीक प्रिय बन्दा है । इस स्थान का आकर्षण देखिये कि दिन और रात के चौबीसों घंटे यह कभी ग़ैर-आबाद नहीं रहता । प्रत्येक समय और प्रत्येक मौसम में इसके गिर्द तवाफ़ (परिक्रमा) होता रहता है । ईदों के साथ ही रमज़ान शरीफ़ के अंतिम दस दिनों में यहां इतना मजमा रहता है कि बिल्कुल हज का-सा समां होता है ।

क़ुरआन मजीद में ईश्वर कहता है–'यक़ीनन पहला घर जो लोगों के लिए निश्चित किया गया, वही था जो मक्का में बना, बरकत वाला घर और सारी दुनिया वालों के लिए पथ-प्रदर्शन का केन्द्र । इसमें अल्लाह की खुली हुई निशानियां हैं, इबराहीम की जगह है और जो इसमें दाख़िल हो जाता है सुरक्षित हो जाता है ।' (आले इमरान आयत : 96,97) और यह कि हमने इस घर (काबा) को लोगों के लिए केन्द्र और निश्चिंतता का स्थान ठहराया था और लोगों को आदेश कि इबराहीम जहां उपासना के लिए खड़ा होता है उस स्थान को स्थायी रूप से उपासना-स्थल बना लो और इबराहीम व इस्माईल को हिदायत दी कि मेरे घर की परिक्रमा करने वालों और ठहरने वालों और झुकने वालों और सजदा करने वालों के लिए शुद्ध रखो । और यह कि इबराहीम ने प्रार्थना की : हे मेरे प्रभु, इस नगर को निरापद नगर बना दे, और इसके निवासियों में से जो अल्लाह और अंतिम दिन को मानें, उन्हें हर प्रकार के फलों की आजीविका दे । प्रत्युत्तर में उसके प्रभु ने कहा : और जो न मानेगा, अल्प सांसारिक जीवन की सामग्री तो मैं उसे भी दूंगा, किन्तु अंत में उसे नरक-यातना की ओर घसीटूंगा, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है । और याद करो, इबराहीम और इस्माईल जब इस घर की दीवारें उठा रहे थे, तो प्रार्थना करते जाते थे : 'हे हमारे प्रभ हम से यह सेवा स्वीकार कर ले, तू सबकी सुनने और सब कुछ जानने वाला है । हे प्रभु, हम दोनों को अपना मुस्लिम (आज्ञाकारी) बना; हमारी सन्तति से एक ऐसी जाति खड़ी कर, जो तेरी मुस्लिम हो, हमें अपनी उपासना की विधियां बता और हमारी कोताहियों को क्षमा कर, तू बड़ा क्षमाशील और दयावान है । और हे प्रभु, इन लोगों में स्वयं इन्हीं की जाति से एक सन्देष्टता उठाना, जो इन्हें तेरी आयतें सुनाए, इनको किताब और समझ की शिक्षा दे और इनके जीवन संवारे । तू बड़ा प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है । (अल-बक़रा आयत : 125-129) इन आयतों से यह स्पष्ट है कि हज के लिए मदीना जाने की आवश्यकता नहीं है और न ही हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के जन्म और मृत्यु का कोई संबंध हज से है । यह बात और है कि कुछ लोग हज के लिए मक्का जाने के बाद मदीना और इसके अलावा और भी कुछ स्थानों पर जाते हैं, लेकिन यह ज़रूरी नहीं है कि पहले मक्का ही जाएं । मदीना जाने के बाद भी मक्का जाया जा सकता है, परन्तु हज के अनुष्ठान में सिर्फ़ मक्का जाना ही शामिल है । अत: उ०प्र० हिन्दी संस्थान को चाहिए कि यथातथ्य एवं प्रमाणिक तथ्यों के समावेश के साथ उक्त पुस्तक के नवीन संस्करण प्रकाशित करे एवं पुराने संस्करणों की बिक्री रोक दे ।

अनमोल है पुस्तक-उपहार

पुस्तकें उच्च व निम्न स्तर की होती हैं । निम्न स्तर की पुस्तकें चरित्र, नैतिकता और सभ्यता का ह्रास करती हैं । उच्च स्तर की पुस्तकों के अध्ययन से व्यक्तित्व का निर्माण होता है, चरित्र उज्ज्वल होता है और ज्ञान बढ़ता है ।

पुस्तकें अपने पाठक को असत्य से सत्य, अनीति से नीति, बुराई से अच्छाई और अंधकार से प्रकाश की ओर लाती हैं । पुस्तकें बहुमूल्य ज्ञान का सागर हैं । ये सामाजिक एवं धार्मिक कुप्रथाओं को दूर करने में सक्रिय सहयोग देती हैं । सती प्रथा, बाल विवाह आदि सामाजिक बुराइयों को दूर करने में पुस्तकों का विशेष योगदान है ।

पुस्तकें जनसंचार की प्रभावशाली माध्यम हैं । विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त साधन हैं । इससे बढ़कर अनमोल उपहार कोई नहीं ।

मासिक पत्रिका 'कान्ति' का नवम्बर 2012 का अंक प्राप्त हुआ । आपकी पत्रिका का अध्ययन कर मैं दिन-प्रतिदिन अधिक प्रभावित होता जा रहा हूं । क्योंकि इसी नवम्बर 2012 के अंक में शीर्षक ''शैक्षिक स्तर में सुधार की आवश्यकता'' लेखक विद्या प्रकाश का मैंने सरसरी अध्ययन किया ।

मैं लेखक के विचारों का पूर्णतया समर्थक हूं । कारण पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति वर्तमान शिक्षा पद्धति पर इतनी हावी हो गयी है, पाठ्यक्रम का इतना बोझ लाद दिया गया है जिससे वर्तमान युवापीढ़ी का ध्यान आध्यात्मिकता की ओर जाता ही नहीं है । सच्चे धर्म का उन्हें आभास ही नहीं है ।

विश्व में भारत की पहचान और प्रतिष्ठा सबसे अधिक ज्ञान के क्षेत्र में उसके विकास और उसकी उपलब्धियों के कारण है । प्रत्येक क्षेत्र में शिक्षा के महत्व पर बहुत बल दिया गया है । भारतीय परंपरा में अज्ञान को अंधकार और ज्ञान को प्रकाश कहा जाता है । ज्ञान ज्ञानियों की संगति करने से प्राप्त होता जाता है ।

ज्ञान मनुष्य की आत्मा है । विद्या वही है जो मस्तिष्क और व्यवहार में है । वह नहीं है, जो पुस्तकों में है । ज्ञानियों को महान ज्ञान का प्रचार-**प्रसार सर्वत्र** करने के लिए प्रयत्न करें ।

वास्तविक विद्या सामाजिक सद्भाव एकता और विश्वबंधुत्व की स्थापना पर बल देती है । सच्ची शिक्षा का ज्ञान अन्य लोगों के ज्ञान में आत्मसात हो जाए और इस प्रकार भाषा संस्कृति और देश का परस्परं भेद समाप्त हो जाए । सभी एक मंच पर आ जाएं । यही विश्वबंधुत्व का सबसे अच्छा संदेश है ।

सही रास्ता क्या है और उत्तम कर्म क्या है यह जानने के लिए सच्चे गुरु के रास्ते पर चलना चाहिए और मूर्खों के मार्ग का अनुसरण कभी भी नहीं करना चाहिए ।

लेखक ने अपने लेख में सही लिखा है कि एक मानव समूह जो पेट भर खाना पाता है, जीवन के दूसरे क्षेत्रों में अपने आप आगे बढ़ता है जबकि पेट के सवाल से त्रस्त मानव आगे बढ़ ही नहीं पाता ।

फिर अंत में एक बार और लिख रहा हूं कि मैं उपरोक्त लेखक के आदर्श विचारों का पूर्णतया समर्थक हूं ।

रामस्वरूप झैवर

9-10 शास्त्रीनगर, विस्तार भीलवाड़ा (राज॰)

प्रभावशाली

'कान्ति' पत्रिका का नवीनांक मिला । शुक्रिया । बड़ी खुशी हुई । आपका संपादकीय ''नयी ज़िन्दगी'' बहुत प्रभावशाली और प्रेरणापूर्ण है । आपने क्या खूब लिखा है कि संतान पहले अपने मां-बाप से डरती थी, लेकिन आज परिस्थितियों के नये बदलते परिवेश में मां-बाप को स्वयं अपनी संतान से डर कर रहना पड़ता है । आत्महत्या पर उतारू युवकों को आपने अपने **आलेख** द्वारा भरपूर ऊर्जा प्रदान की है, जिससे उनकी **हताशा** को कम करने में सहायता मिलेगी । **'गैंडे का सींग' कहानी** शिक्षाप्रद है । स्वार्थ की अंधी दौड़ में दोनों एक-दूसरे की जान लेकर अपनी लाशों को बिछा देते हैं ।

पं॰ बी॰एन॰ मुदगिल

गद्दी खेड़ी, रोहतक (हरियाणा)

एकेश्वरवाद

कुरआन मजीद में अल्लाह का फ़रमान है–"ज़मीन और आसमानों में जो कुछ भी है अल्लाह का है । और जो (फ़रिश्ते) उसके पास हैं, वे न अपने आपको बड़ा समझकर उसकी बन्दगी से मुंह फेरते हैं और न खिन्न होते हैं । रात व दिन उसकी तस्बीह (गुणगान) करते रहते हैं, दम नहीं लेते ।

क्या इन लोगों के बनाये हुए सांसारिक खुदा ऐसे हैं कि (बेजान को जान प्रदान करके) उठा खड़ा करते हों ? अगर आसमान और ज़मीन में एक अल्लाह के सिवा दूसरे खुदा भी होते तो (ज़मीन और आसमान) दोनों की व्यवस्था बिगड़ जाती । अतः पाक है अल्लाह, राजसिंहासन का मालिक, उन बातों से जो ये लोग बना रहे हैं वह अपने कामों के लिए (किसी के आगे) उत्तरदायी नहीं है और सब उत्तरदायी हैं ।" (सूरह 21:19-23)

"हमने इस कुरआन में तरह-तरह से लोगों को समझाया कि होश में आएं, मगर वे सत्य से और अधिक दूर ही भागे जा रहे हैं । ऐ नबी ! इनसे कहो कि अगर अल्लाह के साथ दूसरे खुदा भी होते, जैसा कि ये लोग कहते हैं, तो वे अर्श (सिंहासन) के मालिक के मक़ाम को पहुंचने की अवश्य कोशिश करते । पाक है वह और बहुत उच्च है उन बातों से जो ये लोग कह रहे हैं ।" (सूरह 17:41-44)

"इनसे कहो, "बताओ, अगर तुम जानते हो कि यह ज़मीन और उसकी सारी आबादी किसकी है ?" ये ज़रूर कहेंगे कि अल्लाह की । कहो कि "फिर तुम होश में क्यों नहीं आते ?" इनसे पूछो, "सात आसमानों और महान अर्श (सिंहासन) का स्वामी कौन है ?" ये ज़रूर कहेंगे, "अल्लाह ।" कहो, "फिर तुम डरते क्यों नहीं ? इनसे कहो, "बताओ अगर तुम जानते हो कि हर चीज़ पर सत्ता किसकी है ? और कौन है वह जो पनाह देता है और उसके मुक़ाबले में कोई पनाह नहीं दे सकता है ? ये ज़रूर कहेंगे कि "ये बात तो अल्लाह ही के लिए है । कहो, "फिर कहां से तुमको धोखा लगता है ?"

(सूरह 23:84-89)

यहां यह बात बतायी जा रही है कि यह व्यवस्था जिसमें तुम जी रहे हो, उसकी वास्तविकता यह है कि इस संपूर्ण व्यवस्था का पैदा करने वाला, स्वामी, शासक और रब सिर्फ़ एक अल्लाह है ।

अगर आसमान और ज़मीन में एक अल्लाह के सिवा दूसरे खुदा भी होते तो ज़मीन और आसमान दोनों की व्यवस्था बिगड़ जाती । इसको इस तरह समझा जा सकता है कि एक मामूली घर की व्यवस्था भी चार दिन कुशलतापूर्वक नहीं चल सकती अगर घर के दो स्वामी हों । और गहरी बात यह है कि सृष्टि की पूरी व्यवस्था, ज़मीन की तहों से लेकर दूर-दूर तक के ग्रहों तक, एक सर्वव्यापी क़ानून के अनुसार चल रही है ।

यह एक क्षण के लिए भी स्थिर नहीं रह सकती और अगर इसकी असीम विभिन्न शक्तियों और अनगिनत चीज़ों के बीच अनुपात, संतुलन, सामंजस्य और सहयोग न हो, और यह सब कुछ इसके बिना संभव नहीं है कि कोई अटल और ग़ालिब और ज़बरदस्त विधान इन अनगिनत चीज़ों और ताक़तों को पूरे मेल के साथ आपस में सहयोग करते रहने पर मजबूर कर रहा हो, अब यह किस तरह सोचा जा सकता है कि बहुत-से तानाशाहों के शासन में एक विधान इस नियमबद्धता के साथ विधिवत चल सके ? व्यवस्था का मौजूद होना, अनुशासन का पाया जाना स्वयं ही इस बात पर गवाह है कि अधिकार एक ही संप्रभुत्व (सत्ता) में केन्द्रित है और वह विभिन्न शासकों में बंटा हुआ नहीं है ।

सैफ़ुल्लाह
कोटा, राजस्थान

मीडिया की साम्प्रदायिक मानसिकता

अजमल क़साब की मृत्यु जहां एक ओर खुद संदेह के घेरे में है कि वह डेंगू बुख़ार से मरा है या फिर वास्तव में उसे फांसी ही दी गयी, उसकी मृत्यु पर बड़े कटाक्ष भरे उत्साह से केवल मुसलमान समाज की प्रतिक्रिया जानना क्या मीडिया की साम्प्रादायिक मानसिकता नहीं दर्शाता है ? मुस्लिम प्रतिनिधियों, मुस्लिम समाजसेवियों या मुस्लिम जनता की ही प्रतिक्रिया छापने से मीडिया आख़िर क्या सिद्ध करना चाहता है ?

वर्तमान राज्य सरकार ने सत्ता संभालते ही मुस्लिमों को 18 प्रतिशत आरक्षण देने की घोषणा की थी, लेकिन आजतक वह घोषणा पूरी नहीं हुई, इस पर मीडिया मुस्लिम समाज की प्रतिक्रिया क्यों नहीं लेता है ? केन्द्र सरकार इस्लाम के दुश्मन अमेरिका के इशारों या नेतृत्व में काम कर रही है । इस पर मीडिया भारतीय मुस्लिम समाज की

प्रतिक्रिया क्यों नहीं लेता है ? देश में छोटी-छोटी बच्चियों के साथ बलात्कार हो रहा है और जब से यू॰पी॰ में सत्ता परिवर्तन हुआ है तब से प्रदेश में अपराधों की नदी का बांध ही टूट गया है, इस पर मीडिया मुस्लिम समाज की प्रतिक्रिया क्यों नहीं लेता है ? आख़िर मीडिया यह क्यों भूल जाता है कि आख़िर देश ने जब भगत सिंह राजगुरु सुखदेव जैसे क्रांतिकारी पैदा किये हैं तो इसी देश ने अशफ़ाकुल्लाह ख़ां, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, अब्दुल हमीद जैसे वीर भी पैदा किये हैं । अगर देश ने डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन पैदा किया तो देश ने ए॰पी॰जे॰ अब्दुल कलाम भी पैदा किया है ।

फांसी की सज़ा कोई देश में आज पहली बार दी गयी है क्या कि मीडिया मुस्लिम समाज की प्रतिक्रिया बड़े चाव से जानना चाहता है ? आज से लगभग तीस वर्ष पूर्व दो बच्चों (सगे भाई-बहन) की निर्मम हत्या करने वाले दो वहशियों रंगा और बिल्ला को फांसी दी गयी थी । मोहन दास गांधी, इंदिरा गांधी के हत्यारों को भी इसी देश में फांसी दी गयी थी और प्रिंट मीडिया तो तब भी था और आज भी उस समय के अख़बार सुरक्षित हैं लेकिन उस समय तो ऐसी प्रतिक्रियाएं नहीं मांगी गयी थीं ।

आख़िर मीडिया मुस्लिम समाज की ही क़साब की मृत्यु के परांत प्रतिक्रिया क्यों जानना चाहता है ? मुस्लिम वर्ग की ग़रीबी, मुस्लिम वर्ग की बीमारियों, मुस्लिम वर्ग में नारियों की स्थिति पर आख़िर आज तक मीडिया ने मुस्लिम समाज सेवियों या मुस्लिम जनता की प्रतिक्रिया क्यों नहीं ली ? मीडिया को देश में साम्प्रदायिक सौहार्द बनाने में सहयोग करना चाहिए न कि संवेदनशील मुद्दों को हवा देनी चाहिए ।

रचना रस्तोगी
189/9, नंदन कुंज, वेस्टर्न कचहरी रोड,
मेरठ, (यू॰पी॰)

जैसी करनी वैसी भरनी

'कान्ति' मासिक पत्रिका के तीन अंक मई, अगस्त और सितम्बर 2012 पढ़े, अच्छे लगे ।

मनुष्य इस दुनिया में जो बोता है, उसी का फल उसे काटना पड़ता है । यह बात सामान्यत: लोगों की समझ में नहीं आती । मनुष्य अपने घमंड में खोया रहता है, यह नहीं समझता कि मालिक उसे देख रहा है और उसके सारे कर्म पर नज़र रखी जा रही है । अगर मनुष्य परवरदिगारे आलम का ख़ौफ़ माने तो इस ज़मीन पर ख़ून-ख़राबा क्यों हो ?

डॉ॰ जसवंत सिंह जनमेजय
29 ए॰, डी॰डी॰ए॰ फ्लैट कटवरिया सराय,
नयी दिल्ली-16

क्षणिकाएं

(1)
सफ़ेद वस्त्र पहनना
नेता की मजबूरी है
क्योंकि काला मन
छिपाना भी तो
ज़रूरी है

(2)
बेईमानों ने
आपस में कमीशन बंटने में
ग़ज़ब की ईमानदारी
दी दिखायी
बेईमानी की जय हो
भाई ।

(3)
नेता जी सच में
भोले भाले हैं
बाहर से भोले
और भीतर से
भाले हैं ।

प्रो॰ शरद नारायण खरे
विभागाध्यक्ष, इतिहास, शासकीय महिला महाविद्यालय,
मंडला (म॰प्र॰)

भ्रांति दूर करने वाली पत्रिका

'कान्ति' के नवम्बर 2012 अंक का अवलोकन किया । यह यथानाम अंधेरा भगाती है । इस्लाम के प्रति हम ब्राह्मणों की भ्रांति भी दूर करती है । तदर्थ मैं 'कान्ति' का अक्षर-अक्षर पढ़ता हूँ । इस्लाम का क-ख-ग भी नहीं जानता था, किन्तु 'कान्ति' के कारण, वीरवर हज़रत मुहम्मद (नबी) के महान कार्यों के प्रति आदर-भाव बढ़ता जाता है । उनके संस्मरण, उनके वचन 'कान्ति' के अंकों में प्रकाशित होते

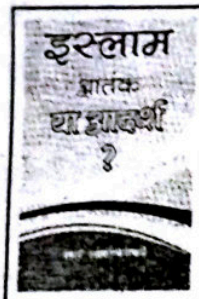

एक अहम किताब

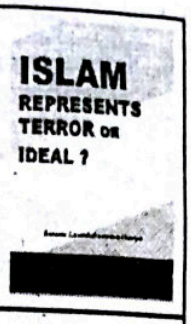

लेखक : स्वामी लक्ष्मीशंकाराचार्य

☆ इस्लाम : आतंक या आदर्श?	(हिन्दी)	पृष्ठ 96	मूल्य 40₹
☆ ISLAM : Repersents Terror or Ideal?	(अंग्रेज़ी)	पृष्ठ 128	मूल्य 100₹
☆ اسلام: دہشت گردی یا ایک مثالی دین ؟	(उर्दू)	पृष्ठ 104	मूल्य 40₹

स्वामी जी ने इस्लाम के विरुद्ध एक किताब ''इस्लामी आतंक का इतिहास'' लिखी जिसका अंग्रेज़ी अनुवाद 'The History of Islamic Terrorism' के नाम से प्रकाशित हुआ था। इस्लाम के अध्ययन के बाद उन्होंने अपनी ग़लती के लिए क्षमा चाही है और इस्लाम के बारे में अपने उच्च विचार उपरोक्त किताब में लिखे, ताकि इस्लाम के बारे में लोगों की ग़लतफ़हमियाँ दूर हो सकें।

स्वामी जी की यह किताब हिन्दी, अंग्रेज़ी और उर्दू में हमारे यहाँ उपलब्ध है। (यह किताब अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में भी प्रकाशित हो रही है।)

हमारी अन्य पुस्तकें

इस्लाम एक स्वमसिद्ध ईश्वरीय जीवन व्यवस्था	(उर्दू, हिन्दी)	राजेन्द्र नारायाण लाल	25₹
इस्लाम मानवता पूर्ण ईश्वरीय धर्म	(हिन्दी)	लाला काशी राम चावला	25₹
इस्लाम एक सामान्य परिचय	(उर्दू, हिन्दी)	शेख़ अली तनतावी (रह०)	80₹
इतिहास के साथ यह अन्याय	(उर्दू, हिन्दी)	बी० एन० पाण्डे	7₹
पवित्र कुरआन में मानवता की शिक्षा	(हिन्दी)	विजय गोपाल मंगल	10₹
ग़लतफ़हमियों का निवारण	(उर्दू, हिन्दी, अंग्रेज़ी)	डॉ० ज़ाकिर नाइक	25₹
कुरआन पर अनुचित आक्षेप	(उर्दू, हिन्दी)	नसीम अहमद ग़ाज़ी	15₹

दावती काम करनेवालों और मुफ़्त तक़सीम करनेवालों के लिए विशेष छूट।

मधुर सन्देश संगम

E-20, अबुल-फ़ज़्ल इंक्लेव, जामिया नगर, नई दिल्ली - 110025
फोन : 011-26953327, 09212356332,
e-mail : madhursandeshsangam@yahoo.co.in

रहते हैं आशा है कि भविष्य में भी यह सिलसिला जारी रहेगा । 'कान्ति' जैसी उत्तम सम्पादित पत्रिका, सदा एवं नियमित भेजें, आभार !

अंबु शर्मा
संपादक : 'नैणसी'
फ्लैट नं॰ 513, जलवायु रेजिडेंसी,
कोलकाता-700008

पहल की ज़रूरत

'कान्ति' के नवम्बर एवं दिसम्बर दोनों अंक पढ़े । दिसम्बर अंक के संपादकीय में आपने भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ ठोस प्रयासों की ज़रूरत की बात की है । बिल्कुल ठीक है । हम सभी को ही पहल करनी होगी । इन्सान को अपनी मानसिकता में बदलाव लाना होगा । अच्छे संपादकीय के लिए बधाई ।

डॉ॰ रवि शर्मा मधुप का लेख, जो भारत-पाकिस्तान के संबंधों के साथ-साथ हिन्दुओं व मुसलमानों के आपसी संबंधों की भी चर्चा करता है, प्रभावित करता है । पत्रिका में आप काव्य रचनाएं भी दे रहे हैं, अच्छी बात है । आपने मेरे सम्मान की न्यूज़ को फ़ोटो सहित प्रकाशित किया, अच्छा लगा ।

अमित कुमार लाडी
फ़रीदकोट, पंजाब

अभिप्राय की महिमा

आज देश में वर्णों में, जाति में और संप्रदायों में राग द्वेष ज़्यादा ही देखने को मिलते हैं, क्योंकि सबका अभिप्राय अलग-अलग होता है । इसे इस प्रकार समझने की ज़रूरत है कि यदि कोई अंगूठा दिखाये तो हमें क्रोध का आना स्वाभाविक है और वहीं अंगूठा यदि हमारे सिर पर तिलक लगाने हेतु आगे आये तो हमें प्रसन्नता का अनुभव होगा । इसी परिदृश्य में हमें अन्य मतावलंबियों के भाव को समझ कर तदनुसार हमारे भावों को भी प्रदर्शित करना चाहिए ताकि राग द्वेष पैदा ही न हो और समाज में शांति बनी रहे ।

घेवरचन्द गोदीका
जयपुर, राजस्थान

सकारात्मक

'कान्ति' का नवम्बर अंक पढ़ा । 'बुढ़ापा–एक कड़वा सच', 'गो प्रेम-कुछ विचारणीय बातें', 'शैक्षिक स्तर के सुधार की बातें' और 'संपादकीय'–'धार्मिकता से मिलेगी नयी ज़िन्दगी' आदि लेख विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । डॉ॰ प्रीत करोड़ा की कविताएं, विशेषकर 'मां तुझे सलाम' पसन्द आयी ।

अंक की जानकारियां मिथ्या मान्यताओं से अलग सुधारात्मक, सकारात्मक तथ्यों को उजागर करने वाली हैं । धार्मिक मान्यताओं में सुधार लाना और उन्हें ढकोसलों से अलग करना ज़रूरी है ।

निरंजन कुमार निराकार
रामगढ़, रतलाम

ख़ुशी लौट आनी चाहिए

एक बात तो हर बात में होती है
पर बात कुछ भी हो ख़ुशी लौट आनी चाहिए
सुना है टूटे दिलों के रंग अक्सर बदल जाया करते हैं
इन्द्रधनुष के रंग भी कुछ पल में मिट जाया करते हैं
पर बात कुछ भी हो बस ख़ुशी लौट आनी चाहिए
खो चुके उन हज़ारों मौक़ों पर रुक-रुककर मेरी
ये हस्ती ही न खो जाए
इस डर से मैं अभी ज़िन्दा हूं
उम्मीद का महल बनाए, कहीं ये दिल डूब न जाए
जो संगीत मैंने लिखा, कहीं उसके सुर इन्हीं पन्नों में न मिट जाएं
काश उसे सुनाने वालों का क़ाफ़िला मेरी तरफ़ चला आये
और काश एक बार फिर, यह ज़िन्दगी मेरी हो जाए
बात कुछ भी हो बस खुशी घर लौट आनी चाहिए
खो चुके उन मौक़ों पर मेरी काश...
उम्मीद के महल में संगीत बनाओ और उसकी सुर पर नाच उठो
काश एक बार फिर ये ज़िन्दगी मेरी हो जाए
अपनी क़लम की धार पर कौन-सी राह बनाऊं, पता नहीं?
पर उम्मीद बस इतनी है, जिस राह से भी मैं जाऊं
वह एक याद बन जाए
बात कुछ भी हो बस ख़ुशी घर लौट आनी चाहिए ।

● **स्नेह लता**
snehamishra88@gmail.com

मदद के लिए अपील

जामिया मिस्बाहुल उलूम चौकोनियां, पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक जाना-माना तालीमी इदारा है। यह इदारा सिद्धार्थ नगर ज़िला के ग्रामीण क्षेत्र में है। यहां लगभग सभी राज्यों और पड़ोसी देश नेपाल के छात्र तालीम हासिल कर रहे हैं। यह इदारा आधी सदी से तालीम व तर्बियत के मोर्चे पर मुस्लिम समाज की सेवा कर रहा है। यहां प्राइमरी से लेकर आलिमीयत तक की तालीम का पूरा इन्तिज़ाम है। यहां दीनी और अस्री उलूम को एक ख़ास इम्तिज़ाज के साथ समोया गया है, जिसके कारण जामिया को तालीमी मैदान में एक अलग और प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है। यहां क़याम और तआम की सारी सहूलतें उपलब्ध हैं। जामिया मिस्बाहुल उलूम की विशेषता तालीम के साथ इस्लामी बुनियादों पर छात्रों की मिसाली तर्बियत करना है।

जामिया वेफ मंसूबे

● मर्कज़ी लाइब्रेरी की तामीर ● जामिया की मस्जिद के अधूरे कामों को पूरा करना ● लड़कियों के लिए अलग दर्सगाह की तामीर ● टेक्निकल सेन्टर का क़याम ● होस्टल की तामीर ● अनाथालय की तामीर ● फ़ैमिली क्वार्टर्स की तामीर

अहूले ख़ैर हज़रात से दरख़्वास्त है कि जामिया की दिल खोलकर मदद करें और अल्लाह वेफ यहां उसका बदला पाएं।

—: भेंजने का पता :--

जामिया मिस्बाहुल उलूम

चौकोनियां भारत भारी, सिद्धार्थनगर-272191

फ़ोन : 09670641947, 09451097177

जामिया का बैंक खाता नं॰

A/c No. 30290663653 S.B.I. डुमरियागंज, कोड-1250

A/c No. F.C.R. CD-149 सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया बेवॉ चौराहा

दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर (रज़ि०)

● सुशीला

हज़रत मुहम्मद साहब इस्लाम के पैग़म्बर थे । उन्होंने एक ईश्वर की पूजा का प्रचार किया । उनके उपदेशों का सार था एक ईश्वर की पूजा करो । सब भाई-भाई हैं । कोई न ऊंचा है, न नीचा । बुरे कामों से बचो । नेक कामों में लगो । इस्लाम का मतलब है अपने को ईश्वर को सौंप देना ।

उस ज़माने के लोग बड़े ख़राब थे । इन बातों का विरोध करते थे । वे बहुत से देवी-देवताओं को मानते थे । आपस में लड़ते रहते थे । बुरे-बुरे काम करते, शराब पीते, जुआ खेलते, लड़कियों को मार डालते, पशु-बलि और नरबलि चढ़ाते । कुछ लोग तो अपने बेटों की बलि भी चढ़ा देते थे, छूआछात भी थी । ये सब लोग क़बीलों में बंटे हुए थे ।

मक्के में उन दिनों सबसे प्रतिष्ठित क़बीला कुरैश का था । उनका सरदार मक्के पर राज करता था । वही काबे का रखवाला था । ये लोग नये धर्म के विरोधी थे । सब बराबर हैं ये इस बात को नहीं मानते थे । शुरू में उन लोगों ने मुहम्मद साहब को लालच दिया, पर आप नहीं माने । इस पर वे मुहम्मद साहब और उनके साथियों को सताने लगे ।

हज़रत उमर भी कुरैश थे । बहुत बहादुर थे । उनका डीलडौल बड़ा ऊंचा था । हज़ारों आदमियों में अलग दिखाई दे जाते । वे भी मुहम्मद साहब के ख़िलाफ़ थे, लेकिन उनके बहनोई सईद मुसलमान हो चुके थे । उनके साथ उमर की बहन फ़ातिमा भी मुसलमान हो गयी थीं । कई दूसरे लोग भी मुसलमान हो गये थे । उनमें उनके घराने की एक दासी थी । उमर मुसलमानों के बैरी थे । वह उस दासी को ख़ूब मारते थे । मारते-मारते थक जाते तो कहते, "ज़रा दम ले लूं तो फिर मारूंगा ।"

वह दूसरे लोगों को भी सताते थे, लेकिन नये धर्म का नशा बड़ा तेज़ था । जिस पर चढ़ जाता था, उतरता नहीं था । उमर बड़े परेशान हुए । एक भी आदमी धर्म नहीं छोड़ता । आख़िर उन्होंने मुहम्मद साहब को मार डालने का फ़ैसला किया । न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी । बस, कमर में तलवार बांधी और घर से निकल पड़े ।

राह में एक साथी मिल गये । इनके तेवर चढ़े देखे तो पूछा, "किधर जा रहे हैं ?"

जवाब दिया, "मुहम्मद का फ़ैसला करने ।"

साथी ने कहा, "पहले घर की ख़बर लो । तुम्हारी बहन और बहनोई दोनों इस्लाम को मान चुके हैं ।"

उमर तुरंत लौट पड़े । उसी तरह बहन के घर पहुंचे । बहन क़ुरआन पढ़ रही थी । आहट पाकर चुप हो गयी । क़ुरआन छिपा दी, लेकिन आवाज़ उमर के कानों में पड़ चुकी थी । पूछा, "क्या पढ़ रही थी ?"

बहन ने जवाब दिया, "कुछ नहीं ।"

बोले, "मैं सुन चुका हूं । तुम दोनों मुसलमान हो गये हो ।"

यह कहकर वे बहनोई की तरफ़ झपटे । वह उनको मारना चाहते थे । बहन बचाने दौड़ीं । उमर ने उनका चेहरा भी लहूलुहान कर दिया । पर वह डरी नहीं, झिझकी तक नहीं । बोली, "उमर, जो जी में आये करो ।"

उमर का हाथ रुक गया । उसने अपनी बहन को देखा । उसके चेहरे पर एक भी शिकन नहीं थी । डर नहीं था । आंखों में वही प्यार था । वे कह रही थीं, "तू हमें इसलिए मारता है कि हम एक ख़ुदा को मानते हैं । हां, मैं कहती हूं ख़ुदा एक है, दूसरा कोई नहीं है । मुहम्मद (सल्ल०) उसके रसूल हैं ।

उमर का दिल धड़कने लगा । इतने निडर, इतने साहसी हैं ये लोग ! मौत से भी नहीं घबराते । इस्लाम में इतनी ताक़त है । उन्होंने फिर बहन की तरफ़ देखा । उसके बदन से अब भी ख़ून बह रहा था । उमर का दिल भर आया । आंखों में प्यार झलकने लगा । बोले, "तुम जो पढ़ रही थीं, मुझे भी सुनाओ ।"

फ़ातिमा क़ुरआन ले आयीं । उमर उसे पढ़ने लगे, ग़ौर से पढ़ने लगे एक बार पढ़ा, दो बार पढ़ा, बार-बार पढ़ा । पढ़ चुके तो पुकार उठे, "अल्लाह एक है । मुहम्मद उसके

रसूल हैं ।''

इसके बाद बहन और बहनोई से माफ़ी मांगी । फिर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के पास पहुंचे । दरवाज़ा खटखटाया ।

किसी को भी इस नयी कहानी का पता न था । कमर में तलवार बंधी हुई थी । वहां जो लोग थे, वे कुछ घबराये । लेकिन एक साहब बोले, ''आने दो । नीयत साफ़ है तो ठीक है, नहीं तो उसी तलवार से सिर काट दूंगा ।

उमर भीतर आये । मुहम्मद साहब आगे बढ़े उनका दामन पकड़ कर बोले, ''क्यों उमर, कैसे आये हो ?''

उमर कांपने लगे । बोले, ''ईमान लाने के लिए ।'' यह सुनना था कि सब लोग एकदम पुकार उठे, ''अल्लाहु अकबर !''

यह पुकार बड़ी तेज़ थी, इतनी तेज़ कि मक्का की तमाम पहाड़ियां गूंज उठीं । क्यों न गूंजती, उमर मुहम्मद के साथ मिल गये थे । उमर कुरैश के एक बहुत बड़े सरदार थे । उमर इस्लाम के भी बड़े आदमी हुए ।

वे सबको बराबर समझते थे । ग़रीब और अमीर, छोटे और बड़े सबका एक दर्जा था । कहा करते थे, ''अल्लाह नेकी और अच्छे कामों को देखता है । जन्म को नहीं देखता । उसकी नज़र में सब बराबर हैं ।'' वे इन बातों को कहते ही नहीं थे, मानते भी थे । वे अफ़सरों को भी टोकते रहते थे ।

हज़रत उमर के लिए राज करने का मतलब था सेवा करना । वह अपने को मालिक नहीं समझते थे । एक बार एक बड़े आदमी मिलने आये । साथ में और लोग भी थे । आकर देखा वह आस्तीन चढ़ाये इधर-उधर दौड़ते फिरते हैं । उन्हें देखा तो बोले, ''आओ, तुम भी मेरा साथ दो ।'' आने वाले ने पूछा, ''ख़ैर तो है ! क्या हो गया ?''

बोले, ''बैतुलमाल से एक ऊंट भाग गया है । एक ऊंट में कितने ग़रीबों का हक़ शामिल है ।''

एक आदमी बोल उठा, ''अमीरुल मोमिनीन, आप क्यों परेशान हो रहे हैं ? किसी गुलाम को कहिए, वह ढूंढ़ लाएगा ।''

उन्होंने फ़ौरन कहा, ''मुझ से बढ़कर कौन गुलाम हो सकता है !''

वे बड़ी सादगी से रहते थे । ज़मीन पर सोते थे । खाना बड़ा सादा खाते थे । महीनों गेहूं का आटा घर में नहीं पकता था । छानते तो कभी भी नहीं थे । कपड़े भी सादे होते । अक्सर उनमें पैबन्द लगा रहता । बदन पर फटा हुआ कुरता, सिर पर फटा हुआ अमामा, पैरों में फटी हुई जूतियां । एक बार देर तक घर से नहीं निकले । बाहर लोग राह देख रहे थे । आये तो कारण मालूम हुआ । पहनने को कपड़े न थे, सो बदन के कपड़ों को धोया था । सूख गये तो पहन कर बाहर आये ।

कभी कंधे पर मशक लिए जा रहे हैं । बेवा औरतों के घर पानी भरना है । कभी मस्जिद के कोने में ज़मीन पर लेटे हैं । काम करते-करते थक गये हैं । बार-बार बादशाही काम से सफ़र करते, पर साथ में न ख़ेमा, न शामियाना । न फ़ौज, न कुछ और । किसी पेड़ पर कपड़ा डाल दिया जाता । उसी की छांह में इस्लाम का वह महान ख़लीफ़ा आराम करता ।

एक बार वह सीरिया गये । साथ में बस एक नौकर था । राह में आप उसके ऊंट पर सवार हो गये । शायद ग़लती से ऐसा हुआ था । जान-बूझकर भी हो सकता है । जो हो, ऊंट बदल गया । उनका ऊंट कुछ सजा हुआ था । जब शहर में पहुंचे तो लोग स्वागत करने आये । बड़ा मज़ा आया । लोग नौकर की तरफ़ जाते । उसी को ख़लीफ़ा समझते । वह हज़रत उमर की तरफ़ इशारा करता । लोग हैरान-परेशान, आख़िर ख़लीफ़ा कौन से हैं ? बेचारे शान-शौकत ढूंढ़ते थे, पर हज़रत उमर के पास कहां मिलती !

यह बात नहीं कि वे कंजूस थे । अस्ल में उनको लोगों के सामने मिसाल रखनी थी । ख़ुद ऐश करते तो लोगों से क्या कहते ! वह जानते थे कि अफ़सर बिगड़ते जा रहे हैं । इसलिए अपने पर कुछ अधिक सख़्ती करते थे ।

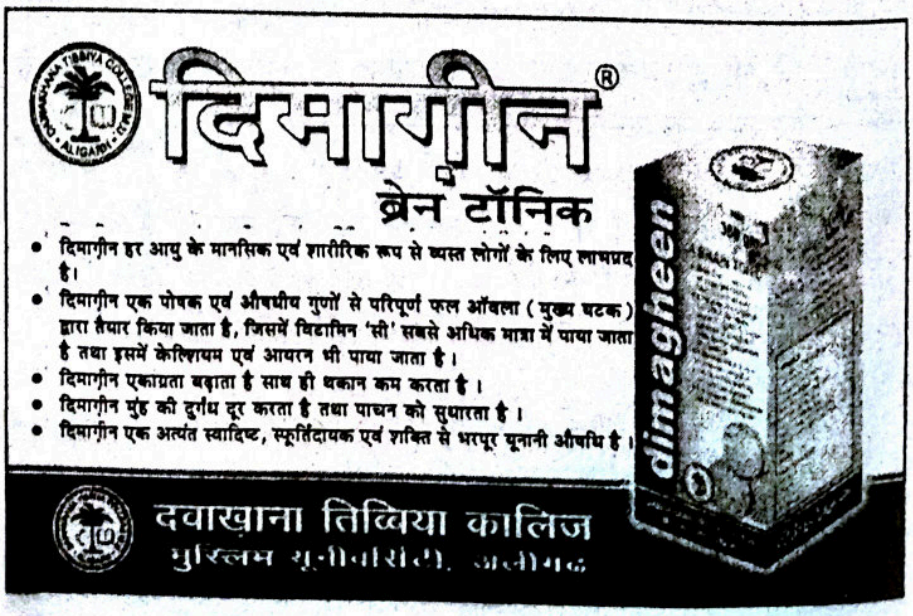

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़

❖ शराफ़त अली ख़ान

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की पैदाइश सन 62 हि॰ में हुई । आपके वालिद अब्दुल अज़ीज़ बिन मरवान मिस्र के हाकिम थे । आपकी वालिदा हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰) की पोती थीं । आपका सिलसिला-ए-ख़ानदान हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ बिन मरवान बिन हकम से मिलता है । हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ खुलफ़ा-ए-राशिदीन के पांचवें ख़लीफ़ा हैं ।

सुलेमान बिन अब्दुल मलिक आपके तायाजाद भाई थे । उनका बेटा अय्यूब जिसे सुलेमान बिन मलिक ने अपना वली अह्द बनाया था, के इन्तिक़ाल के बाद सुलेमान बिन अब्दुल मलिक ने हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को अपना वली अह्द बनाया ।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़, सुलैमान बिन अब्दुल मलिक के दौर-ए-ख़िलाफ़त में उनके वज़ीर व मुशीर रहे । हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ख़लीफ़ा बनने से पहले क़ीमती कपड़े पहनते थे, मगर ख़लीफ़ा बनने के बाद, आपके खाने और पहनने के अंदाज़ में पूरी तरह सादगी आ गयी । कहा जाता है कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ जब जुमा की नमाज़ पढ़ाने आये तब उनके कुरते में पैवन्द लगे हुए थे । लोगों ने पूछा कि अमीरुल मोमिनीन, अल्लाह ने आपको सब कुछ अता किया है मगर फिर भी आप कपड़े नहीं बनवाते हैं, आपने फ़रमाया खुशहाली में बीच का रास्ता और ताक़त होने पर माफ़ करना बड़ी चीज़ है ।

एक दिन हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के पास एक साहब बैठे थे । अचानक चिराग़ बुझ गयी । आपका ग़ुलाम पास में ही सो रहा था । पहले उन साहब ने ग़ुलाम को उठाना चाहा तब आपने ग़ुलाम को उठाने से मना फ़रमाया। फिर वह साहब ख़ुद उठकर चिराग़ चलाने को जाने को हुए तब भी आपने मना फ़रमाया । फिर आप ख़ुद उठे चिराग़ में तेल डाला और चिराग़ जलाकर अपनी जगह पर बैठ गये और फ़रमाने लगे कि मैं उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ वहीं हूं जो ख़लीफ़ा बनने से पहले था ।

जब हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ख़लीफ़ा हुए तब आप काफ़ी परेशान से दिख रहे थे । बीवी के पूछने पर कि आप इतने परेशान क्यों हैं, कहने लगे कि मेरे सर पर उम्मते मुहम्मदी का बोझ आ गया है, इसलिए मैं परेशान हूं । आपने ख़लीफ़ा बनने के बाद सबसे पहले अपनी बीवी के जेवर बैतुलमाल में जमा करने को कहा, उसके बाद और लोगों को हुक्म दिया ।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का ज़्यादातर वक़्त ख़ुदा की इबादत में गुज़रता था । आपका इन्साफ़ इतना मज़बूत था कि किसी शख़्स को सज़ा देने से पहले आप उसे तीन दिन क़ैद में इसलिए रखते थे कि कहीं गुस्से या जल्दबाज़ी में इन्साफ़ ग़लत न हो जाए ।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की हुकूमत पंजाब, बुख़ारा, तुर्किस्तान, मोरक्को, उन्दुलुस और फ्रांस तक फैली हुई थी । आपके दौर-ए-ख़िलाफ़त में चारों तरफ़ शांति थी । आपकी वफ़ात पर मुसलमानों के अलावा ईसाइयों और यहूदियों को भी बेहद अफ़सोस हुआ । गिरजाघरों और इबादतख़ानों में भी सोग मनाया गया । आपने शिया, सुन्नी वग़ैरह के झगड़ों को ख़त्म किया ।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ से बनू उमैया के लोग इसलिए दिल ही दिल में जलते थे कि जो उन लोगों ने पहले से जागीरें, जायदाद व माल ग़लत तौर पर हड़प लिया था उसको आपके हुक्म पर बैतुलमाल में जमा करना पड़ा था । इससे वे लोग आपको क़त्ल करने के लिए दिल ही दिल में तरह-तरह की साज़िशें करने लगे । उन्होंने आपके एक ग़ुलाम को लालच देकर क़त्ल करने के लिए राज़ी कर लिया । ग़ुलाम ने हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को ज़हर दे दिया । आपको इस बात का इल्म फ़ौरन ही हो गया । आपने ग़ुलाम को बुलाया और उससे पूछा कि मुझे मारने के लिए तुझे क्या लालच दिया गया । उसने कहा कि मुझे एक हज़ार दीनार दिये गये हैं । आपने फ़रमाया कि एक हज़ार दीनार बैतुलमाल में जमा कर दो और अब मुझे अपनी शक्ल कभी न दिखाना ।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की वफ़ात सन 101 हिजरी में हुई । आपने अपने पीछे तीन बीवियां और ग्यारह बच्चे (लड़के) छोड़े । आपकी वफ़ात के बाद कुल इक्कीस दीनार आपके पास पाये गये, जिसमें से कुछ कफ़न-दफ़न में ख़र्च हो गये, बाक़ी बच्चों में बंट गये । इस तरह से दुनिया से एक आदर्श ख़लीफ़ा, जिसका दौर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰), हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰) के दौर-ए-ख़िलाफ़त से मिलता था, का अंत हो गया ।

آپ اخبار کس لیے پڑھتے ہیں

کیا ☆ محض تفریح طبع کے لیے یا صرف وقت گزاری کے لیے؟

یا پھر ☆ مخالفوں کو صرف برا بھلا کہہ کر تھوڑی دیر کو خوش ہونے کے لیے؟

اگر ایسا ہے تو اس کا مطلب یہ ہے کہ آپ ملک کے حالات اور ملت کے مسائل کے سلسلے میں سنجیدہ نہیں ہیں

اخبار پڑھنے کا مقصد ہونا چاہئے

☆ حالات وواقعات سے ان کے صحیح تناظر میں باخبر رہنا۔

☆ مخالفتوں کا جواب معقول اور مدلل طریقے سے دینا۔

☆ مسائل پر جذباتی انداز کے بجائے سنجیدگی سے غور کرنا۔

☆ انفارمیشن اور پروپیگنڈے کے فرق کو سمجھنا۔

☆ اسلام اور مسلمانوں کی مخالفت کرنے والوں کی نفسیات کا ادراک کرنا۔

اگر آپ کو ھماری اس بات سے اتفاق ھے تو یقین مانئے

دعوت ہی آپ کا اخبار ہے

دعوت www.dawatonline.com

جو

☆ ملک کے استحکام، سلامتی، ترقی اور خوش حالی کے لیے ٹھوس تجاویز پیش کرتا ہے۔

☆ ملکی اور بین الاقوامی حالات پر بے لاگ رائے کا اظہار کرتا ہے۔

☆ اسلام اور امت مسلمہ کے خلاف کیے جانے والے پروپیگنڈے کا توڑ کرتا ہے۔

☆ برادرانِ وطن کے سامنے اسلام اور مسلمانوں کی صحیح تصویر رکھتا ہے۔

دعوت خود پڑھئے اوروں کو پڑھوایئے۔

دعوت www.dawatonline.com

زرتعاون: سالانہ -/600 روپئے، ششماہی -/300 روپئے، فی کاپی -/5 روپئے

بیرون ملک سالانہ -/10,000 روپئے، ششماہی -/5,000 روپئے

اپنے قریبی ہاکر سے طلب کیجیے یا ہمیں لکھئے، نمونہ کی کاپی مفت بھیجی جاتی ہے۔

سہ روزہ دعوت میں اشتہار دے کر اپنی تجارت کو فروغ دیجئے

Manager Dawat (Urdu Sehroza)

D-314, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-11 0025

Phone : 09818799113, (011) 26949539, Fax : (011) 26958816

E-mail : dawattrust@yahoo.co.in, dawatnews@indiatimes.com

ADVT.

भारत में घरेलू हिंसा–एक ज्वलंत समस्या

● डॉ॰ नजीव अहमद ख़ान
(दरभंगा, बिहार)

आज नारी के प्रति आपराधिक हिंसा ही नहीं बढ़ रही है अपितु घरेलू हिंसा में भी अत्यधिक वृद्धि हो रही है । घरेलू हिंसा का संबंध घर-गृहस्थी में नारी का किया जाने वाला शारीरिक और मानसिक उत्पीड़न है । विवाह के समय नारी सुनहरे स्वप्न देखती हैं कि अब प्रेम, शांति व आत्म-उपलब्धि का जीवन प्रारंभ होगा । परन्तु इसके विपरीत सैकड़ों विवाहित नारियों के यह सपने क्रूरता से टूट जाते हैं । वे पति द्वारा मार-पीट और यातना की अंतहीन लंबी अंधेरी गुफ़ाओं में अपने आपको पाती हैं जहां उनकी चीख़-पुकार सुनने वाला कोई नहीं होता ।

दुख तो यह है कि ऐसी मारपीट का ज़िक्र करने में भी उन्हें लज्जा अनुभव होती है और यदि वे शिकायत भी करें तो ख़ुद उन्हें ही दोषी माना जाता है या उन्हें भाग्य के सहारे चुपचाप सहने की सलाह दी जाती है । पड़ोसी ऐसे मामलों में प्राय: हस्तक्षेप नहीं करते क्योंकि यह पति-पत्नी के बीच एक निजी मामला समझा जाता है । यदि पुलिस में रिपोर्ट करने जाएं तो वहां भी पुरुष प्रधान संस्कृति में पले पुलिस अधिकारी पहले नारी का ही मज़ाक़ उड़ाते हैं और रिपोर्ट लिखने में आनाकानी करते हैं । पुरुष को पत्नी की पिटाई का निरपेक्ष अधिकार है और आम आदमी यह मानकर चलता है कि नारी पिटने लायक़ ही होगी अत: पिटेगी ही । दुर्भाग्य की बात है कि ऊपर से शांत और सम्मानित परिस्थिति वाले अनेक परिवारों में, ज़हां पति-पत्नी दोनों शिक्षित और आत्म-निर्भर हैं, भी मारपीट की घटनाएं हो जाती हैं और यह नियमितता का रूप लेने लगती हैं । कहीं-कहीं पिता भी अपनी अविवाहित बेटियों के साथ बहुत मारपीट करते हैं । ऐसी स्थिति में सामाजिक दृष्टि से नारी बड़ा असहाय महसूस करती है, क्योंकि वह जहां कहीं शिकायत करे, चाहे पड़ोसी हों, चाहे उसके सगे-संबंधी, चाहे पुलिसा, वकील या जज, सभी उसे समझौता करने की ही सलाह देते हैं ।

सोनल का कहना सही है कि इस घरेलू हिंसा के विरुद्ध संगठित प्रयास किया जाना ज़रूरी है । नगरों में नारियों को परस्पर बातचीत करना सीखना चाहिए और एक-दूसरे के अनुभवों से फ़ायदा उठाना चाहिए । सबसे बड़ी ज़रूरत तो ऐसे संरक्षण गृहों की हैं जहां ऐसी परिस्थिति में नारी अपने बच्चों के साथ सिर छिपा सके और फिर इसी दशा में आवश्यक क़दम उठा सके । यहां यह बता दिया जाना आवश्यक है कि क़ानून की दृष्टि से नारी के प्रति यह घरेलू हिंसा का अपराध है और पुलिस का यह दायित्व है कि ऐसे मामलों की जांच करें । ऐसा न करना उनकी कार्य के प्रति लापरवाही समझी जाती है जो दंडनीय है । किसी भी व्यक्ति के प्रति हिंसा निजी विषय नहीं हो सकता, यह तो सार्वजनिक मामला है ।

घरेलू हिंसा में दहेज हत्याएं, पत्नी को पीटना, यौन शोषण, विधवाओं तथा बुज़ुर्ग नारियों पर अत्याचार इत्यादि को प्रमुखत: सम्मिलित किया जा सकता है । इन्हें निम्न प्रकार से समझा जा सकता है–

दहेज हत्याएं भारतीय समाज में नारी के लिए विवाह में दहेज अनिवार्य है । इसलिए दहेज की समस्या एक भयंकर समस्या बनती जा रही है । आये दिन समाचार पत्रों में दहेज की शिकार अभागी नारियों के जलाने की घटनाओं का विवरण छपा होता है । पिछले कुछ वर्षों में ऐसी घटनाओं का प्रतिशत बढ़ता ही जा रहा है और दहेज का समाज के प्रत्येक समुदाय में प्रसार भी होता जा रहा है । इसके विरुद्ध हाल ही में कठोर क़ानून भी बनाये गये हैं, पर पति के परिवार में अकेली नारी क्यों करे ? पिता या भाई भी कब तक विवाहित बेटी या बहन को अपने घर पर रखें कहीं-कहीं आर्थिक कठिनाई उन्हें मजबूर करती हैं कि वे उसे पति के घर वापस भेज दें और कहीं-कहीं सामाजिक निंदा उन्हें मजबूर करती है कि वे बेटी के लालची ससुराल वालों के साथ समझौता करने का प्रयत्न करते रहें । परिणाम नारी की मृत्यु तक पहुंच जाता है ।

अधिकांश दहेज हत्याएं पति के घर में पति पक्ष के

लोगों द्वारा एकांत में की जाती हैं । इनका कोई अधिक ठोस प्रमाण न मिल पाने के कारण पति तथा पति पक्ष के लोग ऐसा करने पर भी कई बार बच जाते हैं । अनेक दहेज हत्याओं को सामान्य मृत्यु बता दिया जाता है और इस प्रकार से उनकी कोई सूचना भी प्राप्त नहीं हो पाती ।

राम आहूजा ने अपने आनुभविक अध्ययन में दहेज हत्याओं के बारे में अग्रांकित निष्कर्ष निकाले हैं–

1. मध्यम वर्ग की नारियों में दहेज हत्याएं निम्न तथा उच्च वर्ग की नारियों की तुलना में कहीं अधिक होती है ।

2. 70 प्रतिशत दहेज हत्याओं की शिकार नारियां 21 से 24 वर्ष की आयु की होती हैं ।

3. दहेज हत्या एक उच्च जाति प्रघटना है न कि निम्न जाति की समस्या ।

4. दहेज हत्या से पहले युवा दुल्हनों का अनेक प्रकार से उत्पीड़न किया जाता है ।

5. समाजशास्त्रीय दृष्टि से पर्यावरणीय दबाव अथवा सामाजिक तनाव, दहेज हत्याओं का प्रमुख प्रेरक कारक है । पति का स्वेच्छाचारी व्यक्तित्व, प्रभुत्वशाली प्रकृति व व्यक्तित्व में असामंजस्य इसके लिए उत्तरदायी प्रमुख मनोवैज्ञानिक कारक हैं ।

6. दुल्हन की शिक्षा व उसकी दहेज हत्या में कोई सहसंबंध नहीं पाया जाता है ।

7. दुल्हन को ज़िन्दा जला देने के मामलों में परिवार की रचना प्रमुख भूमिका निभाती है ।

पत्नी को पीटना–विवाह के संदर्भ में नारियों के प्रति हिंसा इसलिए महत्वपूर्ण मानी जाती है कि जिससे उसे प्यार करने व संरक्षण प्रदान करने की आशा की जाती है वहीं उसे पीटना शुरू कर देता है । यह पति पर पत्नी के विश्वास को पूर्णत: भंग कर देता है । कई बार ऐसी घटनाएं पति नशे की हालत में ही करते हैं परन्तु अन्यथा भी ऐसी घटनाएं होती रहती हैं । वह सारे अत्याचार चुपचाप सहन करती है और अपने भाग्य को कोसती रहती है ।

राम आहूजा ने 60 ऐसी नारियों से जो आंकड़े एकत्रित किये उनका विश्लेषण निम्नांकित तथ्यों की ओर संकेत करता है–

1. 25 वर्ष से कम की पत्नियां पति द्वारा मार–पिटाई का अधिक शिकार होती हैं ।

2. जो पत्नियां पति से आयु में पांच या अधिक वर्ष छोटी होती है, उनकी मार–पिटायी की संभावना अधिक होती है ।

3. इस प्रकार की घटनाओं की शिकार नारियां यद्यपि निम्न आय वाले परिवारों की होती हैं तथापि आय को पत्नी के पीटने से अनिवार्य रूप से नहीं जोड़ा जा सकता है ।

4. परिवार के आकार व रचना का पत्नी को पीटने से कोई संबंध नहीं है ।

5. पति द्वारा पिटायी से कोई गंभीर चोटें नहीं पहुंचतीं ।

6. यौनिक असामंजस्य, भावात्मक अशांति, पति का अत्यधिक अहम या उसमें निम्नता की भावना, पति की मद्यपानता, ईर्ष्या तथा पत्नी की निष्क्रियता व बुज़दिली पत्नी के साथ मार–पिटाई के प्रमुख कारण हैं ।

7. पति का बचपन में हिंसा के प्रति प्रकाशकरण पत्नी को पीटने में एक प्रमुख कारण है ।

8. यद्यपि अशिक्षित नारियों से ऐसा दुर्व्यवहार अधिकतर होता है, फिर भी शिक्षा तथा पत्नी को पीटने में कोई अनिवार्य सहसंबंध नहीं है ।

9. यद्यपि उन पत्नियों में ऐसे दुर्व्यवहार की संभावना अधिक है जिनके पति मद्यपान करते हैं, परन्तु अधिकांशत: पति–पत्नी की मार–पिटायी मद्यपान की दशा में नहीं करते अपितु तब करते हैं जबकि वे अमत्त होते हैं अर्थात पिये हुए नहीं होते ।

SHATABDI FOUNDATION, GAYA

- Started Shatabdi Public School in 2001 with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1400 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Free education is given to poor students of the locality after school time.
- Our immediate needs are—Purchase one more school bus, Construction of Prayer Hall & Purchase of 30 Computers.

(Prof. Z. H. Khan) Chairman

(Prof. M. B. Zaman) Secretary

SHATABDI PUBLIC SCHOOL

Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA

क्योंकि नारियों का यौन शोषण एवं यौन उत्पीड़न अधिकतर घर से बाहर ही होता है, इसलिए हमने इसकी विवेचना सामाजिक हिंसा शीर्षक के अंतर्गत की है । परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि यौन शोषण एवं यौन उत्पीड़न को घरेलू हिंसा के अंतर्गत नहीं रखा जा सकता । घरों में भी इस प्रकार के शोषण एवं उत्पीड़न की घटनाएं होती रहती हैं परंतु ये घटनाएं परिवार से बाहर कहीं अधिक होती हैं । इसलिए अब हम विधवाओं पर होने वाले अत्याचार की विवेचना ही घरेलू हिंसा के अंतर्गत करेंगे ।

नारी के लिए वैधव्य सबसे भयानक शब्द है । उसका सबसे बड़ा सौभाग्य सुहागिन बनना है । सूनी मांग मृत्यु से भी ज़्यादा भयानक है । हिन्दुओं की उच्च जातियों में विधवा के पुनर्विवाह की परंपरा नहीं थी । विधवा से बड़े संयमी और तपस्वी जीवन की आशा की जाती थी । इस पर भी उसे अनिष्टकारी माना जाता था और घर की बड़ी-बूढ़ियां उसे डायन कहती थीं जो अपने सुहाग को खा गयी । उससे आशा की जाती थी कि वह यौन संबंधी सभी बातों से विमुख रहेगी, जबकि परिवार के नज़दीकी रिश्तेदार और समाज में फिरते भूखे भेड़िये उसकी देह लूटने की चेष्टा करते हैं । यदि जाल में फंस गयी तो सारा दोष उसी का है, पुरुष तो उस लांछन से छूट ही जाती है । हिन्दू समाज ने शायद इसीलिए सती प्रथा का आविष्कार कर लिया था कि विधवा अपने पति की लाश के साथ ज़िन्दा जला दी जाए ताकि न रहेगा बांस और न बजेगी बांसुरी । यह फिर वृन्दावन और बनारस में विधवाओं को बाल मुंडवाकर रहने के लिए छोड़ दिया जाता था । आज भी ये हज़ारों की संख्या में सड़कों पर भिक्षा मांगती दिखायी देती हैं । अनेक विधवाएं वेश्यालयों तक भी पहुंच जाती हैं । राम अहूजा के अनुसार विधवाओं के प्रति हिंसा के प्रमुख लक्षण निम्नांकित हैं–

1. मध्य आयु वर्ग की विधवाओं की तुलना में युवा विधवाओं का अधिक अपमान व शोषण होता है ।

2. सामान्यत: विधवाओं को पति के व्यापार, बैंक खातों, जीवन बीमा पॉलिसियों इत्यादि कामों का बहुत कम ज्ञान होता है जिसके कारण वे पति पक्ष के सदस्यों के धोखे में आ जाती हैं जो उन्हें उनके मृत पतियों की संपत्ति नहीं देना चाहते ।

3. विधवाओं पर हिंसा को बढ़ावा देने वाले व्यक्ति पति पक्ष के ही सदस्य होते हैं ।

4. शोषण के तीन प्रेरकों में मध्यम वर्ग की विधवाओं के प्रति हिंसा हेतु संपत्ति अधिक महत्वपूर्ण है निम्न वर्ग में यौन शोषण अधिक महत्वपूर्ण है, जबकि शक्ति दोनों मध्यम व निम्न वर्ग की विधवाओं के प्रति हिंसा में अधिक महत्वपूर्ण है ।

5. यद्यपि सास का स्वेच्छाचारी व्यक्तित्व विधवाओं के शोषण में प्रमुख कारक हैं, तथापि विधवाओं की निष्क्रियता व बुज़दिली उनके शोषण में अधिक महत्वपूर्ण है ।

6. आयु, शिक्षा तथा वर्ग विधवाओं के शोषण से महत्वपूर्ण रूप से सहसंबंधित है परन्तु परिवार की रचना तथा आकार का इससे कोई सहसंबंध नहीं है ।

श्रेष्ठ कर्म करने वाले ही...

(पृष्ठ 3 का शेष)

बड़े भाग्य से मिला मनुज-तन,
तो छोड़ो सब गन्दी आदत ।
घड़ी-दो-घड़ी वक़्त निकालो,
परमेश्वर की करो इबादत ।।

गर नेकी की राह चलोगे,
बेशक सुख ही सुख पाओगे ।
पकड़ी डगर बुराई की तो,
जीवन भर तुम पछताओगे ।।

अपना हो या ग़ैर, किसी को,
दुख पहुंचाना ठीक नहीं है ।
सतत् बढ़ रहा जो निज पथ पर,
उसे गिराना ठीक नहीं है ।।

अच्छा है यह, जो भटके हैं,
उनको उनकी राह बता दो ।
हो असहाय गिरे हैं जो जन,
हाथ पकड़कर उन्हें उठा दो ।।

ऐसा जिसने किया अगर तो,
समझो सच्चा पुण्य यही है ।
बेशक वह तो सत्कर्मी है,
सफलता का आधार यही है ।।

Md. Rashid
9835125717

N. S. ENCLAVE

Masud Ahmad
9431107797

आप मकान,
दुकान, कोठी,
रिहाइशी मकान एवं
सस्ते और सुन्दर
प्लाट एवं फ्लैट
के लिए
संपर्क करें।



साथ में
बी॰ एड॰ कॉलेज
एवं
इंजीनियरिंग कॉलेज
की भी सुविधा
उपलब्ध है।

साथ में मस्जिद एवं क़ब्रिस्तान भी है।

नग़मा ड्रेसेज

हमारे यहां फैंसी साड़ियां, रेडिमेड ड्रेस, टी शर्ट,
बाबा सूट, फ्रॉक, मिडी, नाइटी, स्कूल ड्रेस,
जींस पैंट एवं फैंसी रेडिमेड होजरी वस्त्रों के लिए पधारें।

OFFICE CONTACT : NAGMA DRESSES
Booti Chowk, Dubey Market, Ranchi (Jharkhand)

CONTACT No. 2 Masud Ahmad, Hamid Book Depot,
Opp. Urdu Library,
Main Road, Ranchi-834001 (Jharkhand)

Mobile : 09431107797

ठंड, गर्मी, ग़रीबी और भूख से मरते लोग

❖ प्रो॰ चन्द्र प्रकाश आर्य
(करनाल, हरियाणा)

उत्तर भारत में ठंड का प्रकोप होने वाला है ऐसे में झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले, बेघर लोगों तथा फुटपाथ पर सोने वाले लोगों की जान पर बन आती है । एक तो ग़रीबी और भूख फिर सर्दी का प्रकोप । कोहरे और ठंड से देश के विभिन्न भागों में सैकड़ों लोगों की मौत हो चुकी है । यद्यपि लोगों के जीवन की हर प्रकार से रक्षा करना केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारों व प्रशासन का काम है परन्तु एक जनहित याचिका पर पिछले साल सर्वोच्च न्यायालय ने उत्तर प्रदेश, हरियाणा, झारखंड, राजस्थान, पंजाब, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश व महाराष्ट्र सरकारों को पर्याप्त रैन बसेरे बनाने का निर्देश दिया है ताकि ठंड से कोई मौत न हो, कोई भी ग़रीब खुले आसमान के नीचे रात बिताने को मजबूर न हो ।

इसलिए ठंड के साथ-साथ ग़रीबी, भूख से पीड़ित लोगों को बचाना भी केन्द्र तथा राज्य सरकारों की ज़िम्मेदारी है । सर्वोच्च न्यायालय ने इस बारे में भी केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारों को कई बार कहा है कि अनाज को गोदामों या खुले में सड़ाने की बजाय इसे भूखे और ग़रीब लोगों में मुफ़्त बांट देना चाहिए । एक रिपोर्ट में सुप्रीम कोर्ट ने यहां तक कहा है कि भारत जैसे ग़रीब देश में अनाज को बर्बाद करना एक अपराध है परन्तु केन्द्र और राज्य सरकारों को कोई परवाह नहीं ? स्थिति ज्यों की त्यों है ।

एक रिपोर्ट के अनुसार बिहार में 48 में से, उत्तर प्रदेश में 139 में से केवल 38 रैन बसेरे बने हैं और 12 अस्थायी, हरियाणा में 51 में से अधिकांश अस्थायी है । पंजाब, उत्तराखंड और महाराष्ट्र में भी यही स्थिति है । राजस्थान में 95 स्थायी रैन बसेरों की आवश्यकता है । दिल्ली में 42 रैन बसेरे चल रहे हैं, बाक़ी बन्द पड़े हैं । उत्तराखंड की ओर से कुछ भी नहीं बताया गया । जम्मू-कश्मीर सरकार के अनुसार वहां कोई बेघर नहीं ? सर्वोच्च न्यायालय ने लगातार तीसरे वर्ष राज्य सरकारों को यह निर्देश जारी किये हैं कि ठंड से किसी की मौत न हो। न्यायालय ने उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, बिहार, कर्नाटक, केरल, पश्चिमी बंगाल सरकारों को गत वर्ष दिए गए कोर्ट के निर्देशों के बावजूद ग़रीब, बेघर लोगों के लिए पर्याप्त रैन बसेरे न बनाने के लिए फटकार भी लगायी । आंध्र, केरल, कर्नाटक ने तो कोर्ट को ताज़ा स्थिति की जानकारी भी नहीं दी ?

एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली सरकार ने तो कोर्ट में यह कहा कि रैन बसेरे बन्द नहीं पड़े हैं अपितु उनमें रहने वाले कम हो गये हैं ? कोर्ट ने इसको स्वीकार नहीं किया । सर्वोच्च न्यायालय ने उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार, उत्तराखंड, हरियाणा, पंजाब, पश्चिम बंगाल, असम, उड़ीसा, महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु में बेसहारा व निराश्रित लोगों के लिए रैन बसेरों की स्थिति से असंतोष प्रकट किया । क्या यह राज्य सरकारों की ज़िम्मेदारी नहीं है, इससे आप अनुमान लगा सकते हैं कि सर्वोच्च न्यायालय के बार-बार निर्देशों के बावजूद सरकार तथा प्रशासन को भयानक ठंड (और गर्मी) और भूख से पीड़ित लोगों की कितनी चिंता है ?

'लोकपाल' बिल को लेकर लोकसभा और राज्यसभा के दोनों सदनों में लंबी बहस हुई । क्या ऐसी बहस एक पल के लिए भी खुले आसमान के तले पड़े असहायों की ठंड, सर्दी से मरते हुए लोगों की रक्षा के लिए हुई लोगों के भीषण ठंड अथवा भीषण गर्मी अथवा बीमारी से मरने का मुख्य कारण ग़रीबी और भुखमरी है अन्यथा अन्य साधन संपन्न

लोग इस तरह क्यों नहीं मरते ? प्रधानमंत्री के आर्थिक सलाहकार के अनुसार देश में 41.8 प्रतिशत लोग प्रति मास 447 रुपये पर गुज़ारा करते हैं, उनकी दैनिक आय 15 रुपये भी नहीं । यानी 50 प्रतिशत से ऊपर लोग देश में ग़रीब है ।

सेनगुप्ता कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार देश में 83.6 करोड़ लोग प्रतिदिन 20 रुपये भी नहीं ख़र्च कर सकते अर्थात उनकी दैनिक आय 20 रुपये भी नहीं है, क्या 20 रुपये में 83.6 करोड़ लोग अपने शरीर या जीवन की रक्षा कर सकते हैं ?

एक ताज़ा अध्ययन के अनुसार देश में 20 करोड़ लोग रोज़ाना भूखे सोते हैं, जबकि दस हज़ार लोग प्रतिवर्ष भूख के कारण मौत का शिकार होते हैं । भारत में 46.50 प्रतिशत लोग भुखमरी एवं ग़रीबी का शिकार हैं । ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा किये गये एक अध्ययन के अनुसार 121 करोड़ जनता में से 75.60 प्रतिशत लोग ग़रीब है, यानी 82 करोड़ से ऊपर लोग ग़रीबी का शिकार हैं । ग्लोबल हंगर इंडेक्स 2011 के अनुसार विश्व के 100 करोड़ भूखे लोगों में 32 प्रतिशत लोग भारत के हैं ।

इसलिए ठंड के साथ-साथ ग़रीबी, भूख से पीड़ित लोगों को बचाना भी केन्द्र तथा राज्य सरकारों की ज़िम्मेदारी है । सर्वोच्च न्यायालय ने इस बारे में भी केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारों को कई बार कहा है कि अनाज को गोदामों या खुले में सड़ाने की बजाय इसे भूखे और ग़रीब लोगों में मुफ़्त बांट देना चाहिए । एक रिपोर्ट में सुप्रीम कोर्ट ने यहां तक कहा है कि भारत जैसे ग़रीब देश में अनाज को बर्बाद करना एक अपराध है परन्तु केन्द्र और राज्य सरकारों को कोई परवाह नहीं ? स्थिति ज्यों की त्यों है । 19 दिसम्बर 2011 को 'खाद्य सुरक्षा' बिल पेश किया गया । इससे देश के 63.5 प्रतिशत लोगों को सस्ते दामों पर अनाज उपलब्ध कराया जाएगा । स्वयं प्रधानमंत्री और कृषि मंत्री इससे सहमत नहीं थे किंतु यू॰पी॰ए॰ की अध्यक्षा सोनिया गांधी के दबाव में इसे अतिशीघ्रता से पेश किया गया । इसको लागू करने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति चाहिए जिसका कि सरकार के पास अभाव है । इस पर भी 'खाद्य सुरक्षा बिल' को लेकर तरह-तरह के प्रश्न उठाये जा रहे हैं जिनका सरकार के पास कोई उत्तर नहीं है ? जबकि वास्तविकता यह है कि यह वोट की राजनीति है ।

प्रसिद्ध पत्रकार डॉ॰ वेद प्रताप वैदिक ने भी कहा है कि 'ज़रूरतमन्दों को अनाज मिले या न मिले, सरकार को वोट मिलने चाहिए, यही सत्य है, बाक़ी मिथ्या है ।' लोकपाल बिल का अधर में लटकना क्या इस ओर संकेत नहीं करता? यद्यपि प्रधानमंत्री ने नये वर्ष के आरंभ में यह शुभकामना प्रकट की है कि उनकी सरकार जनता के लिए ईमानदारी

Prop : Abid Hussain
09413037652
09252235194

Shop : Mujahid Hussain
09214747172

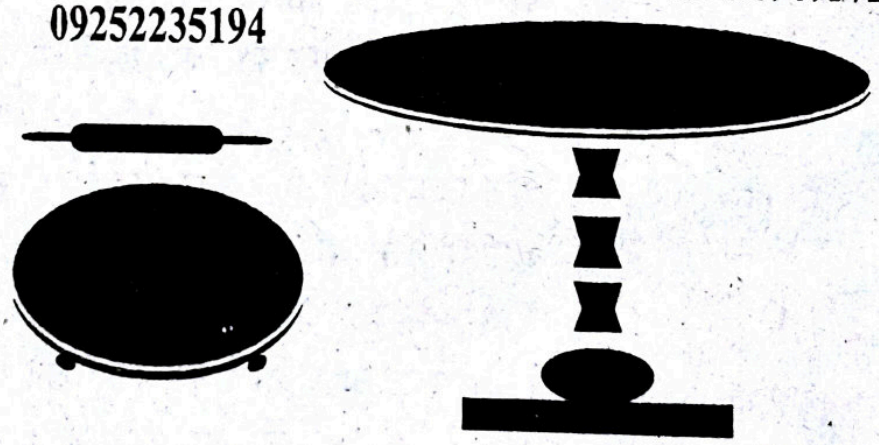

कान्ति मार्बल हैंडीक्राफ्ट

सभी प्रकार के वन पीस और ज्वाइंट पीस चकलों के निर्माता व थोक विक्रेता, मार्बल के फव्वारे तथा टेबल, टेलीफ़ोन स्टेंड, नोजल लैंप, गमले, घड़ी व फैंसी आइटम

Shop : Hotel Moti Mahal, Manglana Road, Makrana-341505
Fact : Bypass Mor, Opp : Sai Kirpa Petrol Pump, Makrana Road, Borawad (Raj.)

से काम करेगी ।

शरीर अथवा जीवन की रक्षा के लिए भोजन, जल, बीमारी में चिकित्सा तथा आवास को संयुक्त राष्ट्र के घोषणा पत्र (1995) में जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं बताया गया है, इनके अभाव का नाम ग़रीबी है । देश के 82 से 84 करोड़ लोगों के पास इन मूलभूत ज़रूरतों का अभाव है, क्योंकि उपरोक्त सेन गुप्ता कमेटी के अनुसार उनकी दैनिक आय 20 रुपये भी नहीं । योजना आयोग के अनुसार 32 रुपये भी हो जाए अथवा 50 रुपये भी रोज़ाना हो जाए तब भी गुज़ारा कठिन है । ऐसे में इनकी जीवन की रक्षा किसके ज़िम्मे है ? सरकार अथवा स्वयंसेवी संगठनों के ? इन ज़रूरतों के अभाव में सैकड़ों लोग मर रहे हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी यह ग़रीबी चलती रहती है । इनके बच्चों को शिक्षा आदि की बात तो दूर है ?

मैं अपने ज़िला शहर करनाल की आंखों देखी बात करूं तो यहां 20 लाख से ऊपर लोग झुग्गी झोंपड़ियों में जीवन काट रहे हैं । केवल एक-दो सेक्टरों में स्थित झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले 8-10 व्यक्तियों महिलाओं, बच्चों तथा पुरुषों की मौत हो गयी क्योंकि उनके पास चिकित्सा के लिए पैसा नहीं था । दो के पास तो पत्नी की मौत पर कफ़न के लिए भी पैसा नहीं था ।

पिछले वर्ष एक की बालिका मर गई, खुद की चिकित्सा के लिए बिहार जाते-जाते गाड़ी में, रास्ते में ही मौत हो गयी । एक ग़रीब की बालिका ज़िन्दा जल गयी ? यहां 14 सेक्टर और सब्ज़ी मंडी के तीन तिराहे पर गन्दे नाले के ऊपर सीलन, गन्दगी और बदबू में लोग जीवन बिता रहे हैं । शहर का विकास जारी है, यहां नूरमहल होटल की रौनक़ है परंतु इन वंचितों, पीड़ितों, ग़रीबों की स्थिति को कौन बदलेगा ? ज़िला प्रशासन तथा संबद्ध राज्य सरकारों को अपने-अपने ज़िले की सुध लेनी होगी ।

अपने देश भारत में संसाधनों की कमी नहीं है । 400-500 लाख करोड़ काला धन विदेशों में जमा है । परन्तु भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने की ज़रूरत है, अन्ना के आन्दोलन का भी लक्ष्य है । तभी जाकर देश में जन-जन का, गरीबों और वंचितों, अभावग्रस्तों का जीवन सुरक्षित हो सकता है ।



इस्लाम में नैतिकता की अवधारणा

❖ हमूदा अब्दलती

इस्लाम में नैतिकता की धारणा कुछ मौलिक विश्वासों (अक़ीदों) और सिद्धांतों के चारों ओर घूमती है । इनमें से कुछ इस प्रकार हैं–

1. अल्लाह ही पैदा करने वाला है और वही भलाई, सच्चाई, और सौंदर्य का उद्‌गम है ।

2. इन्सान अपने पैदा करने वाले का ज़िम्मेदार, प्रतिष्ठित और आदरणीय ख़लीफ़ा है ।

3. अल्लाह ने आसमान और ज़मीन की हर चीज़ को मानवजाति की सेवा पर लगा दिया है ।

4. अपनी कृपा और बुद्धिमत्ता से अल्लाह इन्सान से किसी असंभव की आशा नहीं रखता, न ही वह उसके सामर्थ्य से अधिक पर पूछताछ करेगा, न ही अल्लाह इन्सान को दुनिया की अच्छी चीज़ से आनन्दित होने से रोकता है ।

5. संयम, व्यावहारिकता और संतुलन, सत्यनिष्ठा और स्वस्थ नैतिकता की ज़मानतें हैं ।

6. सिद्धांत में हर चीज़ की अनुमति है, अलावा इसके कि जिसका अपनाना अनिवार्य है, उसे अपनाना चाहिए और जिससे रोक दिया गया है, उससे रुक जाना चाहिए ।

7. अंत में मनुष्य अल्लाह के सामने जवाबदेह है और उसका महान लक्ष्य यही है कि वह अपने पैदा करने वाले की प्रसन्नता प्राप्त कर ले ।

इस्लाम में नैतिकता का फैलाव तो असीम है, अपार है और व्यापक भी है । इस्लामी आचार-शास्त्र इन्सान और अल्लाह के संबंधों पर भी विचार करता है, इन्सान और इन्सान के संबंधों पर भी विचार करता है, इन्सान और दूसरी रचनाओं के संबंधों पर भी विचार करता है और इन्सान और उसके अपने अन्तर के संबंधों पर भी विचार करता है, इसी लिए हर मुसलमान को अपने बाहरी व्यवहार, अपने प्रत्यक्ष कार्यों, अपने शब्दों, अपने विचारों, अपनी भावनाओं और अपने रुझानों की देखभाल और निगरानी करनी पड़ती है । दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि एक मुसलमान, जो

इस्लाम में नैतिकता का फैलाव तो असीम है, अपार है और व्यापक भी है । इस्लामी आचार-शास्त्र इन्सान और अल्लाह के संबंधों पर भी विचार करता है, इन्सान और इन्सान के संबंधों पर भी विचार करता है, इन्सान और दूसरी रचनाओं के संबंधों पर भी विचार करता है और इन्सान और उसके अपने अन्तर के संबंधों पर भी विचार करता है, इसी लिए हर मुसलमान को अपने बाहरी व्यवहार, अपने प्रत्यक्ष कार्यों, अपने शब्दों, अपने विचारों, अपनी भावनाओं और अपने रुझानों की देखभाल और निगरानी करनी पड़ती है ।

सही है, उसका पक्ष लेता है, जो ग़लत है, उसका मुक़ाबला करता है, मालूम करता है कि क्या सत्य है, छोड़ देता है उसे, जो असत्य है, प्रसन्न होता है उससे जो सुन्दर और कुशलता प्राप्त है, नज़रअंदाज़ करता है उसे जो कुरूप और बेकार है । सत्य और सद्‌गुण ही उसका लक्ष्य है । विनम्रता, सरलता, दया और प्रेम उसका सवभाव है ।

दूसरे यह कि अल्लाह ने अपने तौर पर यह तय कर लिया है कि वह दया का शासन चलाएगा । अगर कोई अनजाने में कोई ग़लती कर बैठता है, लेकिन उसके बाद पश्चाताप करता है, अपने आचरण को सुधार लेता है, तो उसे निश्चित रूप से माफ़ कर दिया जाएगा । अल्लाह तो अति दयावान और क्षमाशील है–

'और जब तुम्हारे पास वे लोग आएं, जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं तो कहो, तुम पर सलाम है ! तुम्हारे पालनहार ने दयालुता को अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है कि तुम में जो कोई नादानी से कोई बुराई कर बैठे, फिर तौबा कर ले और सुधर जाए तो निस्संदेह अल्लाह बड़ा

इस्लाम में नैतिकता की अवधारणा

इस्लाम यह शिक्षा देता है कि अल्लाह की नज़र में तमाम लोग समान हैं, लेकिन ज़रूरी नहीं कि सभी 'समरूप' हों। योग्यताओं का, क्षमताओं का, भावनाओं का, धन-दौलत का और इसी तरह की दूसरी चीज़ों का अन्तर हो सकता है और होता रहता है। इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार, इन आधारों पर किसी भी व्यक्ति, जाति या वर्ण को यह अधिकार नहीं पहुंचता कि वह किसी और पर अपनी श्रेष्ठता स्थापित करे।

क्षमाशील और दया करने वाला है।' (अल-अनआम : 54)

कुरआन मजीद ने एक विशेष स्थान पर स्वस्थ नैतिक आचरण के दर्शन का उल्लेख इस प्रकार किया है–

'ऐ आदम की संतान ! इबादत के हर अवसर पर अपनी शोभा को धारण कर लो और खाओ-पिओ, परन्तु हद से आगे न बढ़ो। निस्संदेह अल्लाह आचरणहीन लोगों से प्रेम नहीं करता। कहो : अल्लाह की उस शोभा को जो उसने अपने बन्दों के लिए निकाली है और रोज़ी की अच्छी चीज़ों को किसने हराम कर दिया है ? कह दो, ये सांसारिक जीवन में भी ईमान लाने वाले लोगों के लिए हैं और क़ियामत के दिन तो केवल उन्हीं के लिए होंगी। इसी तरह हम आयतों को उन लोगों के लिए खोल-खोल कर बयान करते हैं जो ज्ञान रखने वाले हैं। कह दो : मेरे पालनहार ने जो चीज़ें हराम की हैं, वे तो ये हैं : अश्लील कर्म–जो उनमें से खुले हुए हों वे भी और जो छिपे हुए हों, वे भी–और गुनाह, नाहक़ की ज़्यादती और यह बात कि तुम अल्लाह के साथ किसी को शरीक करो जिसके लिए उसने कोई सनद नहीं उतारी और यह कि अल्लाह से संबंध लगाकर ऐसी बात कहो जिसके बारे में तुम्हें कोई ज्ञान न हो।'

(अल-आराफ़ : 31-32)

इस्लाम में नैतिकता का आयाम इतना विस्तृत है कि इसमें एक ही समय में अल्लाह में आस्था भी शामिल है और धार्मिक संस्कार, आध्यात्मिक विधियां, सामाजिक व्यवहार, शिष्टाचार, मानसिक अनुसरण, आदत, बोलने का तरीक़ा, यहां तक कि मानव-जीवन के तमाम पहलू शामिल हैं। इसलिए कि नैतिकता इस्लाम का ऐसा अटूट अंग है कि कुरआन में जगह-जगह यही स्वर प्रस्फुटित होता है और इस पवित्र ग्रंथ में बहुत-से प्रसंगों में इस पर पूरा ज़ोर दिया गया है। इसी से उस समय बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है, जब कुरआन के उद्धरणों के आधार पर इन नैतिक शिक्षाओं का वर्गीकरण करने की ज़रूरत सामने आती है। विभिन्न प्रसंगों में एक-एक सिद्धांत का कई-कई बार उल्लेख हुआ है। कहीं इसे एक ही प्रमुख सिद्धांत के रूप में पेश किया गया है, कहीं नैतिकता की समग्र व्यवस्था की झलक मिलती है, जो अपने आप में स्वयं संपूर्ण धार्मिक व्यवस्था का एक तत्व है।

सच तो यह है कि कोई भी मानव-समाज ऐसा नहीं हो सकता जो शाब्दिक अर्थों में स्वतंत्र हो। हर एक की कुछ सीमाएं और मर्यादाएं रहती हैं, चाहे एक प्रकार की हों या दूसरी, अगर समाज चाहता है कि वह सबके लिए कुछ करे।

इसके बावजूद अल्लाह स्वतंत्रता का पाठ पढ़ाता है, इसे बढ़ावा देता है, और मुसलमानों और ग़ैर-मुस्लिमों दोनों के लिए इसकी गारंटी देता है। स्वतंत्रता की इस्लामी धारणा ज़िन्दगी के हर पहलू को ऐच्छिक गतिविधियों पर भी लागू होती है। जैसा कि पहले स्पष्ट किया जा चुका है, हर व्यक्ति अपनी प्रकृति पर स्वतंत्र पैदा होता है। इसका अर्थ यह हुआ कि इन्सान किसी की दासता, गुनाह, नस्ली हीनता और पैतृक बाधाओं से मुक्त पैदा हुआ है। स्वतंत्रता का

उसका अधिकार उसी समय तक पवित्र रहता है जबकि वह अल्लाह के क़ाननों को जान-बूझकर तोड़ता नहीं या दूसरों के अधिकारों को अपवित्र नहीं करता ।

इस्लाम के उद्देश्यों में से एक सबसे बड़ा उद्देश्य यह है कि वह मन को अंधविश्वासों और रूढ़िताओं से मुक्त करना चाहता है, आत्मा को गुनाह और भ्रष्टाचार के कामों से मुक्त करना चाहता है, चेतना का दबाव और डर से मुक्त करना चाहता है और शरीर को अव्यवस्था और विकार से मुक्त करना चाहता है ।

इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अल्लाह ने जिस रास्ते को अपनाया है, उसके अनिवार्य अंग हैं–गंभीर बौद्धिक यत्न, स्थायी आध्यात्मिक अवलोकन, नैतिक नियमों का बंधन, यहां तक कि दैनिक आहार विधान, जब इन्सान इस रास्ते पर चलता है, तो धार्मिक दृष्टि से वह अपने स्वतंत्रता के और मुक्ति के लक्ष्य को प्राप्त करने में नाकामयाब नहीं हो सकता ।

इस्लाम तो स्वतंत्रता के प्रश्न को अक़ीदे (आस्था), इबादत (उपासना) और चेतना से जोड़कर उसके महत्व को बढ़ावा देता है । हर इन्सान को इसका अधिकार प्राप्त है जो चाहे अक़ीदा (विश्वास) रखे, जो चाहे उपासना पद्धति अपनाये । क़ुरआन के शब्दों में–

'दीन (धर्म) के बारे में कोई ज़बरदस्ती नहीं । सही बात नासमझी की बात से अलग होकर बिल्कुल सामने आ गयी है । अब जो 'ताग़ूत' को ठुकरा दे और अल्लाह पर ईमान ले आये, उसने मज़बूत सहारा थाम लिया, जो कभी टूटने का नहीं और अल्लाह सुनने और जानने वाला है ।'

(अल-बक़रा : 256)

इस्लाम का दृष्टिकोण इसी लिए है कि धर्म आधारित होता है विश्वास पर, इच्छा पर और वचन और निश्चय पर । अगर धर्म को ताक़त से थोपा जाए या धर्म के लिए ज़बरदस्ती की जाए, तो इन बातों का कोई अर्थ बाक़ी नहीं रहता है ।

इसके अलावा इस्लाम अल्लाह की भेजी हुई सच्चाई सामने रख देता है और इन्सान पर छोड़ देता है कि वह इसे ग्रहण करे या छोड़ दे । क़ुरआन में है–

'और कह दो कि यह सत्य है तुम्हारे पालनहार की ओर से । अब जो कोई चाहे, मान ले और जो कोई चाहे इन्कार कर दे ।' (अल-कह्फ़ : 29)

स्वतंत्रता की इस्लामी धारणा अक़ीदे की बुनियाद है, महान रचयिता का सुस्पष्ट आदेश है । इसके नीचे लिखे मूलाधार ध्यान देने योग्य हैं–

1. एक, यह कि मानव-चेतना अल्लाह की प्रदत्त वस्तु है, इसलिए वह उसके सामने उसका जवाबदेह है ।

2. दूसरे यह कि हर इन्सान निजी तौर पर अपने तमाम कामों का ज़िम्मेदार है और जैसा करेगा, वैसा ही उसे भोगना पड़ेगा ।

3. तीसरे, यह कि अल्लाह ने इन्सान को यह अधिकार दिया है कि वह अपने बारे में ख़ुद तय करे और उसकी ज़िम्मेदारी क़बूल करे ।

4. चौथे, यह कि इन्सान को आध्यात्मिक मार्गदर्शन और सूझ-बूझ देकर इस योग्य बना दिया गया है कि वह अपने हर-हर काम की ज़िम्मेदारी ले सके ।

यह है स्वतंत्रता की इस्लामी धारणा की बुनियाद और यह है इस्लाम में स्वतंत्रता का मूल्य । यह इन्सान का जन्मसिद्ध अधिकार है, आध्यात्मिक प्रतिष्ठा है, नैतिक विशेषाधिकार है और इन सब से बढ़कर एक धार्मिक कर्तव्य है ।

स्वतंत्रता की इस्लामी धारणा के इस ढांचे में धार्मिक अत्याचार, वर्गीय संघर्ष या नस्ली विद्वेष तथा पक्षपात की कोई गुंजाइश बाक़ी नहीं रहती । हर व्यक्ति का स्वतंत्रता का अधिकार उतना ही पवित्र है, ज़ितना कि उसके जीवन का अधिकार । स्वतंत्रता अपने आप जीवन के समान है ।

समानता की धारणा

इस्लामी नैतिक व्यवस्था की एक बुनियादी बात समानता या इससे बेहतर शब्द 'समदृष्टि' का सिद्धांत है । समानता से न किसी को कोई भ्रम होना चाहिए, न इसे 'समरूपता' और 'रूढ़िवादी औपचारिकता' की संज्ञा देनी चाहिए । इस्लाम यह शिक्षा देता है कि अल्लाह की नज़र में तमाम लोग समान हैं, लेकिन ज़रूरी नहीं कि सभी 'समरूप' हों । योग्यताओं का, क्षमताओं का, भावनाओं का, धन-दौलत का और इसी तरह की दूसरी चीज़ों का अन्तर हो सकता है और होता रहता है । इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार, इन आधारों पर

किसी भी व्यक्ति, जाति या वर्ण को यह अधिकार नहीं पहुंचता कि वह किसी और पर अपनी श्रेष्ठता स्थापित करे। इन्सान का अपना भंडार, अपनी चमड़ी का रंग, अपनी दौलत जो उसके पास है और प्रतिष्ठा और आदर जो उसे मिला हुआ है, ये तमाम चीज़ें किसी व्यक्ति के आचरण में और उसके व्यक्तित्व में किसी प्रकार की कोई विशिष्टता नहीं पैदा करतीं। अगर किसी विशिष्टता का कोई आधार हो सकता है, तो वह है उसका संयम, ईशभय, नेकी, भलाई और आध्यात्मिक उत्कृष्टता। कुरआन में है–

'ऐ लोगो ! हम ने तुम्हें पैदा किया एक पुरुष और स्त्री से और तुम्हारी बहुत-सी जातियां और वंश बनाए ताकि तुम एक-दूसरे को पहचान सको। अल्लाह के यहां तुम में सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह है, जो तुम में सबसे अधिक डर रखता है। निस्संदेह अल्लाह जानने वाला और ख़बर रखने वाला है।' (अल-हुजुरात : 13)

जाति, वर्ण और सामाजिक पद आदि ये सभी आकस्मिक हैं। अल्लाह की निगाह में इन्सान की क्या हैसियत है इस पर इन चीज़ों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यह स्पष्ट रहे कि मूल्य 'समानता' न तो संवैधानिक अधिकार की समस्या है, न किसी सज्जन का कोई समझौता है, न कृपामय दान-पुण्य की कोई बात है। यह अक़ीदे और विश्वास की बात है जिसे मुसलमान गंभीरतापूर्वक स्वीकार करता है, और जिसे संजीदगी के साथ बरतना चाहिए। समानता के इस इस्लामी मूल्य की बुनियाद इस्लामी ढांचे की जड़ों से जा मिलती है। इसका ताल्लुक़ बुनियादी उसूलों से है, जैसे–

1. तमाम इन्सान एक ही हमेशा से और हमेशा रहने वाले सर्वशक्ति मान अल्लाह के पैदा किये हुए हैं।

2. तमाम इन्सान एक ही इन्सानी नस्ल से ताल्लुक़ रखते हैं और सभी एक ही मां-बाप आदम-हव्वा की औलाद हैं।

3. अल्लाह अपनी रचनाओं और पैदा किये हुए जीवों पर मेहरबान और उसके प्रति न्याय करने वाला है। वह किसी जाति, उम्र या धर्म का पक्षधर नहीं है। पूरी सृष्टि उसका राज्य है और तमाम लोग उसी के पैदा किये हुए हैं।

4. तमाम लोग इस अर्थ में समान पैदा किये गये हैं कि कोई भी स्वामित्व लेकर पैदा नहीं होता और सभी इस अर्थ में समान रूप से मरते हैं कि वे अपने साथ दुनिया की कोई भी चीज़ लेकर नहीं जाते।

5. अल्लाह हर व्यक्ति के बारे में उसके अपने कारनामों और उसके अपने कर्मों के आधार पर निर्णय करेगा।

6. अल्लाह ने हर व्यक्ति को, इन्सान के रूप में आदर और प्रतिष्ठा प्रदान कर रखी है।

इस्लाम की समता के मूल्य के पीछे ये हैं कुछ सिद्धांत। अगर इस धारणा का उपयोग पूरी तरह किया जाए,

Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya

The Society is in service in the field of education, health and Islamic Understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities:-

1. **IQRA PUBLIC SCHOOL :** Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Carriculam.
2. **MILLAT HOSPITAL :** Every year about 15,000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.
3. **ISLAMIC INFORMATION CENTRE :** Established at Bodh-Gaya, where lakhs of foreigners visit every year during Nov-March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

Kindly send your Cheque/Draft in favour of the society

(Nayyarruzzama)
Chairman

(Prof. Inamul Huque)
Secretary

JISSS

Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001

तो किसी पक्षपात और किसी तंगनज़री का सवाल ही पैदा नहीं होता और अल्लाह के इस आदेश को पूरी तरह लागू किया जाए तो किसी दमन, अत्याचार का भी सवाल नहीं पैदा होता । फिर सवर्ण-अवर्ण, उन्नत और पिछड़ी जाति, कुलीन, अकुलीन, नागरिक, द्वितीय नागरिक आदि भेदभाव सार्थक बन ही न पाएंगे ।

भाईचारा की धारणा

इस्लामी नैतिक व्यवस्था की एक और बुनियादी बात इन्सानी भाईचारा का मूल्य है । यह मूल्य भी उन्हीं सिद्धांतों पर आधारित है जिनका 'स्वतंत्रता' और 'समानता' में उल्लेख किया गया है । उन सिद्धांतों के अलावा इन्सानी भाईचारा का सिद्धांत अल्लाह के होने और उसके सार्वभौमिक होने के विश्वास (अक़ीदे) पर आधारित है अर्थात अल्लाह जो उपास्य है, एक मानवजाति, जो उपासक है और एक धर्म जो उपासना का माध्यम है–यह है वह त्रिकोण जो भाईचारे को सुदृढ़ बनाता है ।

यही वजह है कि एक मुसलमान अल्लाह को एक मानता है, वह सदा से है, सदा रहेगा, सार्वभौमिक है, वही सबका रचयिता है, सबका पालनहार है, सबके प्रति न्याय करने वाला है और सबका स्वामी है । उसके नज़दीक सामाजिक स्तर, राष्ट्रीय श्रेष्ठता और जातीय प्रमुखता का कोई मूल्य नहीं है । उसके सामने सभी समान हैं और वे सब एक-दूसरे के भाई हैं ।

मुसलमान मानवजाति को एकता को स्वीकारते हैं, इसलिए कि पैदा करने वाला एक है, एक ही मां-बाप की सब सन्तान हैं और सबका अन्जाम भी एक है, सबको उसे अपने मालिक ही की ओर लौट कर जाना है ।

मुसलमान अल्लाह के भेजे हुए एक ही धर्म में विश्वास करते हैं । इसका अर्थ यह है कि अल्लाह अपने धर्म की परिसिमित नहीं करता, न उसे किसी विशेष राष्ट्र से संबद्ध करता है । इसका अर्थ यह भी हुआ कि अल्लाह के भेजे हुए धर्म में न विरोधाभास हो सकता है, न ही कोई बुनियादी मतभेद । जब ये सब बातें उचित रूप से प्रतिपादित हुई हैं, तो किसी गढ़ी श्रेष्ठता या धृष्ट अनन्तता के लिए कोई गुंजाइश बाक़ी नहीं रहती । और जब यह बात मानव-मस्तिष्क में बैठ जाती है तो उसके विचारों का धुंधलापन दूर हो जाता है और इन्सानी भाईचारा की ठोस बुनियाद मिल जाती है । यही कारण है कि मुसलमान इसे मानकर चलता है कि अल्लाह एक है, धर्म एक है, इसी लिए वह यह मानता है कि उसके भेजे हुए दूतों में कोई भेदभाव नहीं किया जा सकता, वे सब सच्चे हैं और एक ही धर्म का आह्वान करते हैं ।

शान्ति की धारणा

इस्लाम शांति की समस्या को कैसे हल करता है, इसे जानने के लिए इस्लाम की कुछ आरंभिक वास्तविकताओं को समझना चाहिए । शांति और इस्लाम दो पर्यायवाची शब्द हैं । शांति अल्लाह का एक नाम भी है । हर मुसलमान की रोज़ की नमाज़ का अंतिम शब्द (जिसके बाद नमाज़ ख़त्म हो जाती है) भी 'अस्सलामु' (शांति) ही है । मुसलमानों का आपस का सलाम भी शांति ही की दुआ है । 'मुस्लिम' विशेषण, एक अर्थ में शांतिमय ही होता है । इस्लाम में जन्नत का जो चित्र है, उसे शांतिस्थली ही कहा जा सकता है ।

यह बात सिद्ध करती है कि इस्लाम में शांति का कितना महत्व है और यह कितनी बुनियादी बात है । वे, जो इस्लाम के वास्ते से अल्लाह तक पहुंचते हैं, अल्लाह से, अपने से और अपने साथियों से शांतिय होने में कभी विफल नहीं हो सकते । अगर लोग तमाम नैतिक मूल्यों को साथ लेकर चलने लगें, इन्सान को उसकी सही हैसियत में, और इस्लामी प्ररिप्रेक्ष्य में जीवन को देखने लगें, तो अच्छे विचारों और अच्छे सिद्धांतों के लोग, अपनी दुनिया को बेहतर दुनिया बनाने में, मानव-प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करने में, सार्वभौमिक भाईचारा बनाने में और शांतिमय वातावरण पैदा करने में कभी नाकामयाब न हों ।

For Information On
City Shops, RoaosQ–Products, Restaurants, Magazine, Schools And much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com

लल्लू

■ नवनीत मिश्र

यह सुनते ही कि वे अभी-अभी कहीं निकल गये हैं, उसे लगा कि थकान, जिसे उसने अभी तक कमर पर साध रखा था, भरभरा कर पिंडलियों में उतर आयी है । वही हुआ जिसकी आशंका थी । यह एक ऐसी धुकधुकी थी, जो हमेशा उसके साथ-साथ चलती है । सड़क के उस सामने वाले मोड़ से यह आशंका उसे या तो तोड़ जाती है या निर्मूल सिद्ध होने पर राहत की सांस देती है । सड़क के सामने वाले उस मोड़ से ही, जहां से उनके गर्व से खड़े घर का तना हुआ सिर दिखायी देने लगता है उनकी उपस्थिति या अनुपस्थिति का पता लग जाता है । एक गहमागहमी, आते-जाते लोगों का तांता, कारों की कतारें–उनके रहते ही तो यह मेला भरता है ।

''वे तो अभी कहीं चले गये'', संतरी ने उसे देखते ही कहा ।

वह न भी बताता तो यहां का सन्नाटा कहता ।

''कुछ पता है कब तक...?'' उसने उखड़ती सांसों पर क़ाबू पाने की कोशिश करते हुए पूछा ।

''अमां, लल्लू ही रहे, किसकी महतारी ने दूध पिलाया है जो उनसे पूछे कि कब तक लौटोगे ?'' संतरी ने कहा और बस ठठाकर हंस पड़े ।

यह संतरी उसके नाम पर ऐसे ही मज़ा लेता है और वह भी उसके इस मज़ाक़ का पूरा-पूरा मज़ा लेता रहा है । 'बिल्कुल लल्लू ही हो क्या !' 'यार, तुम लल्लू ही रहोगे' या फिर 'वाह, क्या लल्लूपने की बात कही है' जैसे फिकरे उछाल कर वह खुश होता है । वह भी कुछ नहीं कहता । लल्लू पांडेय को लल्लू कहा जाए तो चिढ़ना क्या ! मगर इस समय उसे खल गया । एक तो भागा-दौड़ी की थकान, 'वे भी नहीं मिले' और ऊपर से संतरी का बेवक़्त मज़ाक़। वह बिना कोई जवाब दिये अंदर बरामदे में जाकर बैठ गया। गांव से स्टेशन तक के साढ़े तीन किलोमीटर के पैदल रास्ते, ढाई घंटे की ट्रेन यात्रा और फिर स्टेशन से उनके घर तक लगभग दौड़ते हुए आने में लल्लू की सांस फूल तो हमेशा ही जाती है, उखड़ने उस समय लगती है जब वे मिलते नहीं। अंदर बंद कमरे में फ़ोन की घंटी कुछ देर बजती रही, फिर अपने-आप बंद हो गयी. । वे नहीं हैं तो कैसे एक उदासी-सी घिर आयी है यहां । उनके मिल जाने से जैसे कोई खालीपन है, जो भर जाता है । 'वे सबके प्रिय हैं, आदमी को बिना मोल ख़रीद लेना जानते हैं । लल्लू के साधारण से नाम को इतने बड़े और मोहक संदर्भ से जोड़ कर उन्होंने उसे ख़रीद ही तो लिया था । कैसे पहली ही मुलाक़ात में प्यार से बिठाया था, अपनेपन से बात की थी, 'अच्छा-अच्छा, लल्लू पांडे नाम है आपका ?'

'जी'–उसने अपने नाम को लेकर हमेशा की तरह एक हीनभावना-सी महसूस करते हुए जवाब दिया था ।

'इतने धीमे से क्यों बोलते हो? युवक हो, निर्भय रहना सीखो, सीना तान कर बोलो ।'

'जी'–उसने अपने को एकदम हलका महसूस किया था । 'ये कुछ बात हुई । अरे भई, जवान हो, अपनी शक्ति पहचानो । धरती पर ठोकर मार दोगे तो सोते फूट पड़ेंगे । कंचनजंगा पर निगाह रखो, हिमालय तक हंसते-गाते पहुंच जाओगे ।' उन्होंने और भी न जाने क्या-क्या कहा था, इतना कुछ कि उसे तो सारा याद भी नहीं रहा । लल्लू को जैसे उबार लिया था उन्होंने ।

लल्लू गांव से उनके एक गुरुजी का पत्र लेकर आया था । 'उन्होंने पूरे मनयोग से पत्र पढ़ा और जेब में रखकर कहा था, 'आचार्य जी से कहना कि उनकी आज्ञा सिर-माथे । अरे भई, मैं अगर आज कुछ हूं तो इन्हीं गुरुजनों की कृपा से । वे कह-कहकर अभिभूत होते रहे और लल्लू सुन-सुनकर । 'तुम मेरे गुरु भाई हो, मेरे घर के द्वार तुम्हारे लिए हमेशा खुले हैं ।'

'बताओ, मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूं ।' उन्होंने पूछा था ।

'वो सर, मैंने इसी साल बी०ए० किया है, घर में कमाने वाला कोई नहीं, कहीं कोई नौकरी दिलवा दें तो...' लल्लू ने उनके सामने जैसे गदेली फैला दी ।

'भैया, नौकरी की तो बात ही मत करो ।' उन्होंने अपने हिसाब से एक बड़ा मौलिक मज़ाक़ किया ।

'मैं बहुत परेशानी में हूं सर, आचार्य जी ने चिट्ठी देते हुए कहा था कि अगर आप चाहेंगे तो...।'

'मेरे चाहने से क्या होता है–नौकरी की स्थिति तो यह है कि भैया कि एम्मे, पी०एच०डी० मारे-मारे घूम रहे हैं । जाने कहां जाएगा यह मुल्क !' वे चिंता में डूब गये ।

'आचार्य जी ने कहा था', उसने अपनी टेर जारी रखी ।

'आचार्य जी का ज़माना हवा हो गया भैया, अब तो ज़माने को ऐसी आग लगी है कि बस पूछो मत । उन्होंने बिना किसी लाग लपेट के कहा ।

'तो कुछ नहीं हो सकता सर ? उसने नाउम्मीद होते हुए कहा ।

'नहीं भाई बड़ा मुश्किल है । अब मैं तुमसे क्या कहूं, ज़माना इतने गर्त में जा चुका है कि आज किसी से कहूं कि लल्लू पांडे को रख लो तो आदमी पहले सोचेगा कि ज़रूर चार-पांच हज़ार अकेले खा गया होगा और मुझसे फोकट में काम कराना चाहता है । हालत यह है कि इन्सान का इन्सान के साथ हमदर्दी का रिश्ता भी हो सकता है, यह कोई सोच ही नहीं पाता ।' वे ज़माने को गालियां देते रहे ।

'मेरे पास तो बदलने के लिए दूसरा जोड़ा कपड़ा तक नहीं है ।' लल्लू ने सुना तो अचकचा कर रह गया ।

'नहीं-नहीं तुम मेरी बात ठीक से नहीं समझ सके' उन्होंने कहा था ।

'नहीं, मैं समझ गया सर, लेकिन मैं भी बहुत परेशानी में हूं । पिता नहीं हैं, बूढ़ी मां है और ब्याहने लायक़ एक बहन है ।' लल्लू ने आशा का दामन मज़बूती से थामे रखा।

'अच्छा-अच्छा', उन्होंने तब उसकी बात पर कुछ ध्यान दिया । 'उन्नीस की पूरी हो जाएगी इस जनवरी में...एक पैसा पास नहीं, पहाड़ जैसी बहन सिर पर । थोड़ी-बहुत खेती है पर उससे क्या होता जाता-जाता है ।' लल्लू उनके सामने खुलता गया, 'जहां दो वक़्त का खाना भी न हो वहां ज़िन्दगी का एक-एक पल कितना कठिन हो जाता है सर, आप तो सोच ही सकते हैं ।'

'देखो भाई, तुम मिलते रहो । बड़ा दुख हुआ कि तुम इतनी परेशानी में हो, कुछ करूंगा तुम्हारे लिए, कुछ ज़रूर करूंगा ।' उन्होंने आसन बदला और गंहरे सोच में डूब गये। डेढ़-दो बरस पुरानी हो गयी यह बात ।

एक दिन ऐसे ही कहने लगे थे, 'देखो, आजकल लोगों को उनके पूरे नाम से नहीं बल्कि 'एल्फाबेट्स' से पुकारे जाने का फैशन है । जैसे रमेश चंद्र को आर०सी०, दिवाकर प्रकाश को डी०पी०, कृष्ण चंद्र को के०सी०। अब देखो, तुम्हारे लल्लू पांडे का बनता है-'एल०पी०। कहो कैसी रही ?' वे जी खोलकर हंसे थे । उन्होंने कहना जारी रखा, 'देखो, एल०पी० का मतलब है लांग प्लेइंग, लंबे समय तक चलने वाला । लेकिन यह इस शब्द का मोटा-मोटा अर्थ है । इसका जो अर्थ मेरी समझ में आता है, वह है–थोड़े में बहुत । देखो, एक बीस-पच्चीस मिनट के एल०पी० रिकॉर्ड में कितना जीवंत, कितना सुखद संगीत भरा होता है । तुम जैसा हर युवक मुझे एल०पी० जैसा लगता है । स्फूर्तिदायक, जीवन से भरपूर । तो देखो एल०पी०, जीवन में दूसरों को देने के लिए जो लोग कष्ट उठाते हैं, उन्हें ही कुछ मिलता है । एल०पी० पर सुई रखी जाती है, सुई उसकी नसों को छेदती है, फिर भी वह संगीत बिखेरता है, सुख देता है और इसीलिए उसे सहेजा जाता है । तो, यह जो सहेजा जाना है, यही उसकी उपलब्धि है ।' उन्होंने बाक़ायदा उसे एल०पी० के संबोधन से पुकारना भी शुरू कर दिया ।

लल्लू को अपने नाम और उसके अक्षरों की विवेचना सुनकर पहली बार लगा कि किसी ने उसके नाम को सार्थकता प्रदान कर दी है । तभी उन्होंने बेहद आत्मीयता से पूछा था, 'और बताओ एल०पी० कैसा चल रहा है ?'

'वह सर, मेरे बारे में कुछ हो सका क्या ?, लल्लू ने उनको याद दिलाया । 'नहीं, भई इतनी जल्दी कुछ थोड़े ही हो पाता है', उन्होंने उदास होते हुए कहा ।

'बस, आप ज़रा ध्यान रखेंगे तो ज़रूर हो जाएगा,' उसने कहा था । 'क्या नाम है तुम्हारी बहन का ?' उन्होंने अचानक ही पूछा था । 'बिट्टो नाम है उसका', उसने उत्साहित होकर बताया था ।

'बहुत सुंदर नाम है-बिट्टो । ख़ूब प्यारी गुड़िया जैसी, क्यों ?' उन्होंने होंठों के किनारे पिचपिचा आये थूक की सफ़ेद पुटकियों को जीभ से चाटते हुए पूछा ।

'जी सर, सुंदर है, बहुत सुंदर । मगर जहां कहीं शादी की बात चलती है वहां सुंदरता कोई नहीं देखता, हमारी ग़रीबी लोग पहले देख लेते हैं ।

'इस देश की नारी का एक ही भविष्य है, शादी करे और बच्चे पैदा करे-उफ़, एल०पी०, कितना क्रूर है यह !'

उन्होंने उत्तेजना में कहा ।

'आम आदमी के यहां इससे आगे बढ़कर और सोचा भी कहां तक जा सकता है सर', लल्लू ने उनसे कहा ।

'नहीं, बिट्टो को घर से बाहर निकालो, उसे एक सही जीवन जीने का पूरा हक़ दो ।

'वह तो सर, बाद की बात है, पहले मुझे तो कहीं नौकरी मिले !' लल्लू ने उनकी बात को किनारे करते हुए कहा ।

'सोचना मेरी बात को और बताना कि तुम मेरी बात से कहां तक सहमत हो । मैं जानता हूं कि एक दिन तुम मेरी बात से सौ फ़ीसदी सहमत होगे ।'

'तो सर, मेरे लिए कुछ करेंगे ?' लल्लू ने बिखर गयी बात के सूत्रों को फिर से सहेजते हुए पूछा ।

'अरे, ऐसे क्यों पूछते हो? तुम ऐसा करो–पता लगाओ कहीं जगह हो तो बताओ । मिलेगी, नौकरी क्यों नहीं मिलेगी? और हुक्म करो–' उन्होंने एल०पी० पर धौल जमाते हुए कहा ।

'बस जी, तीन-चार सौ की भी हो जाए तो बहुत है ।' उसने उनके 'और हुकुम करो' से भीगते हुए कहा ।

'अब कुछ बात कहो, जाओ और पता लगाओ । आगे का काम मेरा है । वह एक आंख दबाकर ज़ोर से हंसे और हंसते रहे ।

पिछली कई बार न जाने क्यों ऐसा हुआ है कि लल्लू ने ख़ाली जगहों के बारे में दौड़-धूप करके उन्हें सूचना दी है और वे जगहें किन्हीं और लोगों को मिल गयीं । वह मुंह सुखाये उनके सामने जब-जब पहुंचा है, उन्होंने कहा, 'असफलता बताती है कि प्रयास में कहीं कमी थी ।' एक बार एक धांधली की शिकायत करने पर उन्होंने कहा था, 'शिकायत करने वाला हमेशा ओछा होता है एल०पी०, शिकायत करके तुम उस आदमी को अपने से बड़ा मान लेते हो, जिसकी तुम शिकायत कर रहे हो, इसलिए शिकायत मत करो, ऊपर भी तो कोई है, जो सही और ग़लत देखता है । शिकायत करके तुम उसके प्रति अविश्वास ही प्रकट करते हो । वह जानता है कि उसकी अपार करुणा का सही हक़दार कौन है । और फिर तुम अगर शिकायत करने बैठ जाओगे तो सारी ऊर्जा शिकायत करने में ही नष्ट कर दोगे। इससे तुम्हारे प्रयासों में कमी आएगी, और जब प्रयासों में ही कमी है तो सुखद परिणामों की उम्मीद कैसे कर सकोगे ?'

लेकिन सर, अन्याय होते देखकर भी शिकायत न करूं, ऐसी सहनशीलता कहां से लाऊं ।' लल्लू ने लगभग रोते हुए कहा ।

'अन्याय कहां नहीं है एल०पी०', उन्होंने कहा था, 'मुझे ही देखो ! कहां होना था मुझे कहां पड़ा हूं । क्या यह अन्याय नहीं है ? क्या हमें कभी सुना है शिकायत करते ? आज मेरी एक बात गांठ बांध लो–जीवन है तो दुख भी होंगे–यही नियति है । इसमें शिकायत कैसी ! वैसे तुम कहो, क्या शिकायत है तुम्हारी ?

'आपने फ़ोन कर दिया था फिर भी वह जगह किसी और को दे दी गयी', लल्लू ने कहा ।

'हम पता करेंगे कि यह कैसे हुआ, तुम परेशान न हो। आज का यही संघर्ष तुम्हारे अंदर निखार लाएगा । जो जेठ की दोपहरी में तपते हैं वही तो सावन बनकर बरसते हैं ।' उन्होंने उसकी पीठ सहलाते हुए कहा था ।

'आज बिट्टो बहुत रोयेगी, सर! उसे बड़ी उम्मीद थी।' लल्लू ने रुंधे गले से कहा ।

'बिट्टो को मेरा बहुत सारा प्यार देना और कहना कि मैंने कहा है कि उसे परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं है ।' उनकी आंखों में फागुन फिर उमड़ने लगा ।

'मेरा भाग्य ही ख़राब है, सर !' लल्लू ने उठते हुए कहा ।

'बैठो-बैठो, कहां जा रहे हो ? इतनी जल्दी हताश हो जाओगे तो कैसे चलेगा ! वैसे बिट्टो कहां तक पढ़ी है ?' उन्होंने कारोबारी ढंग से पूछा ।

'उसकी क्या पढ़ायी-लिखायी, सर, आठवीं फेल है ।'

'देखेंगे, कहीं देखेंगे भई-ज़रूर देखेंगे ।' उन्होंने निश्चयात्मक ढंग से सिर हिलाया और कुर्सी को पिछे की ओर धकेल, अधलेटे हो गये ।

उनसे मिलना लल्लू को किसी सुंदर किताब पढ़ने जैसा लगता है । उनसे मिलकर उसे एहसास होता है कि वे एक ग्रंथ हैं, जिसमें उसकी सारी तुच्छ समस्याओं के विराट समाधान भरे पड़े हैं । अभिभूत-सा लल्लू ठगा-सा रह जाता है कि कहां से पाया होगा उन्होंने इतना ज्ञान ? उसे लगता है कि उनके सामने तो बौने बनकर खड़े रहना भी सौभाग्य की बात है । उनके घर के छोटे-छोटे काम करके उसे लगता है जैसे वह गुरुदाय का कुछ अंश इस तरह सेवा करके चुकाने का प्रयास कर रहा है । लल्लू को लगता रहता

है कि वह अब पहले जैसा दरिद्र नहीं रह गया है । उसके पास ख़ज़ाना है, विचारों का ख़ज़ाना, जो उन्होंने उसे मुफ़्त ही दे डाला है।

उस दिन शाम की गाड़ी छूट गयी थी । उसके बाद आधी रात के बाद की ही ट्रेन थी, नौ घंटे बाद । लल्लू को पछतावा हो रहा था कि मालूम होता कि शाम की ट्रेन छूट जाएगी तो प्लेटफॉर्म पर टहल-टहल कर टोगें दुखाने के बजाय उनके साथ का सुख ही उठाता । उनके साथ हर पल कुछ मिलता ही है—ऐसा कुछ जो अमूल्य है, जो हर कोई दे भी नहीं सकता, उन जैसा उदारमान ही इस तरह लुटा सकता है । एक बार उनकी बिटिया की वर्षगांठ पर हुई दावत में एक रात उनके घर पर ही रुकना हुआ था । वह उनके घर का काम है, इस बात ने काम की थकन जैसे पता ही नहीं चलने दी । कितनी बड़ी बात कह गये थे बातों-बातों में, 'यह वर्षगांठ क्या है एल॰पी॰, कोई खुशी मनाने की बात है ! इतना समारोह क्यों, ये पचासों पकवान, ये जश्न, ये सैकड़ों लोगों की दावत क्यों ? लोग इतना भी नहीं जानते कि हम मौत के हर साल और क़रीब होते जाते हैं । मगर है, मनाते हैं वर्षगांठ, भई मनाओ । मैंने तो अपने जीवन का सिद्धांत बना लिया है कि अपने विचार किसी पर लाइदूंगा नहीं, इसलिए ठीक है—साथ देता हूं', उन्होंने निरपेक्ष भाव से कहा था ।

ट्रेन की प्रतीक्षा हो या यात्रा, सारे समय वे साथ-साथ ही रहते हैं । बोलते-बतियाते, 'योगक्षेम वयाम्हम' की तरह घेरे हुए, जैसे बुझने से बचाने की कोशिश में । लेकिन अम्मां हैं कि इस बात में रसाघात करती हैं । शहर से जब भी वह वापस पहुंचता है तो अम्मां के 'आजु का कहिन ?' पूछते ही भन्ना उठता है । अम्मां का रोज़-रोज़ यह पूछना उसे बड़ा घटिया लगता है । एक बार तो वह उबल ही पड़ा, 'उन्होंने कहा तो है कि मेरे लिए वे चिंतित हैं, मौक़ा मिलते ही कुछ-न-कुछ करेंगे, फिर बार-बार क्या वही सवाल?' फिर उसने अम्मां को बताया था, 'अरे, लोगों की लाइन लगी रहती है उनसे मिलने के लिए । बैठे रहते हैं सवेरे से शाम तक, फिर भी ज़रूरी नहीं कि भेंट हो ही जाए । अभी आये हैं, पता लगा कि फिर सवारी तैयार है । इतना काम-इतना काम कि मरने की भी फुरसत नहीं ।' मगर अम्मां इस सारे विवरण को एक वाक्य में किनारे कर देती हैं—'भइया, अंधा तब पतियावै जब आंखिन देखै ।'

'कैसे इतना काम कर लेते हैं आप, सर ?' एक दिन लल्लू ने पूछा था । उन्होंने रहस्य-सा खोलते हुए कहा था ?' 'कर्म को सिर्फ़ कर्म के रूप में देखोगे तो थकान नहीं आएगी । जहां कर्म के बदले हिसाब लगाने लगोगे कि इसके बदले में मिला क्या, वहीं थकान तुमको धर दबोचेगी ।'

उसी दिन लल्लू को शर्मिंदगी-सी महसूस हुई थी कि वह गांव से शहर तक दौड़ कर आने और उनके छोटे-मोटे काम कर देने के पीछे आज तक 'इससे मुझे क्या मिलने वाला है ?' के क्षुद्र स्वार्थों का हिसाब ही लगाता आया है। उसी दिन उन्होंने उसके कानों में जैसे शंखनाद-सा किया था, उसी दिन लल्लू को उनकी सफलता की कुंजी पता लगी थी—और वह थी—खुलेपन से कर्म करते जाने की एकाग्र भावना । उस दिन बोले थे, 'लोगों को अपनी पुरानी सड़ी हुई मानसिकता को बदलना चाहिए । वह ज़माना चला गया एल॰पी॰, जब लड़की को पैदा होते ही चारपाई के पाये तले दबा कर मार दिया जाता था । आज लड़कियां पायलट हैं, पुलिस अधिकारी हैं, पुरुषों के कंधे से कंधा मिला कर आगे से आगे हैं ।'

'हां सर, लेकिन अभी ऐसी लड़कियों का प्रतिशत बहुत कम है', लल्लू ने दबी आवाज़ में कहा ।

'लेकिन इस प्रतिशत को बढ़ाएगा कौन ? कोई ऊपर से तो आएगा नहीं, तुम्हें ही आगे आना होगा, तुम को ही इस आंदोलन में नारी-जागरण के महायज्ञ का सूत्रधार बनना होगा', वे जांघ पर मुक्का मारते हुए बोले ।'

'लेकिन सर...' उसने कहना चाहा ।

'लेकिन क्या—' वे बात काटते हुए बोले, 'स्त्री को अपना गुलाम बनाकर रखने की युगों से चली आ रही आदत को पुरुष छोड़ना नहीं चाहता । इसीलिए तुमसे बार-बार कहता हूं कि बिट्टो को लाओ, उसे बाहर की दुनिया देखने का मौक़ा दो । हज़ार-पांच सौ हर महीने लेकर जाएगी तो घर भी चलेगा और उसमें आत्मविश्वास भी आएगा । एक नारी के अमूल्य जीवन को यूं ही गंवा देने का मतलब समझते हो एल॰पी॰ ? एक पूरी नस्ल, एक पूरी पीढ़ी को पैरों तले रौंद कर नष्ट कर देना-उफ़, कितना जघन्य, कितना क्रूर है सब कुछ !' उन्होंने सिर झटकाते हुए कहा ।

'मगर सर, मां के संस्कारी मन को समझाना कि उनकी बिटिया काम करेगी, कितना कठिन है, आप गांवों में पली, बूढ़ी औरतों की मानसिकता नहीं जानते ।'

'जानता हूं एल०पी०, जानता हूं । शुरू में ऐसा होना स्वाभाविक भी है, ठीक कहते हो तुम, मगर फिर आदमी ही है जो समय के साथ बदलता है, समझौता करता है ।'

'लेकिन सर, मैं ग्रेजुएट होकर भटक रहा हूं, आठवीं फेल बिट्टो को क्या काम मिल पायेगा?' लल्लू ने अविश्वास से कहा ।

'वह सब तुम मुझ पर छोड़ दो । बस तुम्हारा काम इतना है कि तुम बिट्टो को मेरे पास ले आओ ।' उन्होंने कहा और लल्लू का हाथ अपने हाथ में ले कर दबाने लगे ।

मगर वह अम्मां को कैसे समझाये कि वे अपने लोगों के लिए कितना कुछ सोचते हैं । वह जानता है कि बिट्टो के काम करने की बात सुनने भर से फाड़ खायेंगी उसे । कौन समझाये कि उनके निकट से निकटवाला आदमी भी इतना लाभ नहीं पा सकता जितना कि उसे बिना किसी प्रयास के ही मिल सकता है । उसने कई बार कोशिश की कि अम्मां को इस बारे में समझाये, पर हर बार उनके देहातीपन और जड़बुद्धि पर दांत पीस कर रह गया है- 'मरो तुम सब, जब मुक़द्दर में ठोकरें खाना ही लिखा है तो उसे कौन बदल सकता है ।'

उस दिन लल्लू का गांव वापस जाना नहीं हो सका । दिन भर उनका मकान बदला जाता रहा । सबेरे उसे देखकर वे खुशी से जैसे उछल पड़े थे, 'चलो, एल०पी० आ गया, अब कोई चिंता नहीं ।' उन्होंने नये घर की चाबी थमाते हुए कहा था, 'लो एल०पी०, यह लो नये घर की चाबी । वहां सारा सामान लगवाना तुम्हारी ज़िम्मेदारी । देखो, ठेले के साथ ही साथ चलना, ठीक है ? अब मैं निश्चिंत हूं ।'

'आप चिंता न करें, सर !' उसने कहा उनका कितना विश्वास पात्र है ।

दिन भर सामान ठेलों पर लद-लदकर नये घर में जाता रहा । लल्लू भी चिलचिलाती धूप में उनके अपनेपन की ठंडक महसूस करते हुए ठेलों के साथ-साथ चलता रहा । दिन कब बीत गया, पता ही नहीं चला । सामान सहेजते-सहेजते रात गहरा गयी थी, लल्लू की थकान भी वह थकान नहीं थी जो गांव से शहर की भाग-दौड़ के बाद उनसे मुलाक़ात न होने पर पैदा होती है । यह थकान भी तो जैसे कोई सुख देने वाली थी । उन्होंने अपने घर पर ही खाना खिलाया था । सोने के लिए एक चटायी देते हुए कहा था, 'आओ, मेरे नये घर के पहले मेहमान ।' लल्लू रात भर सो नहीं सका । घर की गुलाबी रोशनी देखता रहा । सोचता रहा कि उसका जितना बड़ा पूरा घर है उतने में तो उनकी सिर्फ़ बैठक है । वह लाख झटक कर उड़ाना चाहता मगर गांव की बदसूरत मिट्टी की दीवारें मक्खियों की तरह जैसे उसके घावों पर भिनभिनाती ही रहीं ।

दूसरे दिन सवेरे उन्होंने बुलाकर कहा था, 'एल०पी०, जाओ पुराने घर से फ्रेश होकर आओ, तुम्हें देने के लिए मेरे पास एक सुंदर उपहार है ।' उन्होंने ढेर सारी पत्रिकाएं देते हुए कहा, 'ये लो, तुम्हीं सुपात्र हो ! पढ़ो और गुनो !' कई वर्षों से जमा हो गयी पत्रिकाओं का बोझ बहुत ज़्यादा था । वे फिर बोले थे, 'पढ़ो, पढ़ने से संस्कार बनता है । संस्कृति का, भाषा का, जीवन-दृष्टि का संस्कार, जो सिर्फ़ अध्ययन से बनता है । वैसे तुम्हारे पास भाषा का संस्कार है, यह बात मैं तुम्हारे पहले आवेदन-पत्र को देखकर ही जान गया था । कोई साधारण ग्रेजुएट होता तो लिखता–'भवदीय ।' मगर तुमने लिखा था–'विनयावनंत' अहा ! क्या शब्द है-विनयावनंत ! विनय-भाव जैसे साक्षात उपस्थित हो गया हो-करबद्ध । जिओ ! शब्द का सही प्रयोग कितने लोग जानते हैं ? सही जगह पर सही शब्द तलवार का काम कर सकता है एल०पी० और तुम इस रहस्य को जानते हो, यही बड़ी बात है ।' उन्होंने विदा देते हुए कहा था, 'जाओ, आज गांव चले जाओ । कल शाम मुझसे ज़रूर मिलना । तुम्हें एक अच्छी ख़बर देनी है । मगर आज नहीं, कल शाम को ही । आज दिन में मैं कुछ पक्का हो जाने की उम्मीद रखता हूं । और देखो...' उन्होंने उसके कंधे पर हाथ रख कर कहा था, 'तुमसे जो मदद मुझे मिलती रहती है, उसके लिए धन्यवाद देकर तुम्हें अपने से दूर नहीं करूंगा । तुम अपने हो; और अपने स्नेह के पात्र होते हैं, धन्यवाद के नहीं । जाओ, कल शाम को मिलना ।' लल्लू कुछ बोल ही नहीं पाया । कृतज्ञता से भर उठा उसका मन आंखों से ढुलकने लगा, जिसमें सारा कुछ झिलमिला उठा । दोनों हाथों में पत्रिकाओं के गट्ठर उठाये वह परों से भी हलका, उड़ता-सा निकल गया ।

और आज उसे जैसे ही बताया गया कि वे अभी-अभी कहीं निकल गये हैं, उसे लगा कि थकान, जिसे उसने अभी तक कमर पर साध रखा था, भरभरा कर पिंडलियों में उतर आयी है । किससे पूछे कि उसके नाम कोई संदेश तो नहीं छोड़ गये हैं ? कौन बताएगा ? वे नहीं हैं तो यहां बैठना भी

कितना असुरक्षित-सा लग रहा है आज । वे न होते तो उसके बेरोज़गारी के घाव कब के जहरबाद से सड़ गये होते, यह तो वे ही थे जो सांत्वना का मरहम लगाते रहे, स्नेह के नर्म फाहों से उसके ज़ख़्मों को ढंकते रहे । हर पहली तारीख़ को उसके खुरंड जैसे फिर उखड़ जोते हैं । ट्रेन से रोज़ शहर आकर नौकरी करने वालों की भीड़ वेतन-वृद्धि का हिसाब लगाती है और महंगी भत्ते पर चेमेगुइंया करती है तो उसे लगता है जैसे उस पर 'सड़ाक-सड़ाक' चाबुक फटकारे जा रहे हों । उन्होंने आज शाम एक अच्छी ख़बर देने को कहा था । वह हिसाब लगाने लगा कि देर कहां पर हो गयी ? गांव में तो उसने किसी से बात कत नहीं की, सीधा स्टेशन ही पहुंचा, ट्रेन भी ठीक समय पर आ गयी, फिर देर कहां हो गयी ? उसे लगा कि आज उनके आने की प्रतीक्षा करना एक यंत्रणा भोगना है, मगर सुखद यंत्रणा ।

रात की आख़िरी गाड़ी का समय भी पास आ रहा था । टहलते और बग़ीचे के, अंधेरे में डूबते जा रहे फूल देखते-देखते ही वह उकताने लगा था । जब पैर भरने लगे तो वह संतरी के पास पड़ी बेंच पर पसर गया । पिछली रात की अधूरी नींद कड़वाहट बनकर गड़ रही थी । उनके मकान के चारों ओर अंधेरे की घेराबंदी और कड़ी होती जा रही थी क्योंकि संतरी बेकार जल रही रोशनियों को एक-एक कर के गुल करने लगा था । संतरी उसके पास आकर कुछ देर बातें करता रहा, खाने को पूछा और उसके मना करने पर स्टूल पर ही ऊंघने लगा ।

आख़िर उनकी कार की रोशनी आधी रात का अंधेरा लीलती फाटक के पास आकर रुकी । संतरी अचकचा कर दौड़ा और फाटक खोलकर एक किनारे खड़ा हो गया । वह भी तेज़ क़दमों से चलता हुआ फाटक के पास पहुंचा ।

"कौन, एल०पी०?" उन्होंने कार की खिड़की से थोड़ा झांक कर पूछा । "जी", उसने उत्साहित होकर जवाब दिया । "इस समय ?"

"जी, आपने आज शाम बुलाया था सर, कोई अच्छी ख़बर देने वाले थे आप !"–लल्लू ने पास आकर कहा ।

"ओ हां", उनके मुंह से एक तेज़ भभका उठा और उबकाई लाने के लल्लू के नथुनों में समा गया । "एक अच्छी ख़बर है, देखो लोगों ने अड़ंगे तो बहुत लगाये पर मैंने भी कहा कि नहीं, यह काम तो होना ही है", उन्होंने ड्राइवर की सीट पर मुक्का मारते हुए कहा ।

"जी, मैं कैसे आभार प्रकट करूं ?"

एल०पी० ने उनके पैर छूने के लिए खिड़की के रास्ते हाथ अन्दर डालने की कोशिश की ।

"नहीं, दैन्य मत दिखाओ, किसी के सामने झुको मत, किसी के भी सामने नहीं । यह मेरा कर्तव्य था, मैंने किया", उन्होंने उसके हाथ को बीच में ही रोक लिया ।

"तो मुझे कब से ज्वायन करना है, सर ?" लल्लू ने अपनी फूट पड़ रही ख़ुशी को दबाने की कोशिश करते हुए पूछा ।

"कब से ? अरे, तुमने तो कब का ज्वाइन कर लिया हमें । अगर महीने की बीस तारीख़ को तुम्हारे गांव का दौरा पक्का करके आया हूं । मैं तुम्हें यह ज़िम्मेदारी सौंपता हूं कि जाओ और गांव के युवकों को एकत्र करो, मुझे उनसे कुछ बातें करनी हैं । अभी एक महीने से ज़्यादा का समय है, रोज़-रोज़ शहर दौड़ कर अपना समय और ऊर्जा नष्ट मत करो, गांव में जनचेतना जगाओ, लोगों को प्रेरित करो कि वह समय के साथ किये जा रहे अपने अक्ष्म्य अपराधों के प्रति जागें, उनको बताओ कि समय का इतिहास क्षमा करना नहीं जानता ।" उन्होंने ड्राइवर को चलने के लिए टहोका मारा।

आवश्यकता है

'कान्ति' साप्ताहिक व मासिक के लिए एक ऐसे मार्केटिंग एग्ज़िक्यूटिव (Marketing Executive) की आवश्यकता है, जो देश भर से इश्तिहार प्राप्ति और ख़रीदार बनाने का काम कर सके ।

शैक्षिक योग्यता : कम से कम 10+2 और हिन्दी, उर्दू व अंग्रेज़ी की जानकारी ।

अपने हाथ से लिखा हुआ आवेदन पत्र, ताज़ा फ़ोटो, सम्पर्क के लिए मोबाइल नम्बर और प्रमाण पत्रों की फ़ोटो कॉपी के साथ इस प्रकार भेजें कि वह 15 जनवरी 2013 ई० तक प्राप्त हो जाए । वेतन योग्यतानुसार दिया जाएगा ।

सेक्रेट्री : दावत ट्रस्ट

डी०-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, ओखला, नयी दिल्ली-110 025

ई मेल : dawattrust@yahoo.co.in

आडम्बर एवं पाखंड

■ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

ईशभक्ति अब भक्ति न रही, दिखावा और प्रदर्शन बन गयी है.....इनमें जो आगे है, वही सफल है ?! वास्तव में यह स्थिति बड़ी गंभीर है कि जीवन में दिखावा, आडम्बर और पाखंड हो.....और वह भी ईशभक्ति जैसे जीवन के नितांत महत्वपूर्ण पक्ष के प्रति !!! ईशभक्ति तो जीवनामृत है, इसमें दिखावा कैसा ? श्रीमद भागवत (6-12-22) में है–

यस्य भक्तिर्भगवति हरौ निहश्रेयसेश्वरे,
विक्रीड्तो अमृताम्भोधौ किं क्षुद्रै : खातकोदकै।

अर्थात, जो परम कल्याण के स्वामी ईश्वर की भक्ति करता है, वह समुद्र के अमृत में क्रीड़ा करता है । गढैया में भरे हुए मामूली गंदे जल के समान किसी भी भोग में उसका मन चलायमान नहीं होता । (श्री शुकदेव जी ऐसा कहते हैं।)

भक्त तो बस ईश्वर का प्रेम चाहता है । उसी से लौ लगाता है और दिनानुदिन इसमें वृद्धि चाहता है । रामचरित मानस की ये पंक्तियां कितनी प्रासंगिक हैं–

चहौं न सुगति सुमति संपति कछु रिधि-सिधि विपुल बड़ाई,
हेतुरहित अनुरागु रामपद बढ़ू अनुदिन अधिकाई ।

भक्त का मन सदा प्रभु-प्रेम में ऐसा तल्लीन रहता है कि आधे क्षण भर के भी अन्य पदार्थ में नहीं रमता ।

प्रभु-प्रेम सब उपलब्धियों से बढ़कर है । हृदय की सरलता और निर्मलता ईश्वर-ज्योति है । इस ज्योति में ही ईश्वर का मार्ग दीखता है, जो मानवता को कल्याण एवं त्राण की ओर ले जाता है । मानव में बहुगुण भरता है । उसमें प्रेम, दया, क्षमा जैसे उच्च गुण हो जाते हैं, जो मूलत: ईश्वर की ओर ही आकर्षित करते हैं, उसी से लौ लगाने को प्रेरित करते हैं । प्रभु का भय पाप से निवृत्ति करता है और प्रभु-महिमा का गान सत्य-मार्ग का सुगामी बनाता है । वास्तव में प्रभु-प्रेम अनमोल है । एक कवि के शब्दों में–

प्रेम हृदय की वस्तु, परम-सुख अनमोल,
कथनी में आवै नहीं, सकै न कोऊ तोल ।
रसमय आनंदमय विमल, दुर्लभ यह उन्माद,
अकथनीय, पै अति मधुर, गूंगे को सो स्वाद ।

–'प्रेम शतक' से

श्री कृष्ण जी का सन्देश है–
होता मुक्त सकल कल्मष से,
योगाभ्यास निरत रहकर,
ईश्वर-प्राप्ति रूप सुख से,
अति आनद मिला करता ।

आडम्बर और दिखावे के लिए भक्त के पास समय ही नहीं होता । रामचरित मानस में है–

निज प्रभुमय देखहिं जगत केहि मन करहिं विरोध ।

मन और बुद्धि से प्रभु का हो जाना ही भक्ति है । इसमें दिखावे और आडम्बर के लिए लेशमात्र भी स्थान नहीं है । श्रीमद भगवद गीता में श्रीकृष्ण जी कहते हैं–

संतुष्ट : सततं योगी यतात्मा दृढ़निश्चय :
मय्यपितमनोबुद्धियों मदभक्त : स मे प्रिय :

अर्थात, जो सदा संतुष्ट है, मन और इन्द्रियों को जीते हुए है, मुझ में दृढ़ निश्चयी है एवं जिसने अपने मन-बुद्धि को मुझे सौंप रखा है, वह भक्त मुझे प्रिय है । (''संतुष्ट, मन व इन्द्रिय को, अपने वश में किये हुए, मेरे में दृढ़ निश्चय वाला, मेरे को अर्पण किये हुए, अपना मन, बुद्धि सब कुछ, ऐसे भक्त मुझे प्रिय हुए'')

कहा गया है–एकांत (अनन्य) भक्ति ही श्रेष्ठ है–भक्ता एकांतिनो मुख्या : ('नारद भक्ति सूत्र' 67)

यह वह भक्ति है, जिसमें मनुष्य एकाग्र होकर परमेश्वर का हो जाता है । तन, मन, धन सब कुछ उसी का हो जाता है । रहीम कहते हैं–'प्रीतम छवि नैनन बसी, पर छवि कहां समाय, भरी सराय 'रहीम' की लखि, आप पथिक फिरि जाय ।

जो आडम्बर और दिखावा करते हैं, पालनहार-प्रभु की भक्ति से दूर ही रहते हैं । पवित्र कुरआन में है–'(मिथ्याचारी नमाज़ के लिए खड़े होते हैं तो, लोगों को दिखाने के लिए, और अल्लाह को थोड़े ही याद करते हैं ।' (4:142) एक और स्थान पर है–'और उन्हें आदेश इसी का तो दिया गया था कि अल्लाह की इबादत करें, दीन (धर्म) को उसी के

लिए विशुद्ध करके एकाग्र होकर' (कुरआन, 98:5)– जीवन के अन्य कर्मों में भी दिखावा वर्जित है । एक प्रमाणिक हदीस (हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ का वचन/कर्म) में है–'क़यामत के दिन पहला व्यक्ति जिसके बारे में फ़ैसला किया जाएगा (कि वह झूठा है) वह व्यक्ति होगा, जिसको शहीद कर दिया गया था । जब उसको पेश किया जाएगा, तो अल्लाह उसे अपनी नेमतें याद दिलाएगा और वह उनको स्वीकार करेगा । फिर अल्लाह कहेगा, तुमने इनके बदले में क्या कर्म किया ? वह कहेगा , मैं तेरी राह में यहां तक लड़ा कि शहीद हो गया । अल्लाह कहेगा, तुम झूठे हो, तुम इसलिए लड़े थे कि तुमको लोग वीर कहें । फिर उसके बारे में हुक्म हो जाएगा और उसे मुंह के बल घसीट कर ले जाया जाएगा, यहां तक कि आग (नरक) में डाल दिया जाएगा । फिर वह व्यक्ति होगा, जिसने इल्म हासिल किया और दूसरों को उसकी शिक्षा दी एवं कुरआन पढ़ा । जब उसको पेश किया जाएगा, तो अल्लाह उसे अपनी नेमतें याद दिलाएगा और वह उनको स्वीकार करेगा । फिर अल्लाह कहेगा, तुमने इनके बदले में क्या कर्म किया ? वह कहेगा, मैंने इल्म हासिल किया और दूसरों को उसकी शिक्षा दी एवं तेरे लिए कुरआन पढ़ा । अल्लाह कहेगा, तुम झूठे हो, तुमने तो इल्म इसलिए हासिल किया था कि लोग तुम्हें आलिम कहें एवं कुरआन इसलिए पढ़ा था कि लोग तुम्हें क़ारी कहें । अतएव तुम्हें आलिम और क़ारी कहा गया । फिर उसके बारे में हुक्म हो जाएगा कि उसको मुंह के बल घसीट कर ले जाया जाएगा, यहां तक कि आग (नरक) में डाल दिया जाएगा । फिर वह व्यक्ति होगा, जिसको अल्लाह ने रोज़ी में कुशादगी दी थी और उसे हर तरह का माल दिया था । जब उसको पेश किया जाएगा, तो उसे अपनी नेमतें याद दिलाएगा और वह उनको स्वीकार करेगा । फिर अल्लाह कहेगा, तुमने इनके बदले में क्या कर्म किया ? वह कहेगा, मैंने हरेक ऐसी राह में तेरे लिए अपना माल ख़र्च किया, जिसमें माल ख़र्च करना तुझे पसंद था और कोई ऐसी राह मैंने छोड़ी नहीं । अल्लाह कहेगा, तुम झूठे हो, तुमने यह इसलिए किया था कि (लोगों में तेरे बारे में) कहा जाए कि वह बड़ा दानी है । वह तो कहा जा चुका । फिर उसके बारे में हुक्म हो जाएगा और उसको मुंह के बल घसीट कर ले जाया जाएगा, यहां तक कि आग (नरक) में डाल दिया जाएगा ।'

('मुस्लिम')

इस्लाम कर्मप्रधान धर्म है । एक हदीस में है–निस्संदेह अल्लाह तुम्हारे शरीरों को नहीं देखता और न तुम्हारी सूरतों को, बल्कि वह तुम्हारे दिलों एवं तुम्हारे कर्मों को देखता है–(मुस्लिम)। इस्लाम सद्कर्मों के लिए उद्बोधित करता है, जिसमें नीयत मुख्य है । कर्म की नीयत की गयी, पर वह संभव न हुआ, तो इसका सवाब बन्दे (भक्त) को मिलेगा । इसलिए कहा गया–सारे कर्म नीयतों ही पर निर्भर करते हैं ।

(हदीस : मुस्लिम)

'कान्ति' के संपादक को 'श्रेष्ठ संपादक' सम्मान

आल राउंड अकादमी, फ़रीदकोट (पंजाब) की ओर से 'कान्ति' (साप्ताहिक/मासिक) के संपादक डॉ॰ मुहम्मद अहमद को 'कान्ति' की अमूल्य सेवा के लिए 'श्रेष्ठ संपादक' सम्मान से सम्मानित किया गया है।

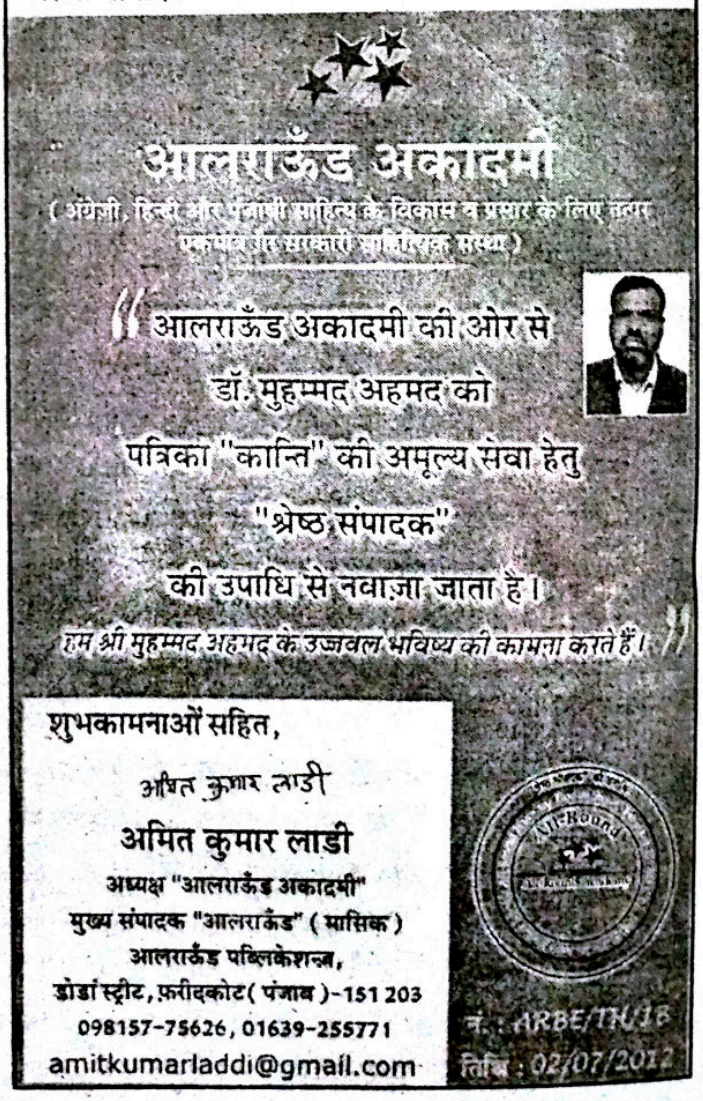

चीन की एक शिशु नीति के साइड इफेक्ट्स

■ विजय कुमार अग्रवाल

ग़ायब बेटियां

जनसंख्या नियंत्रण के क्षेत्र में चीन की मिसाल देना एक परंपरा-सी बन गयी है । लेकिन बहुत कम लोग इस कुख्यात नीति से होने वाली दीर्घकालीन सामाजिक समस्याओं के बारे में जानते हैं । जानकार लोग इस नीति की तुलना हिटलर के द्वारा किये गये यहूदियों के नरसंहार से करते हैं । यदि हिटलर के हाथों 60 लाख यहूदी ग़ायब कर दिये गये (मार दिये गये) तो चीन में 3 करोड़ से भी ज़्यादा लड़कियां ग़ायब हैं । यह संख्या कनाडा की कुल आबादी के सामान्य है । 2005 ई॰ की गणना के अनुसार 25 वर्ष से कम उम्र की आबादी में महिलाओं की तुलना में 3.20 करोड़ पुरुष ज़्यादा हैं (ज़रा सोचिये इन्हें दुल्हनें कहां से मिलेंगी !)।

वस्तुत: भिन्न-भिन्न जनसंख्याविद व सामाजिक संस्थाएं ''ग़ायब लड़कियों'' की संख्या 2.5 से 5.0 करोड़ के बीच आंकती हैं । कुछ भाग्यशाली बच्चियां विदेशी नेक परिवारों द्वारा गोद लिए जाने से बचकर सुरक्षित वातावरण में पहुंच गयीं । मसलन अमेरिकी नागरिक ही सालाना 3 से 6 हज़ार लड़कियों को गोद लेते हैं । बाक़ी सब अभागी व मासूम बच्चियों का क्या हुआ, इस पर कोई चर्चा नहीं होती । लेकिन भुक्त-भोगी माता-पिताओं की दास्तान से पता चलता है कि ''लड़के की चाह'' व मात्र एक ही संतान की मजबूरी उन्हें गर्भपात द्वारा ''लड़की-भ्रूण'' को नष्ट करने पर विवश करता है ।

पुत्र को अधिक उपयोगी मानकर पुत्री को जन्म से पहले ही नष्ट कर देने की मानसिकता भारत में भी है, यह हम सब जानते हैं । दुर्भाग्य से यह मानसिकता दुनिया के अनेक देशों में व्याप्त है ।

1979 ई॰ में लागू की गयी समकालीन इतिहास की सबसे क्रूर नीति से पहले चीन में (पुरुष: महिला) लिंग अनुपात सामान्य के आसपास (108:100) ही था व जनसंख्या वृद्धि दर 3.7 प्रतिशत थी । 25 वर्ष बाद सन 2002 में वृद्धि दर मात्र 1.29 प्रतिशत रह गयी व चीनी नीतिकार 30 करोड़ बच्चे पैदा न होने देने का दावा ठोकने लगे । कहने की आवश्यकता नहीं कि पैदा न होने वाले बच्चों में अधिकांश लड़कियां थीं । आज जानकार लिंग अनुपात (120:100) तक आंकते हैं, जो हर मायने में असामान्य है ।

विकृत लिंग अनुपात से उत्पन्न सामाजिक समस्याएं

भले ही चीनी सरकार इन समस्याओं को सामान्य बतलाना चाहे लेकिन समाजशास्त्री मानते हैं कि लिंग-अनुपात की विकृति से महिला-शोषण को काफ़ी बल मिला है । इन्हें समाज के नीचे के तबक़े में विशेष रूप से देखा जा



सकता है । फलस्वरूप वेश्यावृत्ति, यौन शोषण, समलैंगिकता, बहुपतित्व, जबरन शादी, अनैतिक संबंध, पड़ोसी देशों से महिलाओं व लड़कियों की तस्करी जैसी घटनाओं को बल मिला है । एक उदाहरण : सरकारी आंकड़े ही बताते हैं कि 2001 ई॰ से 2003 ई॰ के दौरान 42,000 महिलाओं व बच्चों को तस्करों के हाथों से बचाया गया । निस्संदेह जिन्हें नहीं बचाया जा सका उनकी तादाद कई गुना अधिक होगी । 2009 ई॰ ''मानव तस्करी'' की एक रिपोर्ट के बाद अमेरिका ने चीन का दर्जा नीचे करके उसे निगरानी में रखे देशों की सूची में डाल दिया ।

चीनी समाज में अविवाहित पुरुषों को ''गुवांग गुवान'' यानी 'सूखी (अकेली) शाखा' की संज्ञा दी जाती है । इन्हें सामाजिक प्रतिस्पर्धा में हारा हुआ मानकर हिक़ारत की नज़र से देखा जाता है । समाजशास्त्री मानते हैं कि समाज द्वारा तिरस्कृत 3 करोड़ की ''नवजवान सेना'' कभी भी संगठित होकर हिंसा व बग़ावत का रास्ता अपना सकती है । यदि ऐसा न भी हो तो उनकी गतिविधियां भिन्न-भिन्न सामाजिक समस्याएं पैदा करती रहेंगी । इन नवजवानों में उन्हें भी शामिल करना होगा जो मां-बाप के ''क़ानूनी कोटे'' के बाद उत्पन्न हुए व सरकारी तंत्र की निगाह में नहीं आये व जिन्हें किसी प्रकार दूरदराज़ के इलाक़ों में भिजवाकर नेक दिल रिश्तेदारों के हाथों पाला पोसा गया । भले ही इनके पास नागरिकता के प्रमाण पत्र न हों, लेकिन समाज में इन्सान के रूप में तो अस्तित्व है ही ।

अब ''लड़कियां पैदा करो'' की नयी चीनी नीति

एक शिशु नीति से विकृत लिंग अनुपात को ठीक करने के लिए कुछ वर्ष पूर्व चीनी सरकार ने ''कन्या संरक्षण योजना'' शुरू की है । चीनी अख़बार पीपुल्स डेली के अनुसार इसके अंतर्गत भ्रूण लिंग निर्धारण पर रोक व लड़की पैदा होने पर इनाम व सुविधाओं की व्यवस्था है । एक शिशु नीति को कुछ हद तक शिथिल कर देने पर भी विचार हो रहा है । ऐसा जानकार मानते हैं ।

चीन को केरल व बंगलादेश से सीखने की ज़रूरत है

क़ानूनी ज़ोर ज़बरदस्ती द्वारा आबादी रोकने का तरीक़ा किसी भी सभ्य समाज को स्वीकार नहीं होगा । जो काम समाज में शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधा व जागरूकता द्वारा हो सकता है उसे डंडे के ज़ोर से करने का प्रयास पूर्णतया बर्बर है । 1979 ई॰ में चीन व केरल में जनसंख्या वृद्धि दर एक-सी ही थी । आज केरल में वृद्धि दर चीन से कम है । दूसरा उदाहरण बंगलादेश का है जिसने बिना क़ानूनी ज़ोर ज़बरदस्ती के अपेक्षाकृत कम समय में ही जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण किया है । ऐसा इसलिए हुआ कि यहां लड़कियों की शिक्षा व महिलाओं की जागरूकता व सशक्तिकरण पर ज़ोर दिया गया । यहां लिंग अनुपात में भी कोई विकृति नहीं है । अंत में, चीन को जनसंख्या नियंत्रण का आदर्श मानना भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में हास्यस्पद लगता है । अपने केरल राज्य से ही सीख लेकर महिलाओं में शिक्षा का प्रसार करें व उन्हें आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ करें, इसी में समाज का कल्याण है । इसके लिए ज़रूरत है पुरुषों के नज़रिये में बदलाव की ।

साहित्य समाचार

शरद नारायण खरे सम्मानित



इतिहास के प्रोफ़ेसर विभागाध्यक्ष व एक दर्जन से अधिक स्तरीय कृतियों व इतिहास-ग्रंथों के रचयिता एवं म॰प्र॰ शासन के 51,000 रुपये के साहित्य-अकादमी राष्ट्रीय अवार्ड विजेता तथा कवि, लेखक, वक्ता, विचारक प्रो॰ (डॉ॰) शरद नारायण खरे को उनकी सृजनशीलता व क्रियात्मकता के परिप्रेक्ष्य में अक्तूबर-नवम्बर 2012 ई॰ में देश की अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं ने अनेक अलंकरणों से विभूषित किया-(1) शिव संकल्प साहित्य परिषद होशंगाबाद ने ''गोविंद श्री'' अलंकरण दिया (2) आनन्दिनी, कोटा ने ''स्व॰ शिवादेंवी स्मृति सम्मान'' दिया (3) साहित्यिक-सांस्कृतिक कला संगम अकादमी, परियावां ने ''विवेकानंद-सम्मान'' (4) सरिता लोकसेवा संस्थान, लखनऊ ने ''माता-भगवान देवी सम्मान (5) नवलेखन संघ, भोपाल ने 'पंडित हनुमान प्रसाद तिवारी अलंकरण (6) गुंजन कला सदन जबलपुर ने ''साहित्य भूषण अलंकरण एवं (7) ग्वालियर कला साहित्य परिषद ने दो सम्मान ''क़लम कलाधर-सम्मान एवं ''उत्कृष्ट हिन्दी सेवी सम्मान'' भव्यतापूर्वक प्रदान किये ।

हिन्दी कविता : कई अनुत्तरित प्रश्न

❖ वज्रघोष
(वाराणसी)

आज कविताएं धड़ल्ले से लिखी और छापी जा रही हैं । हर पत्र-पत्रिका में रोज़ ही नये-नये कवियों की कविताएं छप रही हैं । नये-नये कवि रोज़ पैदा हो रहे हैं या बन रहे हैं । वैसे भी, लेखन किसी की बपौती नहीं है । जब जो भी चाहे, लिख सकता है । जैसे पढ़ने और बोलने की आज़ादी है, वैसे ही लिखने की भी आज़ादी है, लेकिन प्रश्न यह है कि क्या कुछ भी लिखने, पढ़ने और बोलने की आज़ादी वाक़यी है ? आज कविता के बारे में ऐसा ही लगता है । आज की हिन्दी कविता विसंगतियों की शिकार है । कुकुरमुत्ते की तरह रोज़ सैकड़ों नाम उग रहे हैं और 'कवि' नामधारी ये स्वयंभू निरंतर हिन्दी कविता का बेड़ा गर्क कर रहे हैं । आज के इन तथाकथित कवियों में से अधिकतर के पास कविता के प्रति न तो कोई समझ है, न सोच और न ही प्रतिभा । थोथा चना बाजे घना ।

यह कटु सत्य है कि हिन्दी में कहानी, निबंध, नाटक, एकांकी, उपन्यास आदि विधाओं में उतना कूड़ा-करकट नहीं लिखा जा रहा है, । जितना कि कविता में । आज के दौर में हिन्दी कविता में सर्वाधिक प्रदूषण हो चुका है । स्वनामधन्य 'तथाकथित कवियों' की लंबी लिस्ट है, जो धड़ल्ले से कविताएं लिख रहे हैं । उनकी रचना किन अर्थों में कविता है—न तो इसकी परख साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं के संपादक कर रहे हैं, और न कवि (वास्तविक)। इन छुटभैयों को पूरी आज़ादी है । ससम्मान उनकी तथाकथित 'कविताएं' पत्र-पत्रिकाओं में स्थान पा रही हैं । इसे देखकर तो यही लगता है कि 'कविता' के प्रति हमारी समझदारी घटी है । हम कविता के प्रति उदासीन हो गये हैं । जो भी जैसा भी है (कूड़ा-करकट ही सही) हम उसे 'कविता' के रूप में गौरवान्वित करने का ठेका तो नहीं ले चुके हैं ?

कुछेक पत्र-पत्रिकाओं को ही देखकर ऐसा लगता है कि उनके संपादक और सहयोगी रचनाकार कविता के प्रति जागरूक हैं । कविता को निहायत घटिया विधा बनाने के इस षड्यंत्र को ख़त्म करने के लिए ज़रूरी है कि पहले कविता की समझ विकसित की जाए । कविता को 'कविता' बने रहने दिया जाए । कविता के 'काव्यत्व' की हत्या बर्दाश्त नहीं की जानी चाहिए । प्रश्न कविता में लय की वापसी का नहीं बल्कि मुकम्मल कविता की ही वापसी का है ।

आज की सबसे बड़ी ज़रूरत है कि कविता और बकवास के बीच के फ़र्क़ को जाना और जनाया जाए । फ़र्ज़ी कविता और फ़र्ज़ी कवियों को बेनकाव किया जाए । आज हिन्दी पढ़ाने वाला स्कूल मास्टर हो या डंडाटेक हवलदार या सड़क पर भटकने वाला निठल्ला इनमें से न जाने कब किसे, कौन-सी पत्रिका 'कवि' बनाकर पेश कर दे । उनके उटपटांग लेखन को न जाने कब महिमामंडित करके युगांतकारी परिवर्तन से जोड़ दिया जाए ? और तो और आज का यह फ़ैशन हो चुका है कि एक ही व्यक्ति जो प्राध्यापक है वह खुदा न ख़ास्ते अगर कहानीकार या लघुकथा लेखक हो गया तो वह 'कवि' अपने आप ही हो जाता है । कारण कि कविता लिखना आज का फ़ैशन है । कविता लिखना सबसे आसान । कवि बनना बेहद आसान ।

आज जो व्यक्ति सूर, तुलसी, कबीर, जायसी, बिहारी, घनानन्द, भारतेन्दु, रत्नाकर, प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी, नागार्जुन का नाम भी नहीं जानता हो वह हिन्दी का कवि हो सकता है । कोई ज़रूरी नहीं है उनके नाम को जानना या उनकी रचनाओं को पढ़ना । आज तो कवि होने के लिए ज़रूरी है सिर्फ़ क़लम, एक टुकड़ा काग़ज़ और दिमाग़ी खुराफ़ात । काग़ज़ रंग दीजिये, कविता तैयार । कहीं न कहीं तो छप ही जाएगी ।

यह विडम्बना नहीं तो और क्या है जो आज खुद कवि बने बैठे हैं उनमें से ज़्यादातर ने तो कविता क्या है इसे जाना ही नहीं है । न तो वह जीवन को समझ सके हैं और न ही कविता को । कुछ तो ऐसे भी 'विराट' कवि हैं जो विलासिता के चरम सोपान पर आनन्द लेते हुए भूखे और नंग लोगों की व्यथा-कथा को कविता का रूप दे लेते हैं । इन्हें

क्या कहा जाए । कविता को तो जीवन के भीतर देखा जाना चाहिए । कविता लिखी नहीं जाती, कविता को जीना पड़ता है और आज कविता को जीने वाले कितने प्रतिशत कवि हैं ? कविता अगर जीवन से कटी हुई हो वह कविता ही नहीं है । आज की कविता पाठक से, आम जनता से कट-सी गयी है । कविता आम जनता से दूर होती जा रही है । कुछेक रचनाकार अपवादस्वरूप हैं जो कविता को जनता से जोड़ने के मुहिम पर ही कार्य कर रहे हैं लेकिन ज़्यादातर ऐसे फ़र्ज़ी कवि आज़ कविता की दौड़ में शामिल हैं जो अपनी ही कविता का अर्थ नहीं बता सकते । जो यह नहीं जानते कि उनकी तथाकथित कविता आख़िर किन अर्थों में कविता है और वे क्या लिख रहे हैं ? किसके लिए लिख रहे हैं ?

कविता को जीवन से जोड़ना आज अनिवार्यतम हो गया है । बात को दूसरों के मन में सीधे उतारने का तरीक़ा है– कविता । कविता को 'स्वांत: सुखाय' बताने वाले धोखेबाज़ हैं । किताबी कविताओं की नहीं, सही कविता की ज़रूरत है आज जो 'जनकविता' के पद पर स्थापित हो सके ।

कविता की कसौटी जनता है । आलोचक कविता की कसौटी निर्मित करने वाला होता कौन है ? कविता को कविता रहने देने की शर्तें तो हैं ही जिनकी उपेक्षा बेहद ख़तरनाक और भविष्य के लिए घातक है । आज ऐसे भी सिरफिरे हैं जो कविता की तलाश मोहनजोदड़ो या हड़प्पा में भी करने को उत्सुक हैं । कविता साधना है जो समझ के अभाव में सफल नहीं होती । समझ के लिए ज़रूरी है– मंथन । जीवन में रहकर जीवन का मंथन । जीवन से कटकर नासमझी विकसित की जा सकती है, समझ नहीं ।

कविता लिखना दोधारी तलवार पर चलना है । एक तरफ़ कविता के प्रति ज़िम्मेदारी है तो दूसरी तरफ़ जनता के प्रति । एक भी ज़िम्मेदारी न निभी तो कवि डांड़ हुआ । ''कला कला के लिए'' का फार्मूला आज अप्रासंगिक हो गया है और 'स्वान्त: सुखाय' का ढकोसला बेमतलब । कविता आम जनता की निजी चीज़ है । कविता पर हर आदमी का बराबर का हक़ है । आज की कविता को अंधी चहारदीवारी में क़ैद होने से बचाते हुए उसे उस आदमी तक पहुंचाने की ज़रूरत है, जिसके लिए कविता संजीवनी हो सकती है और हथियार भी । कवि के ग़ैर-ज़िम्मेदार बनने का मतलब है–कविता की हत्या । कवि ने अपनी ज़िम्मेदारी से किनारा कसा तो समझिये कविता भी जनता से कटी । जनसमझ पर 'कुन्द' होने का आरोप लगाकर कवि चलता-फिरता नज़र आये । यह असंभव है । आज के कवि को अपनी समझ ठीक रखनी होगी । ज़रूरत है ख़ुद में सुधार की और कविता को सुधारने की । वे तत्व जिनसे सही कविता बन सकती है, हमारे इर्द-गिर्द हैं । कविता के बिखरे तत्वों को सहेजने और संजोने की ज़रूरत है ।

ज़रूरत है–भोथरे शब्दों को गलाकर, उन्हें नये सांचे में ढालकर ठोस बनाने की । उन प्रतीक, बिम्ब मिथक संकेतों को कविता में शामिल किया जाए जो कविता से आज भी अपरिचित और बहिष्कृत हैं लेकिन आम जनता के बीच प्रचलित हैं । वाद, आन्दोलन या नारे के मोहपाश से बचते हुए सही कविता को 'कविता के रूप में स्वीकार करने और कराने की ज़रूरत है । जो लोग कविता के दुश्मन हैं, कविता की हत्या कर रहे हैं उनको ठुकरा दिया जाए अन्यथा आने वाला कल हमें माफ़ नहीं करेगा और कविता और कवि की परिभाषा तब तक निश्चय ही बदल चुकी होगी । कविता को बचाइए ।

देश-दशा

लोकतंत्र में लोक की खड़ी हो रही खाट ।
शांति-स्नेह-सद्भाव को लिया खलों ने चाट ।।

राष्ट्र-भाव का त्याग है, स्वार्थ-भाव से राग ।
पदे-पदे फुंकारते राष्ट्रद्रोह के नाग ।।

लोकतंत्र के नाम पर नेता बने नरेश ।
जन-गण-मन बेचैन है, राम भरोसे देश ।।

संविधान जिस देश का, करता विसम विधान ।
वहां कभी सुख-शांति का होता नहीं बिहान ।।

पद-लिप्सा सब में जहां, जहां भयंकर भेद ।
उस समाज, उस देश में क्यों न रहेगा खेद ?

मंत्री मेवा काटते, भूखे मरें किसान ।
भारत के जनतंत्र की यही परम पहचान ।।

वेतन लेते मुफ़्त में अनगिन नमकहराम ।
बिना घूस होता नहीं अब तो कोई काम ।।

भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'
शहज़ादपुर, अकबरपुर, अंबेडकर नगर (उ०प्र०)

बाल श्रम का एक रूप यह भी

■ गुलज़ार सहराई

थानों में नज़र नहीं आएंगे चाय पिलाने वाले 'छोटू'–यह शीर्षक है 'हिन्दुस्तान' (7 नवम्बर 2012) में छपी एक ख़बर की, जिसके अनुसार दिल्ली पुलिस के मुख्यालय से एक आदेश जारी किया गया है, जिसके तहत दिल्ली पुलिस के थानों, चौकियों और अन्य यूनिटों में चाय पिलाने वाले 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चे (छोटू) अब नहीं दिखायी देंगे। इस आदेश के साथ ही उच्च अधिकारियों को अपने-अपने यूनिटों में औचक निरीक्षण करने के निर्देश भी जारी किये गये हैं। इतना ही नहीं, पुलिसकर्मी अपने घर में भी कम उम्र के बच्चों से काम नहीं ले सकेंगे। इस आरोप में पकड़े जाने वाले पुलिसकर्मी विभागीय कार्रवाई के साथ बाल श्रम निषेध क़ानून के दायरे में आ सकते हैं। ख़बर के अनुसार यह आदेश एक व्यक्ति द्वारा थानों, चौकियों एवं पुलिसकर्मियों के घरों में काम करने वाले 14 साल से कम उम्र के बच्चों के बारे में सूचनाधिकार क़ानून (आर०टी०आई०) के तहत जानकारी मांगने पर जारी किया गया है।

सरकार के पास न तो बेसहारा बच्चों को शोषण से बचाने का कोई इन्तिज़ाम है और न उनकी शिक्षा-दीक्षा और पालन-पोषण ही का कोई प्रबंध। सरकार को ग़रीबी रेखा से नीचे ज़िन्दगी गुज़ारने वालों की उसे मजबूरी का भी ख़याल नहीं है जिसके तरह उन्हें अपने बच्चों को शिक्षा से वंचित करना पड़ता है।

हो सकता है कि इस प्रकार की कुछ और ख़बरें भी जल्द ही पढ़ने या सुनने को मिलें क्योंकि 14 नवम्बर का दिन क़रीब आ रहा है जिसे हर साल "बाल दिवस" के रूप में मनाया जाता है, यह ख़बर भी उस "जश्न" की भूमिका ही मालूम होती है, वरना छोटे बच्चों द्वारा मज़दूरी करने का कटु सत्य कोई ढकी-छिपी बात नहीं जिसका अचानक रहस्योद्घाटन हुआ हो।

इसे हमारे देश की विडंबना ही कहा जाएगा कि यहां समस्याओं पर चिंता तो व्यक्त की जाती है, क़ानून के द्वारा उन्हें हल करने के प्रस्ताव भी ख़ूब दिये जाते हैं, लेकिन समस्या के मूल कारण का पता लगाकर उसे समाप्त करने का प्रयास नहीं किया जाता। इससे भी बड़ी विडंबना यह है कि कुछ समस्याओं के लिए तो दिन निर्धारित कर लिए गये हैं। वर्ष भर में केवल एक बार उन पर चिंता व्यक्त की जाती है। समाचार पत्रों में संपादकीय तथा अन्य लेख प्रकाशित होते हैं। सरकार की ओर से कुछ आदेश जारी किये जाते हैं और फिर इस "औपचारिकता" के बाद सब कुछ भुला दिया जाता है।

बाल श्रम भी एक ऐसी ही समस्या है, वरना कौन नहीं जानता कि 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों से काम लेना क़ानूनी रूप से अपराध है। फिर भी यह अपराध खुलेआम हो रहा है। सरकार भी इससे अनजान नहीं और क़ानून के रखवाले भी ख़ूब जानते हैं। लेकिन वे तो ख़ुद ही इसमें संलग्न हैं। जैसा कि उपर्युक्त ख़बर से भी ज़ाहिर होता है। ऐसी स्थिति में दिल्ली पुलिस मुख्यालय का आदेश कितना प्रभावकारी सिद्ध होगा, सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

आमतौर पर बाल श्रम समस्या का मूल कारण अशिक्षा और ग़रीबी को ठहराया जाता है जो किसी हद तक सही भी है। कुछ मां-बाप जब यह अनुभव करते हैं कि कठिन परिश्रम करने पर भी, लगातार बढ़ती महंगाई के कारण, वे अपने परिवार की मौलिक आवश्यकताओं की आपूर्ति में विफल हो रहे हैं, दूसरी ओर महंगी शिक्षा का भार उठाना भी उनके लिए संभव नहीं, तो विवश होकर वे बच्चों को किसी काम से लगा देते हैं। इस स्थिति का अनुचित लाभ व्यापारी वर्ग विशेषकर लघु उद्योगों से जुड़े लोग उठाते हैं जिन्हें बच्चों के रूप में कम पारिश्रमिक वाले मज़दूर मिल जाते हैं। कुछ बच्चों को मां-बाप (विशेषकर बाप) की छत्रछाया से वंचित हो जाने के कारण भी इस प्रकार की स्थिति से जूझना पड़ता है।

लेकिन हुकूमत के पास न तो बेसहारा बच्चों को शोषण से बचाने का कोई इन्तिज़ाम है और न उनकी शिक्षा-दीक्षा

और पालन-पोषण ही का कोई प्रबंध । हुकूमत को ग़रीबी रेखा से नीचे ज़िन्दगी गुज़ारने वालों की उसे मजबूरी का भी ख़याल नहीं है जिसके तरह उन्हें अपने बच्चों को शिक्षा से वंचित करना पड़ता है । वह तो निरंतर महंगाई बढ़ाकर मानो यह कहना चाह रही है कि उसे न केवल ग़रीबों की मुश्किलों की चिंता नहीं है बल्कि वह मध्यम वर्ग को भी दरिद्र बना देना चाहती है । ऐसे में ग़रीब और बेसहारा बच्चों के कल्याण से संबंधित उसके दावों की हक़ीक़त को सहज ही समझा जा सकता है ।

बच्चों से काम कराने की एक शक्ल और भी है जिसकी ओर आमतौर से ध्यान नहीं दिया जाता और वह है शो बिजनेस की दुनिया में बच्चों का इस्तेमाल । फ़िल्मों, धारावाहिकों और विज्ञापनों में बच्चों का इस्तेमाल कोई ढकी-छिपी बात नहीं है । ज़ाहिर है कि ये भी कमाई के–और वह भी मोटी कमाई के–साधन हैं । अत: इन्हें भी बालश्रम क़ानून के अंतर्गत आना चाहिए, लेकिन देखा यह गया है कि इस ओर आमतौर से ध्यान नहीं दिया जाता ।

हां, लगभग दो-ढाई वर्ष पहले इसके ख़िलाफ़ आवाज़ उठी थी, जिसका थोड़ा-सा प्रभाव भी उस समय नज़र आया था । कुछ समय के लिए बच्चों वाले विज्ञापन बन्द हो गये थे, वे धारावाहिक जिनमें बच्चे किसी न किसी रूप में भूमिका निभा रहे थे, उनका प्रसारण रोक दिया गया था । परन्तु यह सब क्षणिक सिद्ध हुआ और जल्द ही सब कुछ 'सामान्य' हो गया । और अब उसके विरुद्ध कोई आवाज़ सुनायी नहीं देती । इसके विपरीत नाच गानों, कॉमेडी तथा अन्य प्रोग्रामों में बच्चों को भी सम्मिलित करके, बल्कि समय-समय पर ''चक दे बच्चे'' और ''छोटे मियां'' सरीखे प्रोग्राम केवल बच्चों के लिए आयोजित करके इस प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया जाता है ।

ज़ाहिर है कि इस प्रकार के प्रोग्रामों में भाग लेने वाले बच्चों के मां-बाप ग़रीब नहीं होते कि उनके सामने आर्थिक मजबूरी हो बल्कि वे केवल दौलत और शुहरत के लालच में बच्चों को इस राह पर डालकर उन्हें दूसरों के लिए मनोरंजन का साधन बना देते हैं । ज़ाहिर है कि इस तरह के परिवेश में पलने-बढ़ने वाले बच्चों की जो मानसिकता बनेगी वह इसके सिवा कुछ नहीं हो सकती कि जीवन एक खेल-तमाशे से ज़्यादा कुछ नहीं है और रुपया कमाना जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य । नैतिक मूल्यों का उनकी दृष्टि में कोई महत्व नहीं हो सकता ।

सैद्धांतिक रूप से भी देखा जाए तो शो बिजनेस की दुनिया में काम करने वाले बच्चों के मां-बाप उन ग़रीब मां-बाप से कहीं अधिक दोषी हैं जो किसी न किसी मजबूरी में अपने बच्चों से काम कराते हैं ।

इसलिए ज़रूरी है कि चाय की दुकानों के 'छोटुओं' की चिंता करने के साथ-साथ ग्लैमर की दुनिया के इन 'छोटे मियांओं' की भी चिंता की जाए, जो न सिर्फ़ विशुद्ध भौतिकतावादी और अनैतिकतापूर्ण मार्ग पर चल पड़े हैं बल्कि समाज के अन्य बच्चों के लिए प्रेरणा स्रोत भी बन रहे हैं ।

कविता

प्रेम पुष्प

न ये तन तब मेरा था,
न ही अब यह मेरा है ।
हाड़मांस का बना ये पुतला,
प्रभु, यह सदा से तेरा है ।

हम अज्ञानी समझ रहे हैं,
जिसे सदा से ही अपना ।
तन से प्राण जुदा जब होगा,
जग लगेगा तब एक सपना ।

माया में जब तक फंसे हुए हैं,
सोंचे मन-कौन अपना कौन पराया है ।
नहीं सोंचता दो दिनों का है जीवन,
कौन सदा के लिए आया है ?

भेद-भाव का ज़हर विषैला,
करता मानव को मानव से दूर ।
प्रेम सुधा पी ले इस जीवन में,
होता है तू क्यों मजबूर ?

जो पल बीत गया जीवन में,
लौट नहीं अब वह आना है ।
भेद-भाव की कंटक-भूमि पे,
प्रेम का पुष्प उगाना है ।

पी॰सी॰ गुप्ता
जौहरी कोठी, समस्तीपुर (बिहार)

देशहित पर हावी जातिवाद

■ विद्या प्रकाश

देश की स्वतंत्रता तथा लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था के 6 दशक व्यतीत हो जाने के बावजूद जनसाधारण में न सशक्त जनतांत्रिक चेतना विकसित हो पायी है और न लोग जाति-पाति जैसी सड़ी गली विकृत अर्थहीन परंपरा के केंचुल से मुक्त हो पाये हैं । शिक्षा के व्यापक प्रचार-प्रसार के बाद भी लोग जितना चिंतित स्वजातीय हित के प्रति दिखते हैं, उतना राष्ट्रीय हित तथा लोकोत्थान को लेकर नहीं ।

देश के किसी भी छोटे-बड़े शहर में नज़र डाली जाए, तो जायसवाल समाज, साहू क्लब, श्री चित्रगुप्त सभा, यादव महासभा, अखिल भारतवर्षीय गौड महासभा, मौर्य कुशवाहा विकास मंच, वैश्य एकता परिषद, श्री विश्वकर्मा समिति, अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा, अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा, अखिल भारतीय कायस्थ महासभा, कायस्थ कल्याण समिति आदि जातिवादी संगठन रूप बदल-बदलकर फैले नज़र आते हैं । इन जातिवादी संगठनों की पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार महीने दो महीने में एक बार बैठकबाज़ी होती है तथा अपनी जाति के पिछड़ेपन, बेरोज़गारी, दहेज प्रथा, अशिक्षा वग़ैरह समस्याओं को लेकर चिंता व्यक्त की जाती है तथा विकास के लिए जागरूकता और एकजुटता की ज़रूरत पर बल दिया जाता है ।

अनेक जातिवादी संगठन ऐसे हैं जो प्रत्येक वर्ष माध्यमिक शिक्षा परिषद उ०प्र० तथा सी०बी०एस०ई० दिल्ली द्वारा संचालित हाईस्कूल तथा इंटरमीडियट अथवा समकक्षीय परीक्षा में विद्यालय में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले स्वजातीय छात्र-छात्राओं को समारोहपूर्वक प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित करते हैं ।

प्रदेशीय और केन्द्रीय मंत्रिमंडल में अपनी बिरादरी के क़िसी विधायक या सांसद को फुल फ्लेज्ड मंत्री का ओहदा दिये जाने पर संगठन फूलकर कुप्पा हो जाता है तथा हर्ष व्यक्त कर बधायी संदेश भेजे जाने लगते हैं । इसके लिए प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जाती है । स्वजातीय मंत्री के पूर्व प्रथम नगरागमन पर स्वागत, अभिनन्दन तथा माल्यार्पण कर स्तुति वाचन किया जाता है तथा अभिनन्दन पत्र में उसे कुलभूषण, कुल गौरव तथा पूर्वांचल रत्न जैसे न जाने कितने और कैसे-कैसे विशेषणों से दिल खोलकर नवाज़ा जाने लगता है । रेलवे स्टेशन पर ट्रेन से उतरने से लेकर कार्यक्रम स्थल तक रास्ते में जगह-जगह स्वागत द्वार बनाकर उसका कुछ इस अंदाज़ में बाजोशोख़रोश स्वागत किया जाता है जैसे अमेरिका के राष्ट्रपति का शुभागमन तथा पदार्पण हो रहा है । क़दमबोसी और ख़ातिरदारी में कोई कोर-क़सर नहीं बाक़ी रखी जाती । भले वह अपने कार्यकाल में करोड़ों का घोटाला कर स्विस बैंक में सारी दौलत जमा कर दे ।

यदि मंत्रिमंडल में अपनी बिरादरी को नुमाइन्दगी नहीं दी गयी तो पानी पी-पीकर सरकार को गरियाया जाने लगता है । कैरेक्टर और मुल्क से ज़्यादा ऊंची बिरादरी का सवाल जो ठहरा । शहर में सालों से सड़क क्षतिग्रस्त है । पेय जलापूर्ति तथा विद्युतापूर्ति अनियमित है । कोटे की दुकान से राशन कार्डधारक उपभोक्ताओं को महीनों से चीनी, खाद्यान्न तथा मिट्टी का तेल नहीं मिल रहा है । सरकारी कार्यालयों में भ्रष्टाचार है ।

सरकारी अस्पतालों से दवा नहीं मिलती । इन समस्याओं से समाज के हर वर्ग-जाति के लोग त्रस्त हैं । मगर इन मुद्दों तथा जनसमस्याओं को लेकर सशक्त आवाज़ उठाने वाले जनवादी संगठन ज़िले में कितने हैं ? कितने लोग हैं जो लोकतांत्रिक मूल्यों के क्षरण तथा नैतिक अवमूल्यन को लेकर चिंतित रहते हैं तथा लोकतंत्र के सशक्तीकरण हेतु प्रयत्नशील होते हैं ?

यह कितना आश्चर्यजनक है कि जिस देश का अरबों रुपया विदेशी बैंकों में काले धन के रूप में जमा हो और जहां के मंत्री घोटाला कर हर साल मालदार व दौलतमंद होते जा रहे हों, उस देश की जनता की तरफ़ से विरोध में कोई आवाज़ नहीं उठायी जाती । जनता अलग-अलग जातीय ख़ेमों में विभक्त है । क्या जातीय हित राष्ट्रहित से ऊपर तथा

अधिक महत्वपूर्ण है ?

समाज में जातिवादी संगठन इफ़राद है तथा सबकी अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग है । सरकार तथा राजनीतिक दल जातीय तथा साम्प्रदायिक आधार पर जनशक्ति को बांट कर अंग्रेज़ शासकों की 'डिवाइड एंड रूल' की पॉलिसी पर चल रहे हैं तांकि उनकी हुकूमत महफ़ूज़ रह सके तथा उनकी दाल गल सके । वे जानते हैं जिस दिन जनंता जातीय घेरा ध्वस्त कर संगठित हो जाएगी उनका दांव सफल नहीं हो पाएगा । इसलिए वे जातीय तथा साम्प्रदायिक आधारों पर जनशक्ति को पृथक-पृथक टुकड़ों में बांटे रखने को ख़्वाहिशमंद तथा कोशिशमंद है । आरक्षण व्यवस्था उनके इसी सियासी दांव तथा चाल का एक हिस्सा है । सवर्ण, दलित, अल्पसंख्यक बहुसंख्यक, जातीय आधार पर आरक्षण, प्रोन्नति में आरक्षण तथा पिछड़ा वर्ग जैसी वे शब्दावलियां हैं जिनके सहारे राजनीतिक दल जनशक्ति को पृथक-पृथक ख़ेमों में विभक्त कर अशक्त कर रहे हैं तथा जनता भी इन्हीं शब्दों में उलझकर रह गयी है । परिणामस्वरूप लोकतंत्र देश में कमज़ोर अवस्था में है । समाज में तिवारी हैं, चतुर्वेदी हैं, श्रीवास्तव हैं, सक्सेना है, धोबी धरिकार हैं, ठाकुर-बनिया हैं, तेली-तम्बोली हैं मगर लोकतंत्र कहां है ? समाज का प्रबुद्ध वर्ग भी इस तरफ़ से उदासीन तथा लापरवाह है । लोकतंत्र की खाल ओढ़े पूंजीपरस्त ताक़तें सक्रिय हैं । जिस लोकतंत्र को लेकर हम मुगालते और ख़ुशफ़हमी में हैं, वह कहां है, वह कैसा जनतंत्र है ?

स्वास्थ्य चर्चा

सफ़र में ख़ास ख़याल रखें मधुमेह के रोगी

प्राय: मधुमेह से पीड़ित व्यक्तियों के लिए सफ़र भावनात्मक तथा शारीरिक परेशानी का कारण बन जाता है । इसका कारण यह है कि सफ़र के दौरान खान-पान संबंधी अनियमितता तथा बाहर के अस्वास्थ्यकर भोजन से रक्त शर्करा (ब्लड शूगर) की समस्या बढ़ जाया करती है । मधुमेह में ब्लड शूगर के उतार-चढ़ाव संबंधी समस्या के निराकरण हेतु सबसे सरल और बढ़िया तरीक़ा है कि स्वास्थ्यवर्द्धक स्नैक्स को अपने आहार में सम्मिलित किया जाए ।

रात्री में कैल्शियम, फाइबर तथा एंटी आक्सीडेंट्स (रोग रक्षक तथा जीवन रक्षक तत्व) पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं । एंटी ऑक्सीडेंट्स डाइबिटीज, हृदयरोग, आर्थराइटिस, अल्जाइमर तथा पार्किन्संस जैसी अनेक बीमारियों से बचाव करने में सहायक है । अमेरिकन डाइबिटीज एसोसिएशन के एक अध्ययन के अनुसार सेचुरेटेड फैट्स (ऐसे वसायुक्त तेल जो जम जाते हैं जैसे घी, डालडा, नारियल का तेल आदि) तथा ट्रांस फैट्स (एक बार उबाले गये तेल में बार-बार किसी खाद्य पदार्थ को तलना) से युक्त खाद्य पदार्थ ब्लड कोलेस्ट्राल के स्तर को बढ़ा देते हैं । रक्त में कोलेस्ट्राल की मात्रा अधिक होने से दिल की बीमारियों का ख़तरा बना रहता है ।

इसलिए सेचुरेटेड फैट तथा ट्रांस फैट के सेवन से दिल का दौरा पड़ने की आशंका बढ़ जाती है । जई तथा रोगी फाइबर के अच्छे स्रोत हैं जो शरीर में कोलेस्ट्रोल को रोकने में सहायक हैं तथा इनसे हृदय संबंधी बीमारियों में बचाव होता है ।

मधुमेह के रोगियों को माहार में विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है । उन्हें खानपान में तुरई, नेनुवां, लौकी, सरपुतिया, टिंडा, परवल वग़ैरह को स्थान देना चाहिए । इस रोग में करेला तथा खेखसा विशेष रूप से लाभकारी है । मधुमेह में चोकरयुक्त आटे से निर्मित रोटी खानी चाहिए । मधुमेहग्रस्त व्यक्ति सफ़र के दौरान मिठाई, चाट-पकौड़ा, मैगी, कटलेट आदि रेलवे स्टेशनों एवं रोडवेज स्टेशनों पर बिकने वाली बाज़ारू खाद्य-पदार्थों की बजाय अरारोट का बिस्किट साथ ले जा सकते हैं तथा वक़्त ज़रूरत खाकर प्यास बुझा सकते हैं । कार्न फ्लैक्स या मक्के से निर्मित उत्पाद तथा नमकीन इस रोग में फ़ायदेमंद है । मधुमेह से पीड़ित लोगों को मीठे खाद्य पदार्थों से परहेज़ करना चाहिए । ऐसे लोग खान-पान में विशेष ख़याल कर रोग के प्रकोप को कम कर सकते हैं तथा उस पर आसानी से क़ाबू पा सकते हैं ।

● **डॉ॰ अनुराग श्रीवास्तव**

यह दुराग्रह क्यों ?

■ मुद्राराक्षस

हिन्दू समुदाय एक आन्दोलन अक्सर करता है–बंकिमचन्द्र चटर्जी के गीत 'वन्दे मातरम्' को हर भारतवासी गाये । मूलत: यह मांग मुसलमानों को नीचा दिखाने के नज़रिये से की जाती है ताकि यह घोषित किया जा सके कि देखिये मुसलमान देश को अपनी मां नहीं मानता ।

यह एक विचित्र ज़ोर ज़बरदस्ती है । इस देश को मां मानने को तो मैं भी तैयार नहीं हूं । मेरी मां श्रीमती विद्यावती शिवचरण लाल थी । ज़मीन-ज़मीन होती है, मां नहीं । मां कोई मानुषी ही हो सकती है । नारों की बात अलग है, वास्तविकता में कोई धरती पुत्र, ज़मीन का बेटा नहीं हो सकता ।

देशभक्ति का जो नारा बहुत चाव से दिया जाता है हमें उसकी वास्तविकता को कभी तटस्थ तार्किकता से देखना चाहिए । एक दिलचस्प उदाहरण हम ले सकते हैं । भारतीय जनता पार्टी के नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी का जन्म जिस ज़मीन पर हुआ था वह आज पाकिस्तान के नाम से जानी जाती है । आज श्री आडवाणी भारत के नागरिक हैं । जो ज़मीन अब पाकिस्तान है और आडवाणी की जन्मभूमि है क्या उसके लिए वे वन्दे मातरम् कहेंगे ? उन्हें अब तक किसी ने ऐसा करते नहीं पाया । वैज्ञानिक आइंस्टाइन जर्मनी में पैदा हुए थे पर अगर वे अमेरिका न भाग जाते तो मार डाले जाते । अपनी उस मातृभूमि की कैसी वंदना क़र सकते थे आइंस्टाइन ? वाल्टर बेंजामिन बर्लिन में पैदा हुए थे । नाजी हलचल के बाद वे 1933 में नाजी आतंक से भाग कर फ्रांस में रहने लगे । फ्रांस पर जर्मनी के कहर के बाद फ्रांस से भी निकल कर अमेरिका जाने की कोशिश में स्पेन की सीमा तक पहुंचते-पहुंचते उन्हें आत्महत्या कर लेनी पड़ी । कैसा हो सकता था उनके लिए वन्दे मातरम् ? जिन सत्तर लाख लोगों को नाजी नरबलि चढ़ना पड़ा था उनके लिए क्या था वन्दे मातरम् ? इसराईल के गठन के बाद दुनिया भर के यहूदी अपने देश छोड़कर इसराईल आ बसे । उनका वन्दे मातरम् क्या होगा ? फ़िलिस्तीन के लिए संघर्षकारी अरबों की ज़मीन कहां है जिसके लिए वे वन्दे मातरम् करें ?

अपनी ही धरती पर जेल की सलाख़ों के पीछे सारी जवानी गंवा देने वाले नाज़िम हिकमत ने एक महागाथा लिखी है–ह्यूमन लैंडस्केप्स फ्राम माई कंट्री । यह अभूतपूर्व विशाल काव्यशिल्प में लिखा उपन्यास बसरा की जेल में लिखा गया था और छपा था इटली और रूम में । नाजिम हिकमत ने अपनी यह किताब अपनी पत्नी को समर्पित करते हुए लिखा था–

उसका जन्म कहां हुआ, उसकी उम्र क्या है
मैंने नहीं पढ़ा, मैंने सोचने के लिए भी नहीं सोचा, मुझे मालूम ही नहीं ।

इस देश भारत में लगभग चौथाई आबादी ऐसी है जिसे बेहद गंदले, सड़ते और बदबूदार पानी को पीना पड़ता है । आधी आबादी एक वक़्त का भरपूर खाना नहीं जुटा सकती । साठ करोड़ लोग आज भी निरक्षर हैं और दुनिया में कुष्ठ रोगी और अंधता के रोगी सबसे ज़्यादा भारत में ही हैं । ये किसका वंदे मातरम् करें ? सुजला, सुफला, शस्य श्यामला, शुभ्र ज्योत्सना, पुलकित यामिनी कुछ चिकने गाल, तंदुरुस्त सुखासीनों को छोड़कर किसके लिए है ?

पुलकित यामिनी गाने वाले एय्याशों को छोड़कर लोगों को यह भी देखना चाहिए कि उन हज़ारों लोगों के लिए रात कितनी बीहड़ होती है जो फुटपाथों पर सर्दी से ठिठुर कर मरते हैं । हज़ारों की तादाद में जो लोग भयावह लू में तड़प कर दम तोड़ते हैं उनसे पूछना चाहिए मलयज शीतल क्या होती है ? देश के सुखासीन हिन्दू उनसे कहते हैं वन्दे मातरम् कहो ? जो चार हज़ार सिख या पौने तीन हज़ार मुसलमान बीवी-बच्चों सहित बड़े उत्साह के साथ जीवित जलाकर, ईंट-पत्थरों से कुचल कर या भाले-तलवारों से बर्बरतापूर्वक मारे जाते हैं उन्हें बताया जा सकता है सुजलाम् सुफलाम् मातरम् कैसी होती है और वह भी तब जब मोदी या तोगड़िया से लेकर निर्मल वर्मा तक इस बर्बरता के हामी हों ?

यहां यह भी देखना चाहिए कि इस बर्बरता या वन्दे मातरम् की ज़िद सिर्फ़ हिन्दी भाषियों की देन है । इसी समाज की हिन्दी भाषा का कड़ा प्रतिरोध पेरियार ने किया था ! (सा॰ 'संस्कृति सन्धान', जनवरी 2004)

خطباتِ پاکستان

مولانا سید جلال الدین عمری

یہ کتاب اصلاً مولانا سید جلال الدین عمری امیر جماعت اسلامی ہند کے ان خطبات پر مشتمل ہے جو انھوں نے جون ۲۰۱۲ء میں اپنے سفر پاکستان کے دوران مختلف دینی، تحریکی اور علمی مجلسوں میں دیے تھے۔ ان خطبات کا دائرہ بڑا وسیع ہے۔ ان میں اقامتِ دین کے علمی تقاضے، احیائے اسلام کی تدابیر، غلبۂ دین کی مختلف جہتیں، ذاتی اصلاح و تربیت، ہندوستانی مسلمانوں کے حالات و مسائل اور جماعت اسلامی ہند کی خدمات جیسے اہم موضوعات زیر بحث آئے ہیں۔

ان خطبات کے ساتھ وہ روداد، جو مولانا کے رفیق سفر ڈاکٹر محمد رضی الاسلام ندوی نے قلم بند کی تھی اور ۲۰۰۵ء میں مولانا عمری کے سفر پاکستان کی وہ روداد، جو خود انھوں نے تحریر کی تھی، دونوں شامل کر دی گئی ہیں۔ یہ دونوں رودادیں عام طرح کی رودادیں نہیں ہیں، بلکہ ان میں پاکستان کے حالات، وہاں کی بعض اہم شخصیات کا تعارف، دینی و تحریکی حلقوں کی سرگرمیاں اور بعض علمی مسائل پر اسلامی نقطۂ نظر کی وضاحت آ گئی ہے، اس لیے ان کی حیثیت ایک علمی دستاویز کی ہو گئی ہے۔

● سائز : $\frac{۲۳ \times ۳۶}{۱۶}$ ● صفحات : ۱۹۲ ● قیمت : 100.00

مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز، نئی دہلی ۲۵

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) Fax: 26947858
E-mail: mmipublishers@gmail.com • Website: www.mmipublishers.net

दुमुंहे

दुमुंहे सांप ही नहीं
इन्सान भी होते हैं ।
बल्कि सांपों से अधिक
इन्सान ही होते हैं ।
ऐसे इन्सान विषधरों से कहीं अधिक
ख़तरनाक भी होते हैं !

मुंह पर ठकुरसुहाती
पीठ पीछे बुराई करते हैं ।
ऐसा दोग़लापन करते
ज़रा भी नहीं ठिठकते हैं ।

ऐसे दुमुंहे हर जगह हर समय
हर समूह में मिल जाते हैं ।
अपनी इस कमीनी हरकत को
वे दुनियादारी बताते हैं ।

कई तथाकथित नेता
इस कला में कमाल दिखाते हैं ।
सार्वजनिक रूप से दिये अपने
वक्तव्यों से भी मुकर जाते हैं ।
यह अलग बात है कि
इलैक्ट्रॉनिक संचार माध्यमों के कारण
बच नहीं पाते हैं
झेंप कर रह जाते हैं ।

चुनावी आश्वासनों को भूल जाना
इनके लिए सामान्य बात है ।
बेशर्मी ढीठपने में इनको
अद्‌भुत निपुणता प्राप्त है ।

दुष्कर और दु:साध्य है
दुमुंहों को पहचान पाना ।
इनकी धूर्तता और नीचता का
समय रहते अनुमान लगाना !

ओमप्रकाश बजाज
बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर,
जबलपुर-482001 (म०प्र०)

मोहरा

[हालांकि दर्द सबके मनों को सालता है,
पर मोहरा कोई नहीं बनना चाहता ।]

हमने भी सोचा था
भीड़ से हटकर चलेंगे ।
किताबी आदर्शों को
खुलेआम अपनाएंगे ।
पर जब एक ज़रा-सी
ग़लत बात का किया विरोध
सारे वर्ग की समस्याओं को
खुद हाथ में लेना चाहा,
तो क्यों पीछे धकेल दिये गये ?
लोग क्यों मदारी के खेल के बाद
की तरह, अपने-अपने घरों को जाने लगे ?
हम भी क्यों
अपनी सही बात को झुठलाकर
सामान्य मान्यताओं को
सही कहने लगे ?
जब हम भी उसी ढर्रे पर
चल रहे थे
तब लोग आज की युवतियों को
कर्तव्य याद दिलाते थे
स्त्री वर्ग की यथाओं को सुनाकर
हमारी सोई शिक्षा को जगाते थे ।
पर जब हम
समस्याओं के लेख का
शीर्षक बन गये
तो वे ही हमारे विचारों को
भाषण की संज्ञा देने लगे ।
समस्याएं तो हर आदमी के पास
लिबास की तरह हैं ।
पर, नहीं सुलझ सकतीं
जब तक आदमी बबूल की तरह है ।

वीथिका अरविन्द
एडवोकेट
5, सिविल लाइन, सागर (म०प्र०)

शब्दों का रोचक संसार

● विद्या प्रकाश

विश्व की तमाम भाषाओं में अनेक शब्द ऐसे हैं जिनकी उत्पत्ति और प्रचलन का इतिहास दिलचस्प है । प्रस्तुत है कुछ ऐसे शब्दों के संबंध में रोचक जानकारी ।

ओ॰के॰

आजकल समाज में बात-बात में ओ॰के॰ शब्द का बहुत अधिक चलन है । 'ठीक है' तथा 'बिल्कुल सही, दुरुस्त है' के अर्थ में औपचारिक रूप से प्राय: इस शब्द का इस्तेमाल किया जाता है । वस्तुत: ओ॰के॰ कोई साहित्यिक शब्द नहीं है । यह अमेरिकी बोलचाल का सामान्य शब्द है तथा इसकी उत्पत्ति के पीछे एक मनोरंजक कहानी है । सन 1940 में तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति वैन वुरेन दुबारा राष्ट्रपति का चुनाव लड़ रहे थे । उनका जन्म न्यूयार्क के ओल्डकिंग हुक नामक स्थान में हुआ था । डेमोक्रेटिक पार्टी का एक दल बड़े ज़ोर-शोर से उनका समर्थन कर रहा था तथा लोगों से ओ॰के॰ (ओल्ड किंग हुक) को याद कर उनके समर्थन में मतदान का आग्रह कर रहा था । इस दल का नाम ओ॰के॰ क्लब पड़ गया तथा इस प्रकार यह शब्द शीघ्र ही जनसामान्य के चलन में आ गया ।

हेलो

यह मानव समाज की बोलचाल का लोकप्रिय शब्द है । यह शब्द फ्रांसीसी भाषा के शब्द होला से निकला है जिसका अर्थ है–"कैसे हो ?" सन 1066 में नारमन हमले के समय यह शब्द इंगलिस्तान पहुंचा था लेकिन आगामी दो तीन शताब्दियों में इस शब्द के स्वरूप में काफ़ी परिवर्तन आ गया । 1300 ईसवी तक यह शब्द एलाउ में बदल गया । आंग्ल भाषा के सुप्रसिद्ध कवि नाट्यकार विलियम शेक्सपीयर के ज़माने में यह शब्द फिर परिवर्तित होकर आलो हो गया । कुल कालोपरांत जब टेलीफ़ोन का आविष्कार हुआ तो इस शब्द को नवीन पहचान मिली । प्रारंभिक दौर में लोग दूरभाष पर वार्ता के समय हैलो कहने के बजाय 'आर यू देयर' पूछा करते थे क्योंकि उन्हें लगता था कि उनकी आवाज़ दूसरी तरफ़ नहीं पहुंच रही है । लेकिन टेलीफ़ोन के आविष्कारक थामस एडिसन को यह बात अच्छी नहीं लगी । उनको यक़ीन था कि फ़ोन पर उनकी आवाज़ परली तरफ़ अवश्य पहुंचेगी । जब उन्होंने पहली बार फ़ोन किया तो हैलो कहा और तब से यह शब्द फ़ोन पर बातचीत की पहल करने के लिए प्रचलित हो गया ।

माफ़िया

आजकल समाचार पत्रों तथा बोलचाल में माफ़िया शब्द आम हो गया है जिसका प्रयोग ख़ौफ़ तथा दहशत फैलाने वाले बदमाश क़िस्म के लोगों के अर्थ में किया जाता है । इस शब्द की उत्पत्ति का इतिहास रोचक है । यह शब्द सन 1282 में फ्रांस द्वारा सिसिली पर आक्रमण के समय अस्तित्व में आया था । उस वक़्त एक वाक्य प्रचलित था– मोर्टे आला फ्रांसिया इटालिया एनेला यानी किसी फ्रेंच व्यक्ति की मौत इटली के लिए जश्न का विषय है । इस वाक्य के प्रत्येक शब्द के प्रथमाक्षर को मिलाकर माफ़िया शब्द बना है ।

नक़ली दांत

वृद्धावस्था में दांत ख़राब हो जाया करते हैं । दंत क्षय की स्थिति में आजक़ल नक़ली दांत लगाना सामान्य बात है । नक़ली दांत लगाने का चलन लगभग 2500 साल पहले शुरू हुआ और उस वक़्त नक़ली दांत लगाने के लिए डेस्टिस्ट पोर्सलीन का नहीं, बल्कि जानवरों के दांत अथवा हड्डियों का प्रयोग करते थे । इस कार्य के लिए विशेष रूप से दरियाई घोड़े, वृषम (बैल) अथवा बिल्ली की हड्डियों का इस्तेमाल किया जाता था । इनसे बने दांत लगाने के बाद शीघ्र ही भूरे और बदरंग हो जाया करते थे जिनसे कुछ ही महीनों में इतनी तेज़ दुर्गन्ध आने लगती थी कि ऐसे व्यक्ति के पास बैठने और बदबू झेलने के लिए हिम्मत जुटानी पड़ती थी ।

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित ।
फोन: 09818799223, 011-26949430
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णत: प्रतिबंधित है ।

ADMISSIONS OPEN

SHIFAA SCHOOL OF NURSING

No. 332, Darus-Salam Building, Queen's Road, Bangalore-560032
Recognised by KNC/INC

GNM Course

(Diploma in General Nursing & Midwifery)

- *3½ years course*
- *Only for Girls*
- *Age Limit–18 to 35 years*
- *Reasonable Fees*
- *Minimum Qualification–II PUC (+2)*
- *(Science/Arsts/Commerce)*
- *Patent Hospital–200 Bedded*
- *Spiritual & Safe environment*
- *Near Cantonement Railway Station*

Scholarship for Merritorious Students

For Applications & other Details :

Contact : Co-ordinator, Ms. Zubaida
Mob. No. : 9535059804

Posted on 20-21 December 2012
January 2013
E-mail: kantimonthly@hotmail.com
Publishing Date: 18.12.2012

कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2012-2014
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2012-14

CALANDER-2013

January

Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

February

Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28			

March

Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

April

Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

May

Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

June

Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

July

Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

August

Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

September

Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30						

October

Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun
		2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

November

Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

December

Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					